PICTURES OF EGYPT AND ITS PEOPLE.

मिस्र देश की चित्रमाला।

प्राचीन मिस्री मन्दिर का एक चित्र।

PUBLISHED BY THE CHRISTIAN LITERATURE SOCIETY
ALLAHABAD

ALLAHABAD:

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS

1899.

[2000 Copies]   Price 6 annas.   [दाम ६ आना।

PICTURES OF EGYPT AND ITS PEOPLE.

मिस्र देश की चित्रमाला ।

प्राचीन मिस्री योद्धा ।

PUBLISHED BY THE CHRISTIAN LITERATURE SOCIETY,
ALLAHABAD.

ALLAHABAD:

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1st *Edition.*] 1899. [2000 *Copies.*

पितृपुत्रपवित्रात्मनेनमः ।

मिस्र देश की चित्रमाला ।

भूमिका ।

मिस्र एक देश है जिस का वृत्तान्त लोग अधिक पढ़ने और सुनने चाहते हैं। पृथिवी भर में उस का वृत्तान्त सब से प्राचीन ठहरता है अर्थात उस का सब से पुराना लिखा हुआ वृत्तान्त देखने में आता है जैसा जब हिन्दुस्तान में केवल जंगली सन्तान फिरा करते थे उस समय में भी एक प्रकार का शिष्टाचार मिस्र में बहुत प्रचलित था। उन दिनों में भी वहां बड़े २ भवन और मन्दिर बनाये गये थे बरन ऐसे गृह जिन को आजकल देखकर यात्री बहुत आश्चर्य्य करते हैं। मिस्रियों का ज्ञान प्राचीनकाल में और देशों के ज्ञान से अधिक प्रसिद्ध था। यूनानी लोग जो पूर्वकाल में महा पंडित समझे जाते थे वे भी मिस्रियों से बहुत कुछ सीख गये थे। यूनानियों के द्वारा से वह ज्ञान रूमियों को प्राप्त हुआ और इन दो सन्तानों के द्वारा वह ज्ञान दूर २ देशों में पहुंचाया गया और प्रगट नहीं कि कितनी दूर लों पहुंचा।

कितनी बातें हैं कि जिन में मिस्र का वृत्तान्त हिन्दबासियों के पढ़ने के योग्य है। उन मिस्रियों की देवपूजा कुछ ऐसी है जैसी कि हिन्दुस्तान में पूर्वकाल से प्रचलित हुई। नील नदी मिस्र में ऐसी लाभदायक है जैसी हिन्दुस्तान में गङ्गा नदी है और आजकल अंग्रेजों के मिस्र में जाने से वही राज्यकार्य्य और इन्तिजाम जो हिन्दुस्तान में प्रचलित है कुछ न कुछ वहां भी चलाया जाता है।

मिस्र में हवा बहुत रूखी रहती है और बहुत कम पानी बरसता और इस कारण से प्राचीन घर जैसे के तैसे बहुत दिन लों बने रहते हैं बरन उन गृहों में ऐसे चित्र आजकल साफ २ दिखाई देते हैं जो ४000 बरस बीते कि भीतों पर खींचे गये थे। सो अब जाना जा सकता है कि उन दिनों में लोग किस रीति की

चाल चलते थे हां उन लोगों की लोथें भी जो हजारों बरस हुए सुगन्ध भरी हुई कबरों में रक्खी गईं सो आज तक वैसी ही सूखी हुई पाई जाती हैं।

मिस्र देश की सीमा।

मिस्र आफ्रिका महाद्वीप के उत्तर कोने में पाया जाता है। उस की लंबाई पांच सौ मील अर्थात वह रूम समुद्र से लेकर उस पहिले बड़े झरने लों जो नील नदी में है फैला हुआ है। पूरब सीमा पर लाल समुद्र है और पच्छिम पर लिबिया की मरूभूमि है। सुएज नामे छोटी सी संयोगभूमि के द्वारा मिस्र एशिया से मिला हुआ है परन्तु इस लंबे चौड़े देश में केवल थोड़ी सी जमीन जोतने योग्य है अर्थात कुछ पांच मील चौड़ी वह जमीन है जिस के बीच में नील नदी बहती है सोई बसाई जाती क्योंकि जहां नदी का जल नहीं पहुंचता तहां कुछ उत्पन्न नहीं होता है बाकी जितनी जमीन है सो पत्थरीली और बालूमय है और वहां पानी के न बरसने से वह मरूभूमि ठहरती है। वह मरूभूमि ४,००,००० वर्ग मील है अर्थात हिन्दुस्तान की चौथाई के बराबर है परन्तु बसी हुई जमीन केवल १२,००० वर्ग मील है अर्थात अवध की आधी भूमि के बराबर है। मिस्र में दो भाग विख्यात हैं जो ऊपरवाले और नीचेवाले मिस्र कहलाते हैं बरन कई बार ऐसा हुआ कि मिस्र का अधिकार नूबिया सुदान आदि दक्खिनवाले देशों पर भी हुआ है।

यूनानी लोग इस देश को ईजिप्ट नाम से कहते थे परन्तु प्रगट नहीं कि इस नाम का अर्थ क्या था। पूर्व निवासी उस को चेमी अर्थात काली मिट्टी नाम देते थे और इब्रानी लोग मिस्राइम अर्थात दोनों मिस्र कहते थे। अरबों में उस का नाम मिस्र प्रसिद्ध है।

पूर्वकाल में बंगाल देश में जहां कि आजकल धरती है समुद्र बहता था परन्तु उस मिट्टी के कारण से जो वहां नदियों के द्वारा पहुंचाई जाती थी जमीन बढ़ गई। अब १२०० बरस हुए कि कोई चीनी यात्री वहां के तुमलुक नगर में गया और उस ने नगर को समुद्र तट पर पाया परन्तु आजकल वह समुद्र तट से ३० कोस दूर है। इसी रीति से मिस्र का उत्तरवाला भाग समुद्र से बढ़ाया गया वह भाग

डेलटा अर्थात दुआबा नाम से प्रसिद्ध है । वह ऊंची जमीन जिस पर पिरेमिड बने हैं वह स्थान है जिस तक रूम समुद्र वहता था ।

नील नदी का बर्णन ।

नील नदी का पहिला झरना ।

नील नदी समुद्र के सब से प्रसिद्ध नगरों में एक प्रसिद्ध नदी है और वह आफ्रिका की सब से लंबी नदी है । जब कि हरादितस ने जो यूनानी इतिहास-रचकों में प्राचीन था मिस्र की सैर किई सो २३00 बरस बीते की बात है और वह लोगों से पूछता था कि नील नदी कहां से बहती है तो कोई बता न सका और उस समय से आज लों बहुतों ने इस बात की खोज किई । रूमी लोग यह बताते थे कि वह कई दिन के मार्ग लों जमीन के नीचे २ होके बहती है और इस लिये उस के सोतों को पाना कठिन है । नीरो नाम रूमी बादशाह ने आदमी भेजे कि उस के सोतों को ढूंढ़के प्रगट करें । वे वहां तक चले गये जहां

नील नदी दो नदियों अर्थात श्वेत नील और काली नील के मिलने से बनती है और आगे को न चल सके सो उन का अर्थ सफल न हुआ । सन ई० १७७० में ब्रूस नाम एक अंगरेजी बटोही ने देखा कि काली नील अबिसीनिया देश के ताना नाम झील से बहके निकली है । तालमी नाम एक मिस्री भूगोलबिद्या का पंडित सन ई० ७० में उत्पन्न हुआ उस ने बताया कि नील नदी दो बड़ी झीलों से निकली है परन्तु ज्ञानवान यह न जानते थे कि यह बात सत्य है कि भूल है । आजकल प्रगट है कि श्वेत नील जो बड़ी नील है सचमुच दो बड़ी झीलों से बह निकली है । सन ई० १८५८ में स्पीक साहिब ने जो हिन्दुस्तानी सेना का कप्तान था वहां जाके देखा कि श्वेत नील की एक शाखा बड़ी झील से निकली है जिस को महारानी के नाम से उस ने विक्टोरिया नाम दिया । दो साल पीछे बेकर साहिब ने जाके देखा कि श्वेत नील की दूसरी शाखा दूसरी झील से बहती है जिस को उस ने आलबर्ट का नाम दिया । सन् ई० १८८९ में स्टानली साहिब ने विक्टोरिया की झील पर नौका चलाके उस की दशा बताई और देखा कि कितनी नदियां उस में जा गिरती हैं सो इन नदियों को नील नदी के सोते समझिये । यदि हम कहें कि नील नदी का आरंभ वहां होता है कि जहां वह विक्टोरिया झील से निकली है तो उस की पूरी लम्बाई ३४०० मील है ।

विक्टोरिया नियानजा झील समुद्र कहने के योग्य है । वह बहुत ही बड़ी और समुद्र से ३८८० फुट ऊंची है । वहां से नील नदी बहुधा धीरे २ बहती है परन्तु कितने ऐसे स्थान भी हैं जहां पानी ऊपर से जोर से गिरता है जिसे झरना कहते हैं । इन में कितने ऐसे हैं कि जिन में नौका कठिनता से चलती और ऐसी जगह भी हैं जहां नीचे के चटानों के मारे नौका नहीं चल सकती हैं । श्वेत नील इस कारण से ऐसा कहलाती है कि उस का पानी मरुभूमियों के बालू के ऊपर बहता है और उस के पानी में मिट्टी कम मिलती है । काली नील जो अबिसीनिया देश के पहाड़ों से आती है बहुत मिट्टी को संग ले आती और पानी के गन्दलापन के कारण से उस को यह नाम दिया जाता है । जब दोनों नदियां मिल जातीं तो पानी लाल सा और भूरा सा हो जाता है और उस का और प्रकार का स्वाद भी होता है । नील नदी बहुत स्थानों में आधी मील चौड़ी है । वह बहुधा अपने निचान के बीचोबीच में नहीं बहती परन्तु पूर्वी पहाड़ियों के समीप अधिक रहती और अपनी फलदायक मिट्टी को पच्छिम की ओर मैदान पर फैलाती है । कभी २ जैसा कि अगले चित्र में दिखाई देता है वह अपने लिये

गहिरा तंग मार्ग काटके उस में बहती है । और दोनों ओर जमीन ऊंची २ खड़ी रहती है । यदि कोई पहाड़ के ऊपर से नील नदी के मैदान पर दृष्टि करे तो वह बहुरंगा देख पड़ता है । नदी के समीप हरी २ जमीन है जिस में धारा चलते समय लाल रंग मिला होता है । इस के बाहर दोनों ओर हलकी हरियारी रहती जहां नया अन्न उत्पन्न होता है और उस के बाहर भूरा भूरा रंग है जहां बन के बालू और चटान दिखाई देते हैं । जहां नदी छोटी है तहां उस में बहुत सी शाखें आ मिलती हैं परन्तु जहां समुद्र की ओर बहती तहां १००० मील तक कोई नदी उस में आके नहीं मिली है ।
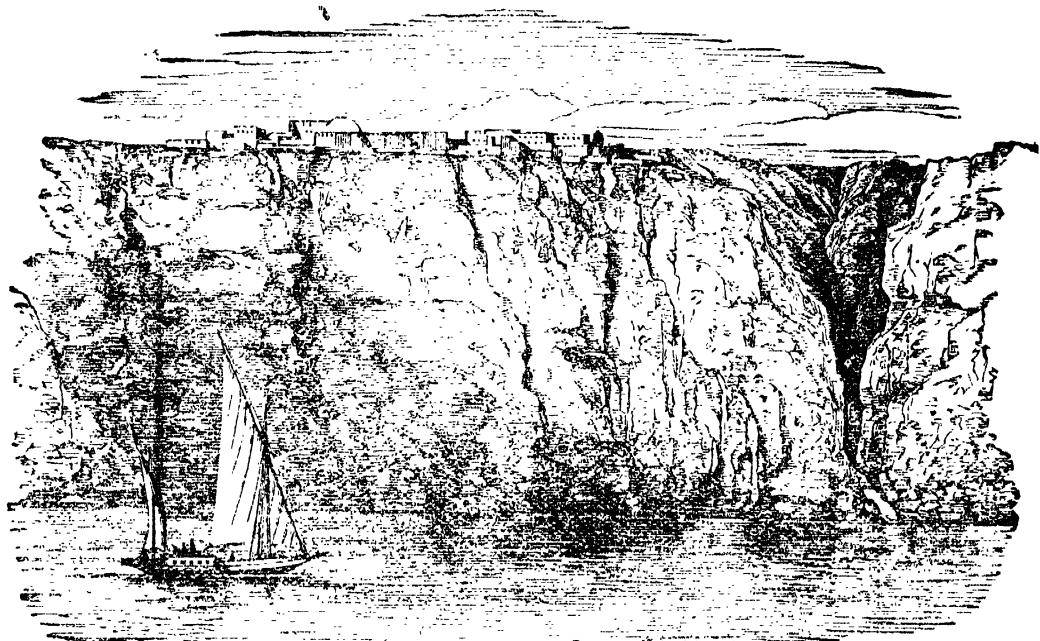
नील नदी के तीर ।

जैसा गङ्गा बंगाल देश के समीप की धरती पर कभी २ चढ़ जाती है इसी रीति से नील नदी हर साल जमीन पर चढ़ जाती है और इस से जमीन फल-दायक बनाई जाती है क्योंकि मिस्र में बहुत थोड़ा पानी बरसता है । यदि नील न चढ़े तो अकाल हर साल होगा । पानी का चढ़ना जून के महीने में आरंभ होता और सितम्बर में पानी खेतों में दूर लों फैला रहता है और अकतूबर के मध्य में पानी घटने लगता और एप्रेल में सूख जाता है । वह जमीन जो डेलटा कहलाती सो सितम्बर के दिनों में पानी से डूबी हुई देख पड़ती है बरन वह

लाल मिट्टी के सागर सी दिखाई देती है जिस में कहीं २ गांव और बस्तियां और बान्ध जिस पर लोग चलते फिरते हैं दिखाई देते हैं। ऊपरवाले मिस्र में हर साल नदी के पानी में ३६ फुट की बाढ़ आती है परन्तु खैरू नगर के समीप केवल २५ फुट की बाढ़ है। नदी में एक पत्थर का खंभा खड़ा है कि जिस से पानी का बढ़ना नापा जाता है। यह पत्थर का खंभा सन ई० ७१६ में पहिले लगाया गया परन्तु उस साल से आज लों कई बार नया लगाया गया है। उस में १६ हाथ का चिन्ह जो है सो सुलतान का हाथ प्रसिद्ध है क्योंकि यदि पानी उस तक न चढ़े तो जमीन का महसूल लिया नहीं जाता। यदि १८ से २२ हाथ के चिन्ह लों पानी चढ़े तो लोग उस को उत्तम नील कहके आनन्दित होते हैं। इतने पानी से खेत अच्छी रीति से सींचे जाते हैं। यदि इस्से बहुत अधिक पानी चढ़े तो बहुत खेतों की हानि हो जाती सो नदी का बढ़ना ऐसी बात है कि जिस में सब लोगों की अधिक चिन्ता लगी रहती है। उन दिनों में यह दस्तूर है कि खैरू नगर में ढंढोरिया रोज सबेरे फिरा करते और लोगों को सुनाया करते कि नील में इतना पानी चढ़ा है क्योंकि यह बात साधारण लोगों के रोटी पाने से संबन्ध रखती है। जब इतना पानी नदी में चढ़ा जितना खेतों में अच्छा काम देवे तो सरकार बान्धों के काटने की आज्ञा देती है कि जिस से पानी सब छोटी नहरों में और खेतों में बह जाय तब सभों के मन आनन्दित होते और नगर की सड़कों में जै २ की पुकार सुनाई देती है।

अब ५० बरस की बात है कि एक फ्रान्सीसी साहिब ने यह बिचार किया कि यदि नील नदी में पानी रोकने के लिये बान्ध बान्धा जाये तो जैसी इच्छा हो इस से थोड़ा वा बहुत पानी बहाया जा सकता है। सरकार की आज्ञा से इस काम का आरंभ हुआ परन्तु पीछे से लोग सोचने लगे कि कदाचित ऐसा हो कि बान्ध के कारण से नदी और कहीं को बहने लगे तब तो बड़ी बिपत्ति होगी सो उन्हों ने काम को छोड़ दिया परन्तु थोड़े दिन हुए जब दर्वेशों की चढ़ाई मिस्र पर हुई और देश के बचाने के लिये अंगरेज वहां आये तो किसी अंगरेज ने जो भली भांति जानता था कि हिन्दुस्तान की नदियों में बान्ध कैसे बान्धते हैं उस काम को पूरा किया और आजकल पानी के रोकने और समय पर छोड़ देने से देश को बड़ा लाभ पहुंचता है। खैरू नगर और समुद्र के बीच में एक जमीन है जिस को यूनानी त्रिकोण अक्षर से डेलटा नाम देते हैं क्योंकि दो ओर नील नदी की शाखें हैं और तीसरी ओर समुद्र है जैसा बंगाल
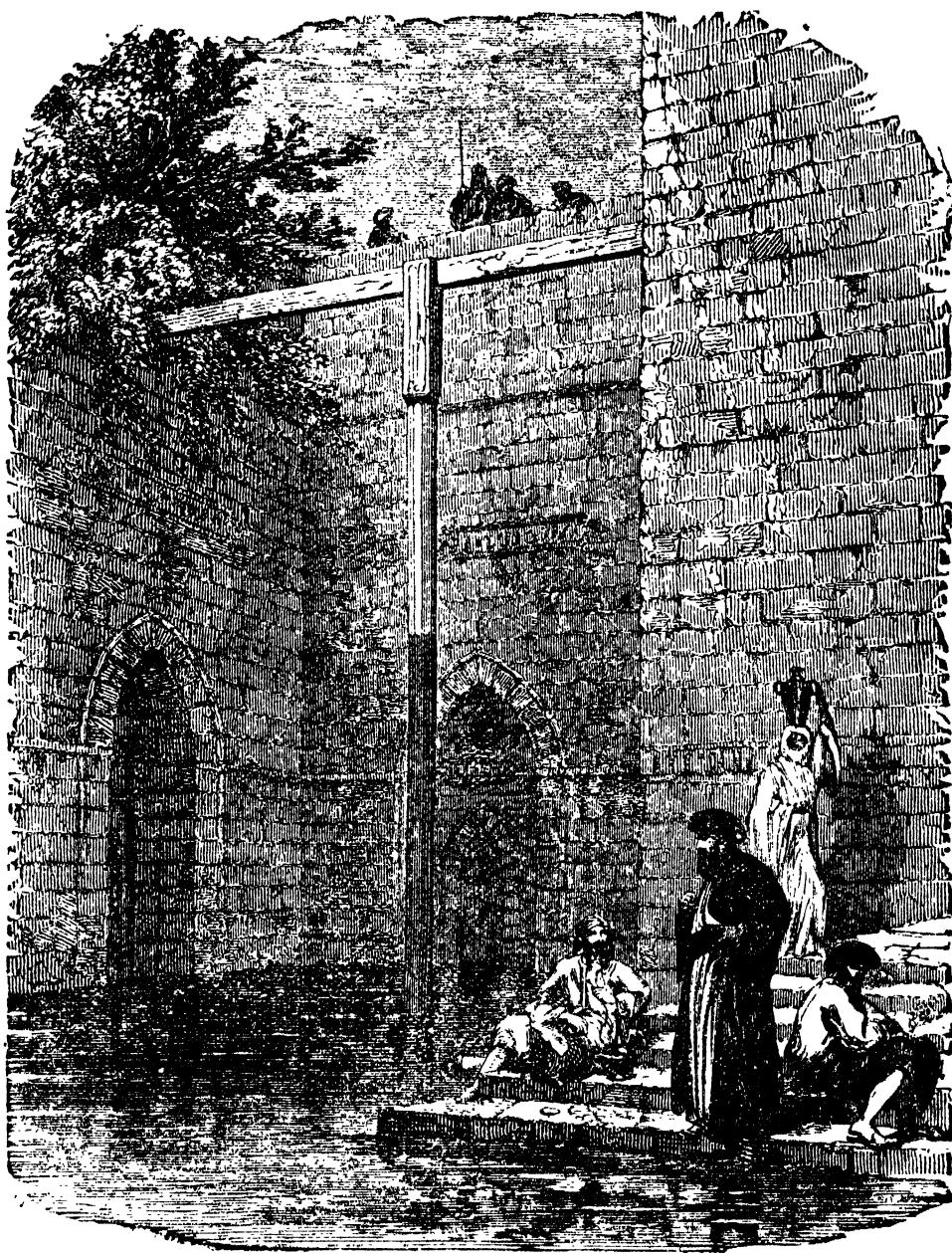
नील के चढ़ाव की नाप।

देश का सुन्दरबन उस मिट्टी से बना है जिसे गङ्गा आदि नदियां समुद्र की ओर बहा ले जाती हैं इसी रीति डेलटा की जमीन नई बनी है। यूनानी
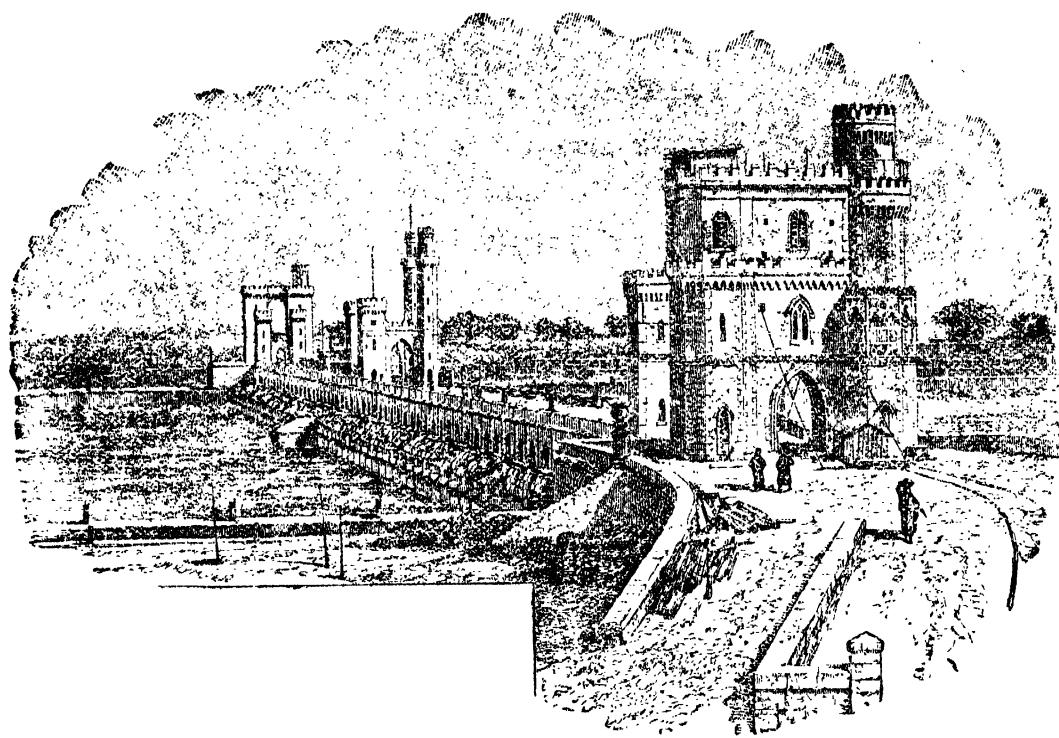
नील में पानी रोकने का बान्ध ।

लोग कहते थे कि नील नदी सात मुहानों के द्वारा से अपने जल को समुद्र में डाल देती है पर आजकल दो बड़े मुहाने हैं अर्थात वह जो रोजट्टा नगर के पास और वह जो दमयट्टा नगर के पास नील का पानी समुद्र में डाल देता है। समुद्र तट पर बालूमय जमीन है जिस के पिछाड़ी कितनी बड़ी झीलें पाई जातीं जिन का पानी उथला है। उन में सिकन्दरिया नगर के समीप मेरि-ओटिस नाम झील है और पोर्टसाइड नगर के समीप मंजेला नाम झील है। जिस समय नील नदी में बाढ़ आती उस समय उन झीलों में भी पानी बढ़ जाता है और जब नदी सूखती तब झील भी घटती हैं। इन से पानी खींचा जाता और नहरों के द्वारा दूर लों पहुंचाया जाता है।

मिस्र देश का हवा पानी।

मिस्र में और बहुधा अन्यदेशों में इस बात की भिन्नता है कि वहां जल

बहुत कम बरसता है । कहते हैं कि ऊपरवाले मिस्र में कितने ऐसे निवासी हैं जिन्हों ने जीवन भर में कभी पानी बरसते नहीं देखा परन्तु यह भी कहते हैं कि पूर्वकाल की अपेक्षा आजकल पानी अधिक बरसता है और ज्यों २ खेती अधिक किई जाती और पानी अधिक उन में सींचा जाता त्यों बरसना भी अधिक होता है तौभी मिस्र का फलदायक होना अद्भुत रीति से नील नदी के पानी से संबन्ध रखता है और जहां तक वह पानी पहुंच नहीं सकता तहां तक खेती का आसरा भी नहीं हो सकता हां देश के उस भाग में जो रूम समुद्र के तट पर है पानी अधिक बरसता है । जून के महीने से लेके फरवरी लों उत्तर की ओर से बहुधा हवा चलती है और यह उन नौकाओं के लिये जो नील नदी पर चलती हैं अच्छी हवा है । मार्च और एप्रेल के महीनों में कभी २ तीन दिन लों ऐसी लूह चलती है जो बहुत ही उष्ण और धूल और बालू से लदी हुई होकर लोगों को बहुत दुःख पहुंचाती है । वह एक यहूदी त्योहार के नाम से कमसिन अर्थात पचासवीं कहलाती है ।

मिस्र के पेड़ पौधे ।

नील नदी के मैदान में बृक्ष के बन कहीं पाये नहीं जाते हां ताड़बृक्ष की बारियां देखने में आतीं परन्तु इन को छोड़ पेड़ कम हैं । पूर्वकाल में मिस्री लोग लुबनान के पहाड़ से लकड़ी लाते थे । आजकल लकड़ी छोटी एशिया के बनों से प्राप्त होती है । लोग गांव के समीप छोहारे के वृक्षों को बहुत लगाते हैं और उन का फल बहुत खाते हैं । अञ्जीर अनार नारंगी और तरबूज बहुत उत्पन्न होते हैं । अपने खाने के लिये लोग गेहूं भुट्टा जुआर बाजरा बहुत उत्पन्न करते हैं । नाना प्रकार के लोबिये बहुत पाये जाते हैं । मिस्र में रुई बहुत उत्पन्न होती और वहां की रुई अच्छी है और इस्से देश को बहुत लाभ पहुंचता है । अगले चित्र में हम देखते हैं कि स्त्रियां खेतों में रुई को बटोरकर और सिर पर भरी हुई टोकरियों को रखकर कैसे घर ले आती हैं । तमाखू और नील भी खेतों में उत्पन्न होती हैं ।
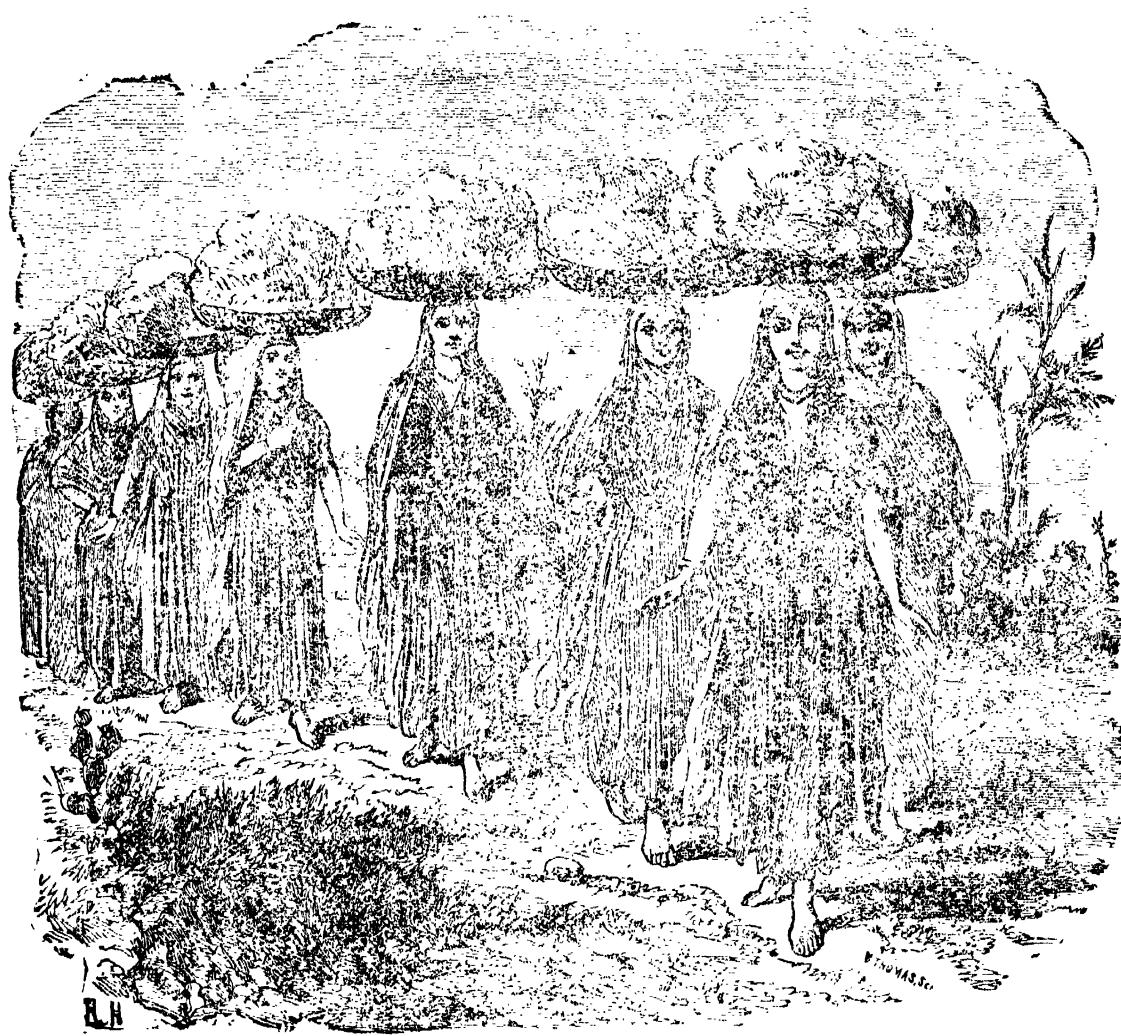
स्त्रियां का रुई बटोरना।

मिस्र के पशु।

मिस्र में बनपशु थोड़े हैं परन्तु हुंडार और लकड़बग्घा और लोमड़ी और सियार देखने में आते हैं। बोझों को इधर उधर पहुंचाने के लिये लोग बहुधा ऊंट और गदहे पर लादते हैं। बैलों से खेत का काम बहुधा किया जाता है। पूर्वकाल में भैंसे काम में न आते थे परन्तु आजकल काम में आते हैं। भेड़ी बकरी बहुत पाली जाती हैं और देश की सफाई के लिये लोग बनपक्षियों और

कुत्तों पर भरोसा रखते हैं। गांववाले कबूतरों को बहुत पाला करते हैं बरन उन के घरों की अपेक्षा अपने घरों की कम चिन्ता करते हैं। पूर्वकाल में मगर-मच्छ बहुत थे परन्तु आजकल बहुत कम देखने में आते हैं। मिस्र में कितने सांप पाये जाते जिन में काला सांप अधिक जोखिममय है। मिस्र में तन्तुकीट बहुत पाले जाते और कौशाम्बर का वस्त्र बनाया जाता है। इन कीड़ों के चारे के लिये बहुत तूत के पेड़ लगाये जाते हैं।

पूर्वकाल के मिस्र देश का बर्णन।

पूर्वकाल की मिस्री महारानी।

ऊपर बर्णित हुआ कि उन सब देशों में जिन में शिष्टाचार फैल गया था मिस्र पहिला था परन्तु उन दिनों की बनाई हुई पुस्तकें नहीं मिलतीं सो उन दिनों का वृत्तान्त विशेषकर पुराने घरों और मन्दिरों से और उन चित्रों से जो उन भीतों पर पूर्वकाल में खींचे गये जाना जाता है। मसीह के आने से ३०० बरस पहिले तालमी नाम मिस्र के एक बादशाह ने मानेथो नाम एक मनुष्य को इस बात की आज्ञा दिई कि पूर्वकाल के समय से अब लों देश के वृत्तान्त को बूझकर लिख रक्खो। मानेथो ने जो हीलियोपलिस नगर का महायाजक था इस आज्ञा

पूर्वकाल के एक मिस्री की प्रतिमा।

के अनुसार देश के प्राचीन इतिहास का संग्रह किया। उस की पुस्तक तो खो गई है परन्तु उस में से कितनी बातें और लोगों की पुस्तकों में लिखी हुई पाई जाती हैं। उस की पुस्तक से यह जाना जाता कि फारसी बादशाहों की चढ़ाई के दिन लों तीस अलग २ राजाओं के बंश मिस्र देश में राज्य करते थे परन्तु ज्ञानवान सोचते हैं कि उन में से कितने एक दूसरे के पीछे नहीं बरन एक संग अलग २ स्थानों में राज्य करते थे।

स्त्री के बाल बांधने की रीति।
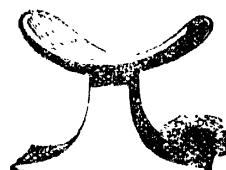
सिर धरने का मोढ़ा।

मिस्री लोग नूह के बेटे हाम के बंश से हैं। पूर्वकाल में उन की भाषा इब्रानी भाषा से बहुत मिलती थी परन्तु इब्रानी भाषा पीछे बहुत सुधारी गई और मिस्रियों की भाषा वैसीही बनी रही।

पूर्वकाल के मिस्रियों की चर्चा यों है कि सिर गोल सा मुंह अंडाकार आंखें

बड़ी नाक सीधी गाल की हड्डियां बहुत बढ़ी हुई न थीं। बाल कुछ घुंघरीला था पर इतना नहीं जैसा हबशियों का दस्तूर है कि ठुड्डी को छोड़के डाढ़ी बहुत कमती होती है। रईस लोग बहुधा लंबे और साधारण लोग ऊंचाई में कम और मोटे होते थे। चित्रों में पुरुषों का रंग अधिक लाल और स्त्रियों का अधिक पीला

हबशी कैदी लोग।

खींचा जाता है। ऊपर की स्त्री के चित्र में हम देखते हैं कि उस के लंबे २ घुंघरीले बाल बहुत ऐंठे हुए दिखाई देते हैं और ऐसा हो कि यह कई दिन लों फिर बनाना न पड़े स्त्रियों के सिर धरने के लिये एक अद्भुत प्रकार की लकड़ी की तकिया होती थी जिस पर सिर रखके सो जाती थीं।
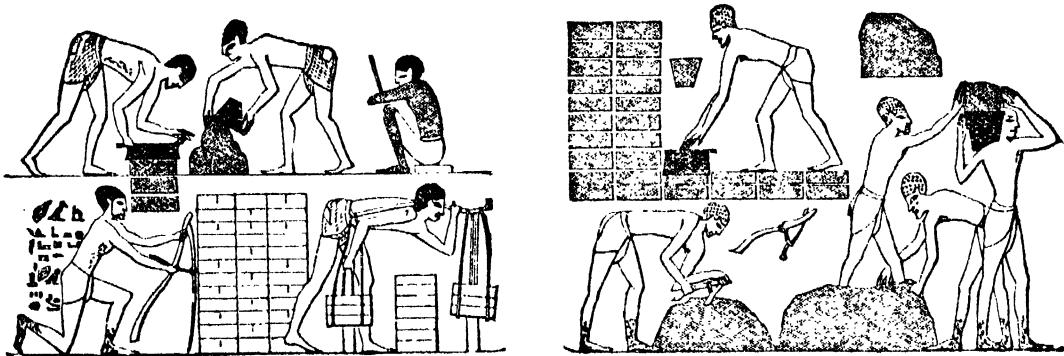
मिस्रियों का ईंट बनाना।

पूर्वकाल के मिस्री लोगों में कितने अति बुरे रीति व्योहार थे। जैसा हिन्दुस्तान के त्रावनकोर के नायिर लोगों में प्रचलित है तैसा उन में यह रीति थी कि केवल माता का वंश गिना जाता था यह पूछते नहीं थे कि पिता कौन है और बिवाह

करने में जब भाई बहिन का बिवाह होता तो लोग इस को बुरा न मानते थे। आदमी जितनी पत्नियां चाहे अथवा जितनी पाल सके उतनी रखता था और उन में चाहे कितनी उस की बहिनें भी हों। पत्नियों को छोड़ बड़े आदमी सुरैतिन भी रखते थे अर्थात दासी जो घर में पाली गईं अथवा जो लड़ाई में पकड़ी गईं अथवा रुपयों से मोल लिई गईं अथवा जो किसी कङ्गाल की बेटियां थीं जिन्हें पिता न पाल सका। इन रखेलियों के साथ स्वामी जैसा चाहे तैसा उन से करे अर्थात जब चाहे तब किसी के हाथ बेच सकता था क्योंकि रखेलियां मानो उस का माल समझी जाती थीं। ज्ञानवान कहते हैं कि आरंभ में मिस्र के निवासी कुछ जंगली से थे और धीरे २ शिष्टाचार उन में फैला और गांव बनाने और खेती करने लगे। साधारण लोगों के घर जैसा आजकल के तैसा मिट्टी के वा कच्ची ईंटों के बनते थे जैसा हिन्दुस्तान के गांवों में भी दस्तूर है। घर में एक ही कोठरी बहुधा होती थी और आने जाने के लिये एक द्वार रहता था। यदि कोठरी बड़ी होती थी तो छत के सम्भालने के लिये वृक्ष की दो एक धड़ खम्भे की नाईं बीच में खड़ा रखते थे और घर में बहुत थोड़ी सामग्री होती थी। कुम्हार के बनाये हुए दो चार मिट्टी के बर्त्तन घास फूस की चटाइयां जिन पर आदमी सो जायें अन्न पीसने के लिये चक्की के दो पाट और दो एक लकड़ी की बनी हुई बस्तु इन को छोड़ साधारण लोगों के घर में कुछ नहीं होता था।

कङ्गाल लोग लंगोटी लगाये उघारे फिरा करते थे। रईस लोग कांधों पर डाले हुए अथवा कटि में बांधे हुए एक चीता की खाल को पहिना करते थे और चीता की दुम पीछे को एड़ी की ओर लटकती रहती थी और हम हबशी कैदियों के चित्र को देखते हैं जो इस रीति चीता की खाल पहिने हुए हैं। जैसी स्त्रियां तैसे पुरुष भी बाल को अद्भुत रीति से गूंथते और ऐंठते और तेल लगाके ऊंचे २ बनाये रखते थे और जैसा हिन्द के योगियों में दस्तूर है तैसा वे बाल में कपटी जटा को बढ़ाये रखते थे। आदमी बहुधा नंगे पांव फिरा करते थे परन्तु कभी रंगी हुई लकड़ी के वा ऐंठी हुई घास के खड़ाऊं पहिनते थे। चमड़े के मोजे भी कभी काम में आया करते थे। पुरुष स्त्री दोनों गहनों के बड़े चाहनेहारे थे गले में छाती में हाथ पांव में नाना प्रकार के गहनों से अपने को बिभूषित किया करते थे। पिछले चित्र में हम देखते हैं कि कङ्गाल लोग लंगोटी पहिने कच्ची ईंटों को बना रहे हैं।

लड़ाई करने में सोंटे बर्छे धनुष बाण गोफन आदि बस्तुन को काम में लाते

थे। पहिले उन की बर्छियों की नोकें केवल लकड़ी की होती थीं पीछे पत्थर की वा हड्डी की नोकें उन में लगाने लगे परन्तु उस समय से पहिले जब इतिहास लिखने लगे ऐसे हथियारों की सन्ती में धातु के हथियार काम में लाये गये परन्तु धातुवाले लकड़ीवालों के रूप में बनाते रहे।

एक मिस्री का बाजा बजाना।

पूर्वकाल के मिस्री लोग गाने बजाने को बहुत चाहते थे। वे नाना प्रकार के बाजों को भी काम में लाते थे जैसा कि बांसली और बीणा बार २ चित्रों में देखने में आते हैं। तुरही और ढोलक और करताल और खञ्जुरी को भी बजाया करते थे। उन के कितने बाजा बड़े होते थे और प्रगट है कि जहां बड़ी भीड़ होती थीं तहां उन को काम में लाते थे।

मिस्रियों के लिखने का वृत्तान्त।

पूर्वकाल के मिस्रियों में एक अद्भुत लिखने की रीति थी जिस में अक्षरों के द्वारा नहीं परन्तु चिन्हों की पांतियों के द्वारा लोग अपने मनोरथ को प्रगट करते थे जैसा गोलाकार का यह अर्थ था सूर्य्य और कुत्ते और बृक्ष चित्र का अर्थ कुत्ता और बृक्ष था। स्त्री का चित्र जो ढोलक बजाती थी उस का अर्थ आनन्द करना

मिस्रियों के लिखने की रीति ।

एक यहूदी कैदी ।
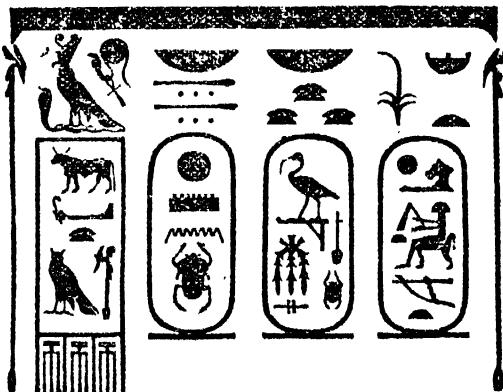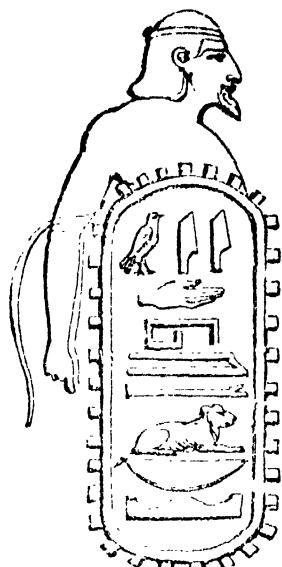
था । पुरुष जो नाचता हो वह भी आनन्द का चिन्ह था । सियार के चित्र से चतुराई का अर्थ था । दो पांव के चित्र से चलने का मनोरथ प्रगट होता था इत्यादि । और प्रकार के चित्र वे थे जो बस्तु नहीं बरन नाना प्रकार के शब्दों को प्रगट करते थे इन में उपाय यह था कि जिस अक्षर से किसी पशु पक्षी के नाम का आरंभ हो सो उसी का चित्र उस अक्षर को समझते थे जैसा यह कि गधे का नाम (ग) अक्षर से आरंभ होता है तो गधे का चित्र ग अक्षर ठहरा और ट अक्षर चिन्ह एक टोपी का चित्र था और ह अक्षर का चिन्ह एक हाथ का चित्र था इत्यादि । इसी रीति पर मिस्री भाषा से उत्क्रोश का नाम उ अक्षर से आरंभ होता है सो उ एक उत्क्रोश के चित्र से लिखा जाता है । हाथ का चित्र ह अक्षर है कलम का चित्र क अक्षर है र का चित्र राजहंस व अक्षर एक बगला है । आरंभ में उनतीस अक्षर इस रीति से साधारण बस्तुन के चित्रों के खींचने से लिखे जाते थे । पीछे के दिनों में ९0 और चिन्ह उन में जोड़ दिये गये ।

इन दोनों प्रकार के अक्षरों को मिलाकर १७00 अलग २ प्रकार की बस्तुन के चित्र काम में लाये जाते थे सो ऐसे लिखने का पढ़ना अति कठिन होता था । कदाचित याजक लोग ऐसे कठिन उपाय को इस मनोरथ से चाहते थे कि हम को छोड़ कोई लिखना पढ़ना न सीख सके और इस उपाय से समस्त ज्ञान

हमारे ही हाथों में रहे। यह अक्षर लकड़ी वा पत्थर में खोदे जाते वा कागज में लिखे जाते थे। एक प्रकार का सरकंडा नील नदी के तीर पर होता था जिस
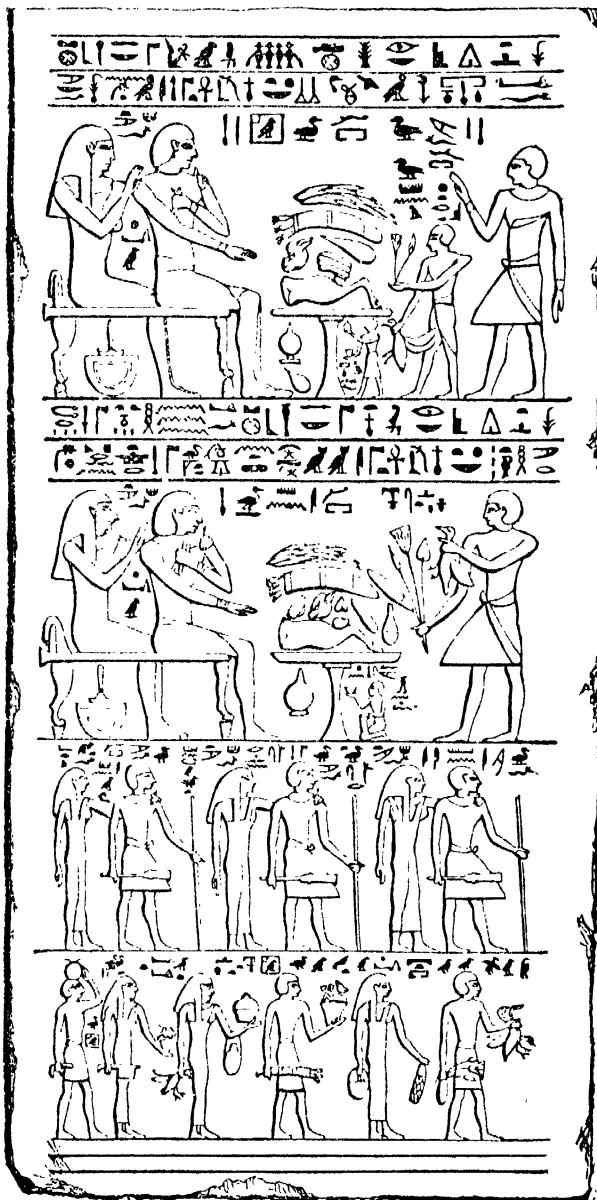
मिस्रियों का लिखित बखान।

में से सोला की रीति पर जिस से अंगरेजी टोपी आजकल बनती हैं कागज की नाईं पपैरस नाम एक वस्तु लिखने के लिये बनाते थे। वे कलम से लिखते थे।

एक लकड़ी के टुकड़े में स्याही रखने के लिये तीन छेद करते थे और लिखने में काली और लाल और हरी स्याही काम में लाते थे वे ऐसी पांतियों में जैसा हम लिखते हैं अक्षर लिखते थे और पांति २ के बीच में लकीर खींचते थे । जहां राजा का नाम लिखा जाता था तहां अंडाकार लकीर से उसे ऐसा घेरा में रखते थे जैसा ऊपर के चित्रों में प्रगट है ।

याजकों का लिखना ।

पीछे के दिनों में याजक लोग अपने लिखने के लिये और प्रकार के अक्षर बनाने लगे । इस में भी चित्रों को काम में लाते थे परन्तु वे छोटे थे और ठीक २ ऐसे नहीं थे जैसा वह बस्तु जिस से अर्थ रखते थे । यह अक्षर सरकारी कागजों में और व्यवस्था के दफतरों में तीसरी और चौथी सदियों में काम में आते थे ।

साधारण लोगों का लिखना ।

साधारण लोग भी कभी २ लिखने चाहते थे परन्तु वह ऐसे कठिन अक्षरों को काम में न ला सकते थे जैसा याजक काम में लाते थे सो मसीह के आने से ६00 बरस पहिले एक और प्रकार के अक्षर जिन का बनाना कुछ सहज था मिस्र में प्रचलित हुए परन्तु यह अक्षर भी पहिले के चित्रों से कुछ संबन्ध रखते थे परन्तु सन ई0 ३00 में जब मसीही धर्म्म मिस्र देश में फैल गया था तब लोग क ख इत्यादि अक्षरों के द्वारा जैसा और देशों में प्रचलित हैं लिखने लगे ।

रोसट्टा का पत्थर जिस की सहायता से पूर्वकाल का लिखना अब पढ़ा जाता है ।

चित्रों की पढ़ाई को जब बहुत बरस बीत गये और प्राचीन याजकों में से

कोई न रहा जो चित्रों का अर्थ समझावे तो कई हजार बरस लों कोई न रहा जो उन प्राचीन लिखित बातों को पढ़ सके वा उन का अर्थ समझा सके। परन्तु हमारे दिनों में उन का अर्थ अद्भुत रीति से बूझा जाता है । यह विशेषकर एक पत्थर के द्वारा से प्रगट हुआ जो रोसट्टा के पास सन ई० १७९९ में पाया गया। उस पत्थर में कोई बात तीन प्रकार के अक्षरों में लिखी गई थी अर्थात चित्र के अक्षरों में और साधारण मिस्री अक्षरों में और यूनानी अक्षरों में । यङ्ग साहिब ने देखा कि तीनों में कोई नाम लिखे हुए प्रगट होते हैं और सोचा कि यह तीनों में वही नाम होंगे। यूनानी में जो नाम थे सो सहज से पढ़े जा सकते थे और उन की सहायता से चंपोलियन नाम एक फ्रान्सीसी पंडित कुछ चित्रों का अर्थ बूझने लगा । और भी बड़े २ पंडित इस काम को करने लगे और आजकल इन लिखित बातों में से बहुत पढ़ी गईं और उन का मनोरथ बूझा गया ।

मिस्रियों के देवताओं का वर्णन ।

अम्मोन देवता । रा देवता ।

इस्राएलियों को छोड़ पूर्वकाल के सब सन्तान देवता पूजते थे यही मिस्रियों की भी दशा थी वे सैकड़ों देवी देवताओं को रखते थे जिन में हर एक का

अलग २ नाम था और उन के गुण और काम भी अलग २ समझे जाते थे । उन में कितने ऐसे थे कि जिन का ठीक वृत्तान्त अब कम जाना जाता है । कभी २
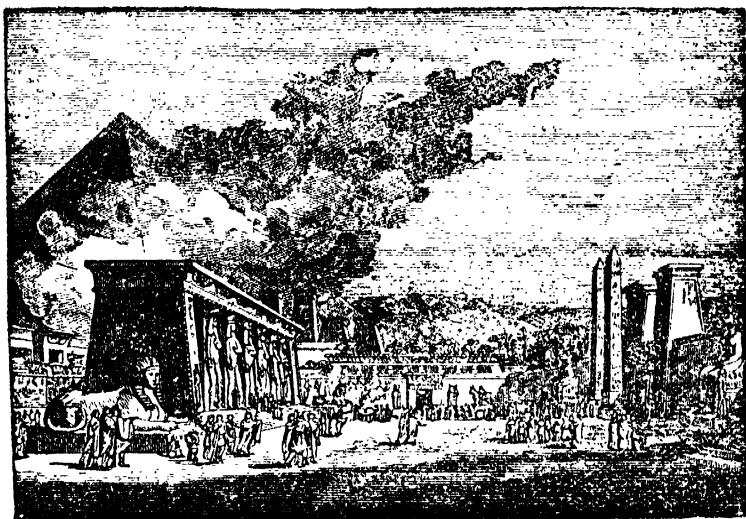
प्राचीन मिस्री पूजा ।

जो देवी देवते पहिले किसी विशेष गांव के इष्ट होते थे सो पीछे साधारण लोगों से भी पूजे जाते थे कितने देवी देवताओं का कुछ वृत्तान्त यहां लिखा जाता है ।

अम्मोन देवता के नाम का अर्थ गुप्त देवता है । लोग उस का बड़ा आदर सन्मान करते थे बरन समझते थे कि वह गुप्त रहता है और मनुष्य बहुत ही थोड़ा उस के विषय में जान सकता है । परन्तु साधारण लोगों को उस का पूजना कठिन देख पड़ता था सो पूर्वकाल में उस का नाम रा देवता अर्थात सूर्य्य देवता के संग मिलाया गया और लोग अम्मोन रा को जीवन के नाम से और सब बस्तुन का संभालनेहारा समझके पूजते थे परन्तु यह सूर्य्य की पूजा थी । यह पूजा विशेषकर हीलियापोलिस नाम नगर में किई जाती थी परन्तु उस के आदर में इधर उधर ऊंचे २ पत्थर के खंभे खड़े किये जाते थे । बादशाहों का यह दस्तूर था कि वे रा को अपना इष्ट देवता कहते थे बरन बहुत से बादशाह रा को ऐसा अपनाते थे कि उस का नाम आपही लेते थे और चाहते थे कि प्रजा हमही को रा समझे । कदाचित फिरऊन नाम जो उन के बादशाहों में प्रसिद्ध हुआ सो इस रीति से अपने को ठहराया । कभी २ रा की मूर्त्ति का ऐसा रूप है कि केवल

गोलाकार है जिस में सांप अर्थात जीवन का चिन्ह लगा हुआ है । और स्थानें में उस की मूर्त्ति ऐसी है कि नर रूप जिस का सिर चील का सा है और सिर के ऊपर वही गोलाकार सांप है । जैसा कि हिन्दू लोग विष्णु के लिये हजार नाम रखते हैं इसी रीति से मिस्री लोग रा के लिये सौ नाम रखते थे ।

ऐसिस देवी ।

ठाह देवता ।
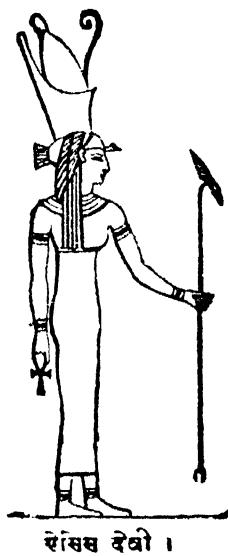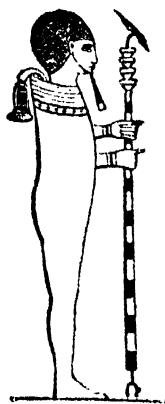
मिस्रियों में ओसैरिस नाम एक देवता बहुत प्रसिद्ध था परन्तु उसे रा का एक अवतार बताते थे । उन की यह कहानी थी कि ओसैरिस ने अपनी बहिन ऐसिस को उस समय बिवाह लिया जब कि दोनों एक संग माता के पेट में पड़े थे । वह यह भी कहते थे कि ऐसिस और ओसैरिस से देश का शिष्टाचार फैलने लगा क्योंकि ओसैरिस ने लोगों को किसनई सिखलाई और ऐसिस ने उन को यह सिखाया कि आटा क्योंकर पीसा जाता और रोटी क्योंकर बनाई जाती है । उस ने जुलाहे का राच भी दिया और कपड़ा बनाना सिखलाया । ओसैरिस ने देवताओं की पूजा सिखाई और इस बात को प्रगट करता था कि पूजा करने में ऐसी रीतें सत्य हैं और कैसा चढ़ावा चढ़ाना धर्म्म है । कहते हैं कि पीछे को टैफोन नाम उस के भाई ने उसे घात किया और उस की लोथ को पिटारी में रखके नील नदी में फेंक दिया जहां ऐसिस ने पीछे को उसे पाया परन्तु पहिले किसी बैरी ने उस को पिटारी में देखकर लोथ को चौदह टुकड़ों में काट डाला । इस से शोकित हो ऐसिस ने जितने टुकड़े थे इतनी प्रतिमा ओसैरिस

थोथ देवता ।

की बनाईं । कहते हैं कि पीछे होरस ने जो ओसैरिस का पुत्र था तैफ़ोन को जीत लिया और अंधियारे में डाल दिया ।
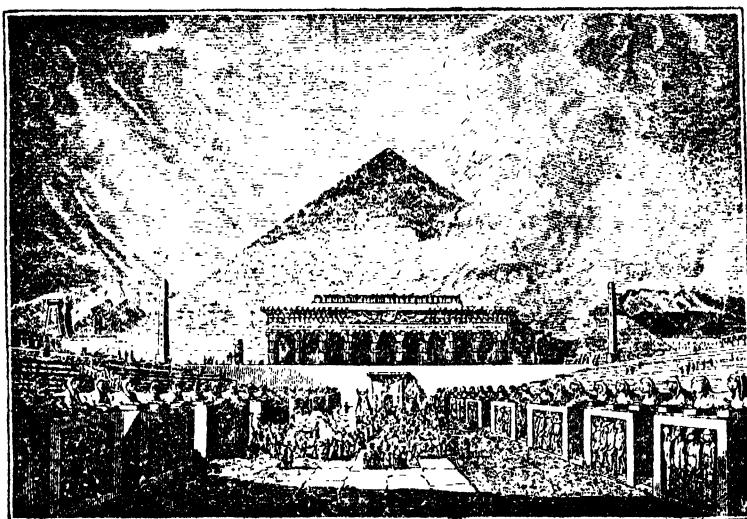
प्राचीन मिस्री पूजा ।

इस कारण से फिर लोग ओसैरिस को कास्तकारी का पहिला गुरु समझते थे । वे सांड़ के रूप में उसे पूजते थे और उस के संग ऐसिस की मूर्त्ति गाय के रूप की बनती थी ।

फिर लोगों में यह कहावत है कि ओसैरिस अर्थात सूर्य्य जब सांझ को पच्छिम में अस्त हो जाता है तो इस का कारण यह है कि वह नीचे लोक के निवासियों

को ज्योति देने के लिये जाता है सो पीछे को लोग उसे नीच लोक का स्वामी

सेवक का देवता ।　　अघोर देवी ।

अर्थात मृतकों का स्वामी कहते थे जैसा हिन्दू यमराज को बताते हैं। जैसा हिन्दू लोग बिश्वकर्म्मा को देवताओं का कारीगर समझते हैं इसी रीति से मिस्रियों में ठाह नाम कारीगर समझा जाता है। कहते थे कि सूर्य्य चंद्रमा तारे जो आकाश में दिखाई देते सो उस के हाथ के बनाये हुए हैं। उस की दो प्रतिमा बनाई जाती थीं। एक में वह मनुष्य दिखाता था जिस के हाथ में स्थिरता का चिन्ह अर्थात लाठी रक्खी जाती थी। दूसरे में उस का रूप बामन का था। इस बामन रूप मूर्त्ति को काम्बैसस नाम फारस के राजा ने देखा जब मिस्र में चढ़ाई करके आया और ठाह के मन्दिर में प्रवेश किया और बादशाह ने इस बामन को कुरूप बताकर ठट्ठे में उड़ाया।

खोंस देवी ।
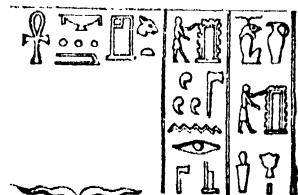
एक मिस्री देवता ।

सूर्य्य का आदर सम्मान अधिक किया जाता था परन्तु चंद्रमा की भी बहुत

पूजा हुआ करती थी उस की मूर्त्ति को खोंस और थोथ नाम देते थे। खोंस को केवल चंद्रमा करके पूजते थे परन्तु थोथ न केवल चंद्रमा बरन बिद्या का देवता भी था। उस का सिर बगला का सिर था और एक प्रकार का बगला उस के कारण से पूजा भी जाता था। चंद्रमा होके उस की मूर्त्ति के सिर पर दो चिन्ह रक्खे जाते हैं अर्थात एक नये चांद का और दूसरा पूर्णमासी का।
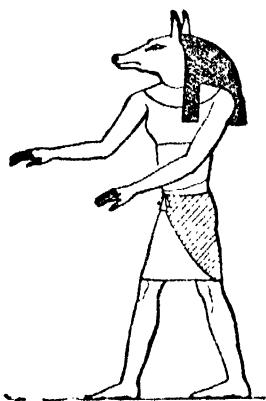
अनूबीस देवता।

अमाऊन देवता।

मिस्रियों के देवते बहुत थे परन्तु दस्तूर था कि साधारण लोग एक ही स्थान में थोड़े देवताओं को भजते थे। बहुत स्थानों में तीन देवताओं को इष्ट करके मानते थे जैसा हिन्दुओं में ब्रम्हा विष्णु महेश हैं। अथोर जिस का चित्र ऊपर दिखाई देता रा की माता समझी जाती थी।

मिस्रियों के धर्म्म में एक अनुचित रीति यह भी थी कि पशुपूजा बहुत करते थे। कदाचित इस पूजा का आरंभ इस अर्थ से हुआ होगा कि लोग इन पशुओं को पालन करके बचावें जैसा कि गाय की पूजा करने से गाय के बच्चे कम मरते थे परन्तु उस का आरंभ जो कुछ हो सो हो उस से देश की बड़ी हानि और लोगों का बड़ा बिगाड़ हुआ। जब लोग बिल्ली और नेवला इस लिये पूजते थे कि चूहों और सांपों के कष्ट से बचें और चील्हों और गिद्धों की पूजा करते जिस्तें गांव की सफाई हो जाये यह धर्म्म का बड़ा बिगाड़ देख पड़ता है। यह पशुपूजा पहिले इस रीति से किई जाती थी कि किसी पशु वा पक्षी को किसी देवता का चिन्ह बताते थे जैसा हिन्दुओं में शिव का चिन्ह सांड़ है परन्तु पीछे यह चिन्ह आप ही देवते जाने जाते थे बरन ऐसे जानवर जीवन भर मन्दिरों में आदर सहित

पाले जाते और जब मर जाते थे तब उन की लोथों में मसाले ऐसे भरे जाते थे कि कभी न सड़ें और आदर सन्मान से कबर में रखते थे जैसा जब कोई पावन बिल्ली मर जाती थी तो मिस्री इतना शोक करते थे जितना जब प्यारा पुत्र मर जाये और मृतक की लोथ को बड़े शोक से कपड़े में लपेटकर मसाला भरनेवालों के यहां ले जाते थे और लोथ सहित शोक करनेहारे छाती पीट २ कर संग जाते थे। बिल्ली के मरने पर दस्तूर था कि पालनेहारे शोक से अपने भौं को मुंड़ाते थे। जब कोई बिल्ली सेना सहित जाकर किसी परदेश में मर जाये तो वे उस की लोथ को आदर सहित घर में फिर ले आते थे ऐसा न हो कि उस की लोथ अशुद्ध जमीन में दफनाई जाये। जब कि देश में ऐसा अकाल पड़े कि लोग भूख के मारे मनुष्यों के मांस को खाने लगें तौभी यह न हो सकता था कि वे इन पवित्र पशुओं के मांस को खावें। यदि कोई मनुष्य अकस्मात ऐसा कुछ करे कि जिस से पावन बिल्ली वा गिद्ध को घात करे तो प्राण लेके भागना पड़ता था नहीं तो लोग उसे घात करते थे। भीड़ झट एकट्ठी हो जाती और उस अपराधी को टुकड़ा २ कर देती थी। सो यह दस्तूर हो गया था कि जब कोई मरी हुई बिल्ली को कहीं पड़ी देखता था तो दूर से खड़ा होके शोक के चिन्ह को दिखाया करता था न हो कि उस के मार डालने का दोष उस पर लगाया जाये। ऊपर वर्णित हुआ कि एपिस नाम एक सांड़ के रूप में ओसैरिस देवता पूजा जाता था। उस सांड़ का यह चिन्ह प्रगट करते थे कि उस का रंग काला था और माथे पर एक त्रिकोण श्वेत चिन्ह था और पीठ पर उत्क्रोश पक्षी का चिन्ह दिखाई देता था। जब कि वे ऐसे सांड़ को कहीं पाते थे जिस में यह चिन्ह हों तो भीड़ एकट्ठी होकर नये चांद के समय उसे नैलापलस नगर में ले जाते और वहां वह ४० दिन लों बड़े आदर से रक्खा जाता था और स्त्रियां उस की सेवा में रहती थीं। तब वह बड़े धूमधाम से नौका में सवार किया जाता और एक प्रसिद्ध मन्दिर में पहुंचाया जाता था और उस का जन्मदिन और वह दिन भी जिस में कि मिस्र में पाया गया बड़ा त्योहार का दिन समझा जाता था।

बहुत से याजक उस की सेवा में रहते थे और उस का उठना बैठना खाना पीना चलना फिरना शगुन निकालने का अवसर समझा जाता था। जब कि वह बीमार हो मर जाता था तब उस की लोथ में मसाला भरकर उसे सरापिस नाम बड़े मन्दिर में दफनाते थे और सांड़ जो थे सो रा अथवा होरस देवता के अवतार समझे जाते थे और जहां उन देवताओं की पूजा अधिक होती थी

उन नगरों में बड़े आदर सन्मान से पाले जाते थे। जब लों जीते रहते तब लों हजारों आदमी उन की पूजा करते थे और जब मर जाते तब उन की लोथें बड़े भारी कफनों में लपेटी जाती थीं और सब नगरबासी उन के लिये शोक करने लगते थे। गोब्रीला नाम एक कीड़ा है जो गोबर की गोलियां बनाकर उन्हें ढकेल २ कर उस स्थान पर पहुंचाता जहां अपने बच्चों को पालने चाहता है। मिस्री लोग इस कीड़े को बहुत पूजते थे और उस की बहुत सी प्रतिमाएं पत्थरों में खुदी हुई पाई जाती हैं बरन ऐसे पत्थर गहनों की रीति पहिना करते थे।
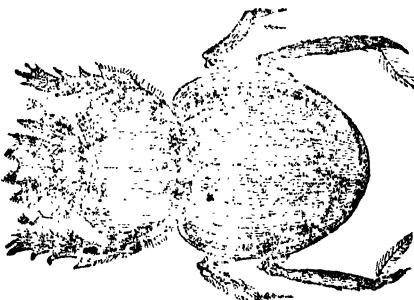
गोबरीला जिस को मिस्री पूजते थे।

अनुबिस नाम एक देवता था जिस की मूर्त्ति नर रूप कुत्ते के सिर सहित बनाई जाती थी। वह सीरियस नाम तारा का चिन्ह था जो कुत्ता तारा नाम से प्रसिद्ध है और कहते थे कि जैसा कुत्ते जोखिम के आने पर भौंक २ के अपने स्वामी को चितौनी देते हैं वैसा यह कुत्तारूपी तारा मिस्रियों को चितौनी देता था कि नील नदी में जल कब बढ़ेगा जिस्तें खेत सींचे जायें। उस की मूर्त्ति भी बहुत पूजी जाती और उस के नाम से मन्दिर और याजक और चढ़ावे स्थापन हुए। अम्मोन एक देवता था जिस की मूर्त्ति मेंढ़े के सिर सहित बनाई जाती थी।

और भी वस्तु थीं जो केवल अलग २ स्थान में पूजी जाती थीं अर्थात किसी गांव में उन की पूजा होती और किसी में नहीं। इस रीति से बहुत स्थानों में पशुपूजा अर्थात सिंह सियार मगरमच्छ हिरन मछली आदि की पूजा होती थी और जहां किसी पशु की पूजा किई जाती थी तहां के लोग उस के आदर सन्मान में बहुत मत्सरी और चिन्तित होते थे। और अलग २ गांव में अपने २ इष्ट देव की महिमा के विषय बड़े २ झगड़े हुआ करते थे बरन कभी २ गांव २ में ऐसी लड़ाइयां हो जाती थीं कि जिन के कारण आपस का बैर बरसों लों बना रहता था। फिर मिस्री कितने पेड़ पौधों को भी पूजते थे जिस के कारण

उन के बैरी ठट्ठा मारके कहते थे कि देखो मिस्रियों के देवते उन की बारियों में उगा करते हैं ।

मिस्रियों में ज्ञानी लोग भी थे जो इन सब मूर्त्तिपूजा और पशुपूजा को पाखण्ड समझते थे और उन के शास्त्रों में एक ही सृजनहार की चर्चा थी जिस्से सब कुछ उत्पन्न है और वह आप किसी से उत्पन्न नहीं होता । वही अनादि और अनन्त है जो आप में जीवन रखता है और किसी रीति से सृजा नहीं गया । यह भी लिखा था कि वह सृजनहार और केवल आत्मा और निराकार है । हर प्रकार से पूर्ण और गुणसागर है सर्बशक्तिमान सर्बज्ञानी पवित्र और अपार है । जो थोड़े से लोग इन भारी शिक्षाओं को भली भांति मानते थे सो
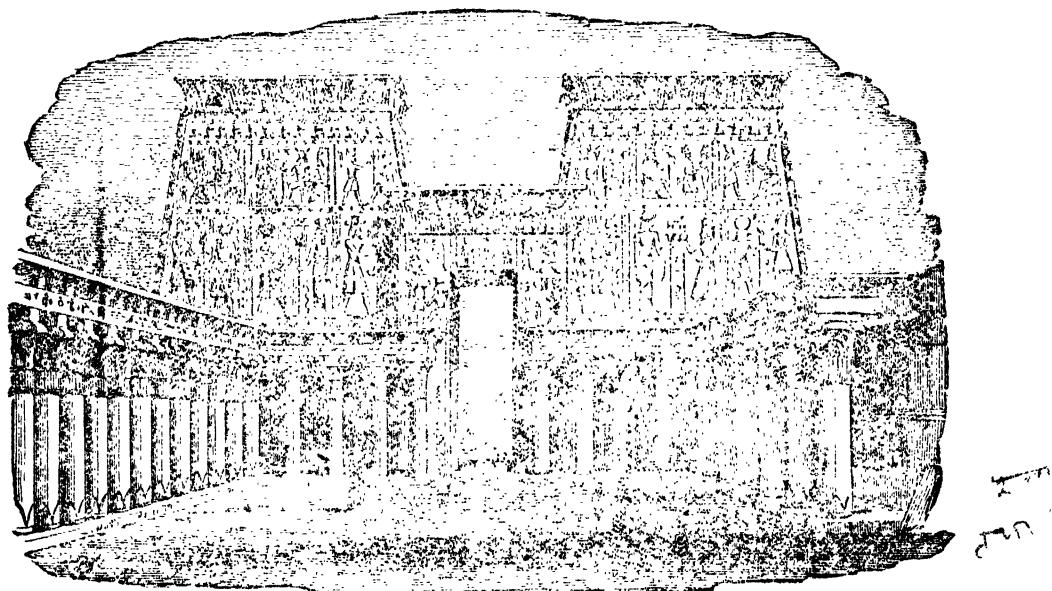
एक मिस्री मन्दिर का फाटक ।

जानते थे कि यह देवी देवते नाममात्र हैं जिन के पूजने से कुछ नहीं होता और साधारण लोग यह सोचते थे कि सचमुच ऐसे देवी देवते हैं जिन की पूजा करना धर्म्म है । मिस्रियों के मन्दिर बहुत बड़े और स्थिर रीति से बने थे और उन के पत्थर ऐसे पक्के हैं कि आज लों उन की बहुत भीतें खड़ी हैं । यह दस्तूर था कि फाटक की दोनों ओर ऊंचे २ और पोढ़े मीनार बनाये जाते थे । छत के उठाने के लिये बड़े मोटे २ पत्थर के खंभे रहते थे और इन खंभों और मन्दिर की समस्त भीतों में अद्भुत रीति के चित्र खुदे रहते थे । इन चित्रों में उस बादशाह

की महिमा जिस ने मन्दिर को बनवाया प्रगट किई जाती थी बरन चित्रों में अनेक देवते बादशाह के आगे आके हाथ जोड़ खड़े रहते थे। ऐसा एक चित्र-युक्त मन्दिर यहां देखने में आता है।
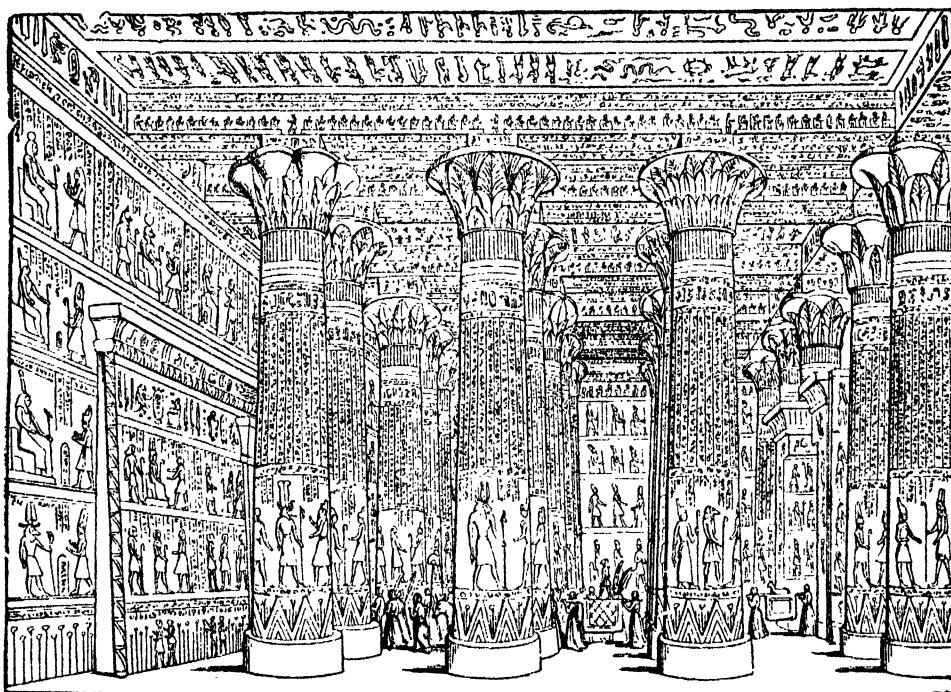
असनह का मन्दिर जैसा प्राचीनकाल में था।

राबिन्सन साहिब जो प्राचीन मिस्र के वृत्तान्त में बहुत ज्ञानी हैं उन मन्दिरों का यह वर्णन करते हैं कि प्रत्यक्ष बातों में मिस्रियों का धर्म्म ऐसा था कि जिस्से देखनेहारे का मन मोहित हो जाये। सब कुछ दिखाने के लिये किया जाता था। धर्म्म के रीति ब्योहार हर एक मिस्री के जीवन में बड़ी भारी बातें ठहरती थीं। हर एक बस्ती में बड़े २ मन्दिर पाये जाते थे और यह इतने बड़े थे कि ऊंचे २ समस्त बस्ती के ऊपर दूर से दिखाई देते थे और जहां लों मिस्री किसी प्रकार का ज्ञान वा विद्या वा शिल्पविद्या रखते थे तहां लों मन्दिरों को सुन्दर बनाते और बहुत विभूषित करते थे। भीतर कोई विशेष कोठरी रहती थी कि जिस में वहां के इष्टदेव की मूर्त्ति बड़े आदर सन्मान से रक्खी जाती थी और बहुधा उस के संग दो चार और देवी देवताओं की मूर्त्तें रक्खी जाती थीं। इन के समीप याजकों के रहने के लिये और भी कोठरियां बनी रहती थीं और इधर उधर बड़ी भारी
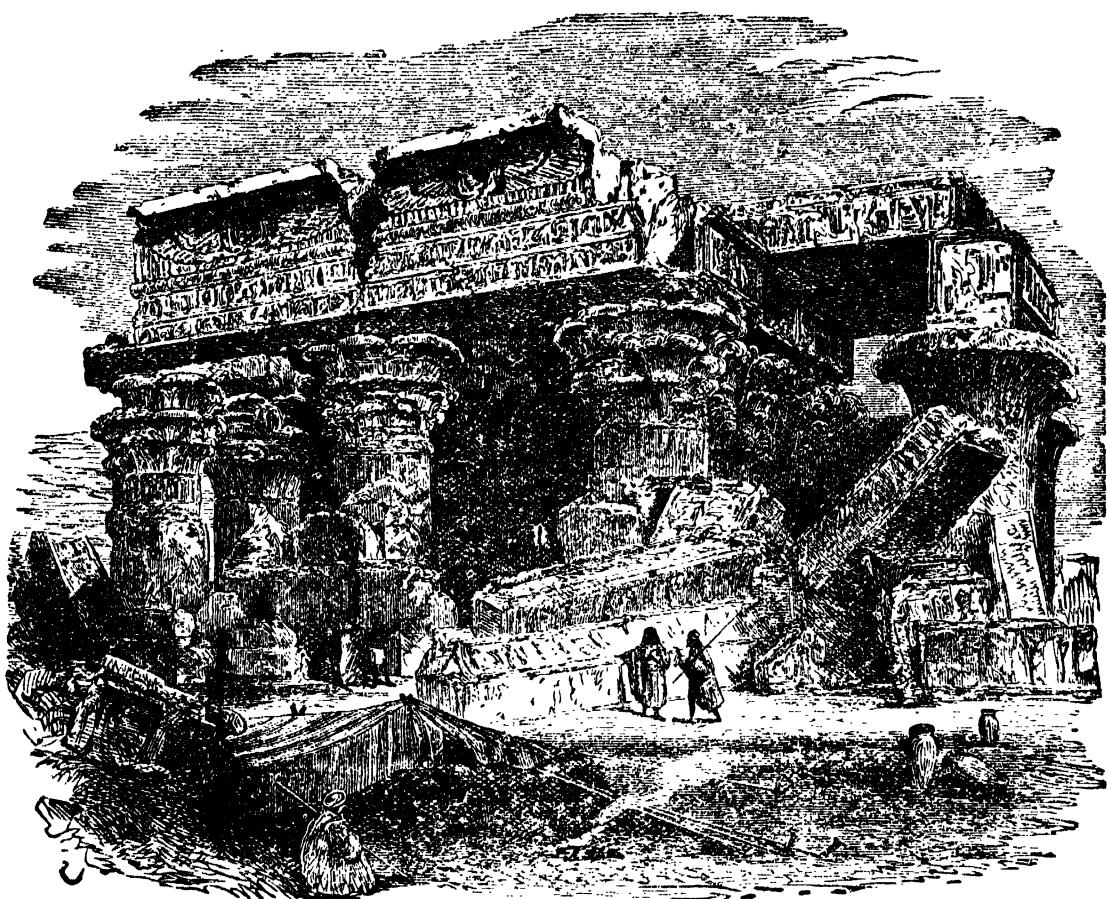
प्राचीन मिस्री मन्दिर।

कोठरियां पूजा के लिये थीं उन में कितनी लंबी चौड़ी रहती थीं जिन में भारी २ पत्थर के खंभे खड़े रहते थे और साम्हने के फाटक के दोनों बगलों पर कोट की नाईं ऊंचे २ गृह रहते थे और इन गृहों के बाहर दूर लों सड़क की दोनों ओर मूर्त्तों की दो पांती बनाई जाती थीं जो मानो आनेहारे की रक्षा करनेवाली थीं। बीच में सदा पूजन बड़े धूमधाम के संग होती थी। याजक लोग सुन्दर २ बस्त्रों से विभूषित सिर मुंडाये हुए इन कोठरियों में आते जाते थे अथवा चढ़ाओं को चढ़ाते थे। बाहर के फाटक के आगे भीड़ का आना जाना होता था। भीतर धूप दीप की सुगन्ध प्रगट होती थी। बाजों और गानेवालों की आवाज कोठरियों में सुनाई देती थी। अगणित पशु पक्षी चढ़ाये जाने के लिये मन्दिर में लाये जाते थे और पूजनेहारे अच्छे कपड़े पहिने हुए चारों ओर भीड़ की
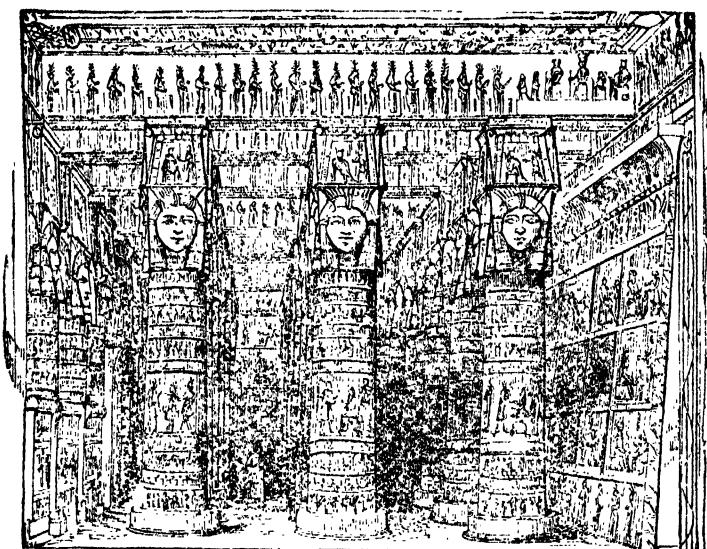
प्राचीन मिस्री मन्दिर ।

भीड़ घेरे रहते थे । जब एक रीति वा एक पूजा समाप्त होती थी तब दूसरे का आरंभ किया जाता था । बहुत सी पूजा गाने बजाने के द्वारा किई जाती थी । जब परदेशी वहां आते तो आश्चर्य्य करते कि सदा ऐसी धूमधाम क्योंकर रह सकती है और कि उस में साधारण लोग इतना मन क्यों लगाते हैं । त्योहार भी बहुत स्थापित थे कि जिन में लोग कामकाज छोड़कर मन्दिरों की सेवा में रहते थे तो देश का काम क्योंकर चलता था । पंडे लोग कितनी रीति ब्योहारों से पूजनेहारों के मनों को मोहित कर देते थे ।

लोथों में मसाला भरना ।

और सन्तानों में बहुधा यह दस्तूर है कि मृतकों को मिट्टी में दफना देते हैं । हिन्दुओं में और दस्तूर है कि मृतकों को फूंकते हैं परन्तु प्राचीन मिस्रियों का दस्तूर था कि वे बड़े लोगों की लोथों में मसाले भर २ कर रखते थे । यह दस्तूर इस बिचार से हुआ कि सोचते थे कि आत्मा देह से निकलकर दस हजार बरस लों और जन्मों के फेर में रहता पीछे फिर चाहता कि उसी देह में आके जन्म लेवे और यदि इस बीच में देह जाती रहे तो उस का फिर आना अनहोना होगा । सो उन्हों ने ऐसा उपाय किया कि जिस्से देह १0,000 बरस लों बनी

रहे। पहिले मसाला भरनेहारे पेट को चीरकर अंतरियां निकालते फिर नाक के द्वारा मगज को निकालते थे और तब देह को मसालों से भर २ कर कपड़ों में लपेटते और पहाड़ों में खोह बनाके रख देते थे। मसाला भरने के लिये नाना प्रकार के अलग २ दस्तूर थे और कितनों में बड़ा भारी खर्च लगता था। रईसों की लोथों को यों करते थे कि पहिले देह को मसालों से भर देते और ७० दिन लों एक प्रकार के लोन के पानी में भिगो के रखते थे तब बहुत से कपड़ों में सुगन्ध लगाकर लोथ को लपेटते थे। तब उसे लकड़ी के संदूक में रखते और संदूक के ऊपर मृतक का नाम और वंश और पद का बर्णन लिखते थे और तब लोथ मम्मी नाम से प्रसिद्ध होती थी। कङ्गाल लोगों का दस्तूर और था। वे लोथ को सुर लगाकर उसे ७० दिन लों लोन से नमकीन करते थे अथवा उस में बहुत राल लगाते थे और यदि यह भी न हो सके तो गरम बालू में रखकर लोथ को सुखाते थे। बहुत लोग इन लोथों को शीघ्र नहीं दफनाते बरन लोथ को बरसों लों अपने घरों में रखते थे। कभी २ यह मम्मी बड़े संभोजनों में पहुंचाई जाती थीं जिस्तें खानेहारे स्मरण करें कि एक दिन हमारी भी यही दशा होगी।

मम्मी अर्थात प्राचीनकाल की लोथ जिस में मसाला भरा हुआ था।

प्रगट होता है कि मसाला भरने की रीति मिस्र में बहुत प्राचीन थी क्योंकि मसीह से ४००० बरस पहिले कहते हैं कि सीफ बादशाह की लोथ मम्मी किई गई थी। धर्म्मपुस्तक में लिखा है कि यूसफ राजमंत्री की लोथ में मसाले भरे गये और बहुत दिन पीछे जब इस्रायेली कनान में चले गये तब इस लोथ को संग ले गये थे। न केवल मनुष्य बरन पावन पशु पक्षी भी मम्मी किये जाते थे। परन्तु उन की लोथें और रीति से बनाई जाती थीं। यह ब्योहार सन ई० ७०० लों होता रहा और इस बीच में करोड़ों लोथें मम्मी किई गई होंगी। आजकल जब लोग इन बस्तुन को पाते हैं तो अद्भुत रीति से उन्हें काम में लाते हैं। कहते हैं कि कई सौ बरस बीते यह दस्तूर था कि मम्मी को पीसते और औषध

के काम में लाते थे बरन कहते हैं कि सैकड़ों जहाज मम्मियों से भरे गये जिन से परदेशों में मिट्टी में डालने के लिये खाद बनाये गये ।

मृत्यु के पीछे महाबिचार ।

आत्मा का मम्मी के पास फिर लौट आने का चित्र ।

एक मिस्री पुस्तक मृतकों की पुस्तक नाम से प्रसिद्ध है जो हजारों बरस बीते रची गई आजकल उस का उलथा किया गया है कि जिस में आत्मा का वृत्तान्त मृत्यु के पीछे दुःख सुख के स्थान पहुंचने लों मिस्रियों की समझ के अनुसार बर्णन किया गया है । इस पुस्तक के एक पर्व्व में इस बात का बर्णन है कि आत्मा चील्हरूपी देह में जिस में मनुष्य का सा सिर और हाथ और हाथों में जीवन और स्थिरता का चिन्ह लिये हुए मृतक की देह के ऊपर झूम रहा है जैसा इस चित्र में दिखाई देता है ।

देह उस कबर के पास जो नदी पार है बड़ी भीड़ याजक और शोक करनेहारों के सहित पहुंचाई जाती है और आत्मा अमेंटी नाम स्थान अर्थात अधोलोक में जाता है वहां उन भूतों के झुंड जो उस के घात में लगे रहते और चाहते हैं कि संसार में रहके जो बुराई इस ने किई उस का पलटा लें उस को घेरे रहते और तंग करते हैं । पुस्तक में यह बर्णित है कि किस २ प्रकार की प्रार्थनाओं और दोषाच्छादनों को कहकर आत्मा अपनी रक्षा करता तब आगे बढ़के आत्मा ओसैरिस के महाबिचार की कोठरी में जा पहुंचता है । उस गृह में मृतकों को
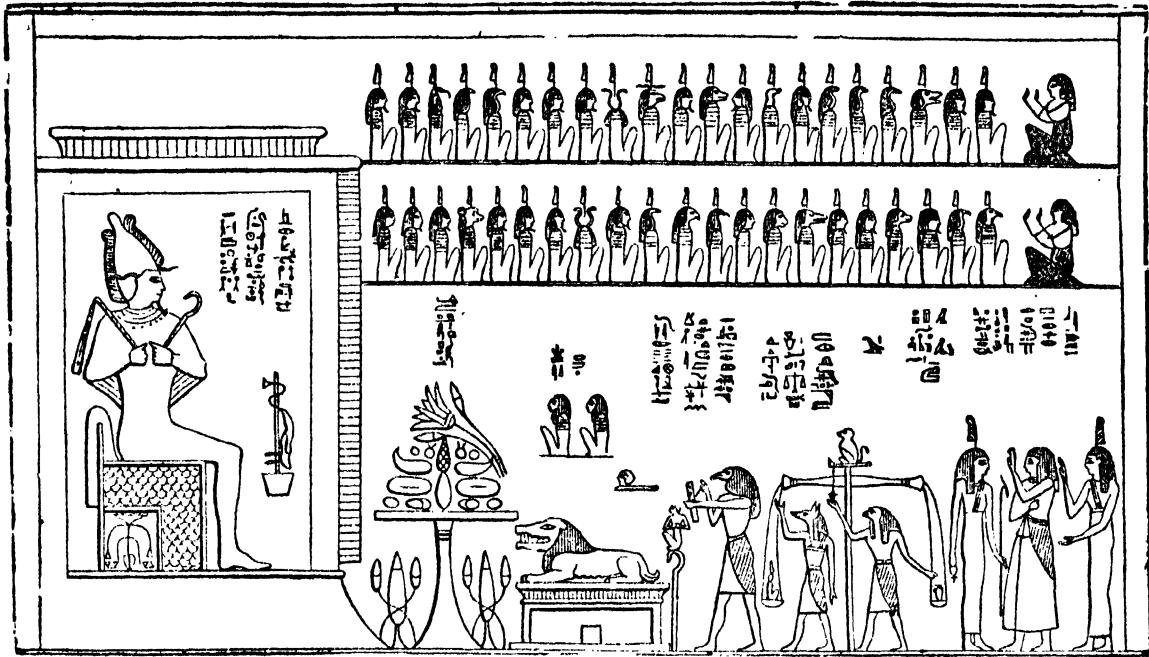
ओसैरिस देवता का महाविचार स्थान में बैठना।

४२ जांचनेवाले बैठे हुए हैं और उन में से कितने नर रूप हैं और कितने पशु पक्षी के सिर रखते हैं जैसा कि सिंह वा बन्दर वा मगरमच्छ वा चील्ह के सिर। उन के आगे घुटना टेकके मृतक अपनी सफाई के लिये यह कहता है कि मैं ने किसी को नहीं ठगा मैं ने किसी मिस्री को दास दासी होने के लिये नहीं बेचा। मैं ने कचहरी में किसी प्रकार की झूठी साक्षी नहीं दिई। मैं ने बड़े लोगों को प्रसन्न करने के लिये किसी प्रकार की बुराई नहीं किई। मैं ने किसी पर जबरदस्ती नहीं किई। मैं ने अपने घराने को भूख प्यास से नहीं सताया। मैं ने कङ्गालों को नहीं रोवाया। मैं ने नापों को झूठ करके प्रगट नहीं किया। मैं ने नील नदी के तीरों को नहीं काटा और जब पानी बढ़ता था तब मैं उसे अपने लिये अलग करके नहीं ले गया। मैं खाऊ नहीं था। मैं पेटू नहीं था इत्यादि।

इन न्यायकर्त्ताओं के नीचे ओसैरिस आप बैठा करता है और न्याय के आसन की दहिनी ओर तीन आदमी दिखाई देते हैं जिन में बीचवाला ऐसा वस्त्र पहिने हुए है जैसा साधारण मिस्री लोग पहिना करते थे। दो स्त्रियां उस पास खड़ी हो उसे ग्रहण करती हैं और दोनों के सिर पर बड़ा पर लगा है जो कि व्यवस्था का चिन्ह है। एक उस का नाम लेती और उसे दूसरे के साम्हने पूछा

करती है। इस दूसरी के हाथों में अधिकार और जीवन के चिन्ह प्रगट होते हैं। बीच में न्याय की तुला है जो सुकर्म्म कुकर्म्म को तौलती है। मृतक का आत्मा एक ओर और न्याय और सत्य के चिन्ह दूसरी ओर रक्खे जाते हैं। तुला की लकड़ी के ऊपर छाप नाम थोथ का एक सेवक है जो देवताओं का लेखक है

प्राचीन मिस्री दरबार ।

और बन्दर रूप होकर बैठा रहता है। दो देवते तुला के पास खड़े हो ध्यान से उस के तौलने को देखते रहते हैं। उन में एक होरस नाम ओसैरिस का प्यारा पुत्र है जिस का चील्ह का सिर है और दूसरा अनुबिस देवता जिस का कुत्ते का सा सिर है। यह दोनों तुला को बताते हैं और थोथ देवता हाथ में कलम और

तख्ती लेकर खड़ा रहता और उसे लिखता रहता है और ओसैरिस साम्हने बिचार के आसन पर बैठा रहता और इस न्याय को जांचता है। एक हाथ में कोड़ा है और दूसरे हाथ में एक टेढ़ा डंडा जो अधिकार और न्याय के चिन्ह हैं। उस बिचारासन के बीच में एक चीते का चमड़ा टंगा रहता है जिस का अर्थ जाना नहीं जाता। तुला और बिचारासन के बीच में एक तिपाई खड़ी है जिस में फल फूल का ढेर लगाया हुआ सब के ऊपर कमल का फूल दिखाई देता है। यह वही चढ़ावे और धर्म्म कार्य्य हैं जो मृतक के मित्र उस के नाम में चढ़ा चुके हैं। तिपाई के आगे एक बैठक है जिस में कोई दण्ड देनेहारा अमेण्टी को फाड़नेहारे नाम से बैठा है जो ओसैरिस से दण्ड की आज्ञा पाकर बेचारे मिस्रियों को दण्ड देने के लिये तैयार है।
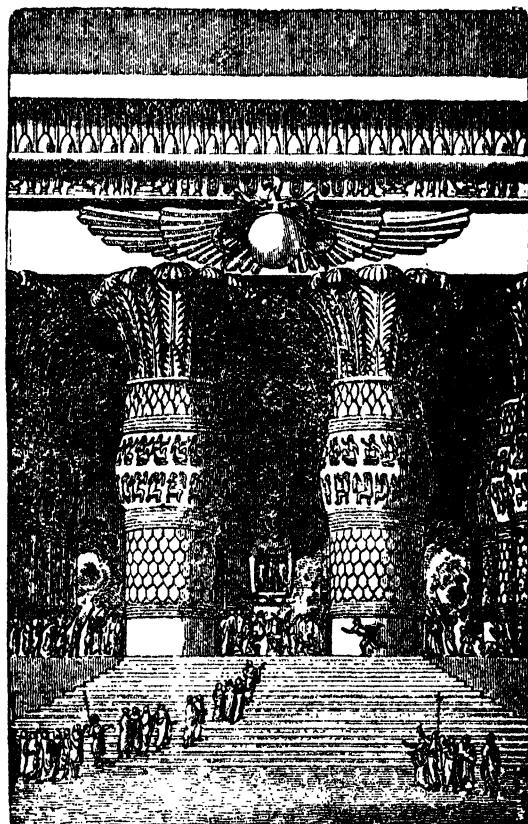
प्राचीन मिस्री मन्दिर।

यह आज्ञा जो आत्मा के तौलने पर दिई जाती सो धर्म्मी के लिये आनन्द से

और अधर्म्मी के लिये शोक से भरपूर है । वे धर्म्मी लोग जो बालक के वा माता पिता के वा स्वामी सेवक के सब कर्त्तब्य को अच्छी रीति से कर चुके हैं और तौल में अच्छे निकले सो आनन्द के स्थानों में पहुंचाये जाते हैं जहां अपने परिश्रमों से बिश्राम पाते हैं वहां जो कुछ करते सो आनन्द का काम ठहरता है । वहां आनन्द का स्वामी अर्थात सूर्य्य प्रसन्नता से उन की ओर देखा करता और उन्हें आनन्द के खेत में काटने के लिये यह कहके भेजता कि जाओ अन्न काटो अपने अपने घर में ले जाओ चैन से खाओ और उस में से देवताओं के नाम पर पवित्र चढ़ावा चढ़ाओ । इन सुखियों के घरों के समीप जीवन के पवित्र जल की नदी बहती है जिस में नहाते और उस में से जल पीते हैं । उन के घरों पर यह लिखा जाता है कि यह वही हैं जिन पर महा देवता अनुग्रह करता और उन्हें ग्रहण करता है । वे सुख के घरों में रहा करते और स्वर्ग के आनन्द में बिश्राम करते और उन की देहें जो संसार में छोड़ी गईं सो कबरों में पड़ी रहेंगी और आत्मा परमेश्वर के सन्मुख आह्लादित होगा ।

मिस्र का इतिहास ।

प्राचीन मिस्री मन्दिर ।

मिस्र का प्राचीन बर्णन कहानियों से भरा है और प्रगट नहीं कि किस को सत्य और किस को झूठ मानना चाहिये । वे प्राचीनकाल का अद्भुत वृत्तान्त

कहते हैं। मासप्रो साहिब ने कहा है कि जब मिस्रियों से कुछ प्राचीनकाल का वृत्तान्त पूछा जाये तब कहते हैं कि मुख्य सन्तान हमही हैं और संसार के जितने और लोग हैं सो हमारे साम्हने मानो बच्चे हैं और जब कि और लोग इस प्राचीनता के विषय में सन्देह करते तो वे उन्हीं को अज्ञान कहके तुच्छ जानते हैं। कहते हैं कि उस समय से पहिले जब कि सृजनहार ने सृष्टि के काम को पूरा किया तबही से हमारा निवास नील नदी के तीर पर हुआ क्योंकि देवता-गण हमारे काम को इतना देखा चाहते थे कि ठहर न सकते थे। सब ही मानते कि देवताओं से हम निकले परन्तु जब उन से पूछा जाता कि किस देवता से निकले हो तब एक मत न होते परन्तु नाना प्रकार के उत्तर दिया करते किसी का कहना यह है कि थाह देवता ने मनुष्य को अपने हाथों से बनाया। दूसरा कहता कि जब नूम ने मनुष्य को बनाने चाहा तो कुम्हार का चाक लेकर उस ने उसे मिट्टी से बना दिया। तीसरा कहता कि रा देवता अर्थात सूर्य्य जब पहिली बार उदय हुआ तब पृथिवी को खाली और सूनसान देखकर ऐसा शोकित हुआ कि उस की किरणें आंसुओं की नाईं पृथिवी पर गिरीं और जहां कहीं गिरीं तहां पृथिवी भर में मनुष्य पशु पक्षी नाना प्रकार के जीव उन आंसुओं से उत्पन्न होने लगे। चौथे का बर्णन यह है कि जब सूर्य्य की गर्मी जमीन की मिट्टी पर पड़ने लगी तब नील नदी की उत्तम कीच से हर प्रकार के जीव आप से आप अपने २ रूप में उत्पन्न होने लगे जब लों अन्त को मिट्टी में कुछ बल न रहा कि इस से नई बस्तु उत्पन्न हो।

केवल रा नहीं बरन और भी देवते समझे जाते थे जिन में जीव उत्पन्न करने की शक्ति थी। वे कहते थे कि समस्त देवते आंसू बहाने से जीवों को उत्पन्न कर सकते हैं और जहां कहीं उन के आंसू गिरते तहां यह जीव उत्पन्न होने लगते और जैसे देवता तैसे वे जीव होते जो उन से उत्पन्न किये जाते थे। अच्छे देवताओं से अच्छे जीव उत्पन्न होते और बुरे से बुरे और इस कारण हम देखते हैं कि संसार भर में भले बुरे मिले हुए जीव पाये जाते हैं। वे मानते कि सित अर्थात दुष्टात्मा रोज नई २ दुष्टता को उत्पन्न करता है। वह और उस की जो प्रजा जान बूझके और बिना जाने भी बुराई करते और कराते हैं उन की आंखों से प्रतिदिन वही आंसू गिरते थे कि जिन से पृथिवी में काम क्रोध मद लोभ उत्पन्न हुआ करते। न केवल यह परन्तु उन के लहू से उन के थूक से और उस फेन से जो क्रोध में आते समय उन के मुंह से गिरता इन सब में से एक २

बून्द जहां कहीं गिरती तहां किसी प्रकार का कुकर्म्म द्वेष बैर नरहत्या इत्यादि उस से हो जाता अथवा सांप बिच्छू आदि कोई काटनेहारा अथवा कोई विष

प्राचीन मिस्री योद्धा।

भरा पेड़ उत्पन्न हो जाता था। इस के विरुद्ध सूर्य्य की ज्योति जहां कहीं पड़ती तहां सत्य और हित प्रेम धर्म्म और सब सुख देनेहारी बस्तु उत्पन्न होने लगती थीं। मांस मछली तरकारी मनुष्य के भोजन के लिये रुई सन ऊन उस के बस्त्र के लिये मदिरा जो उस के मन को आनन्द करे मधुमाखी जो उस के लिये मिठास उत्पन्न करे फल फूल कि जिस से सुखचैन प्राप्त हो यह सब रा के दान हैं और उस के नाम से चढ़ानेहारा चढ़ावा भी चढ़ाते थे। वे कहते थे कि पहिले मिस्री जो रा के विशेष सन्तान थे सो पवित्र उत्पन्न होकर अच्छे और धर्म्मी थे परन्तु उन के बंश के लोग धीरे २ बुरे होते गये यहां लों कि पीछे को सब की दुर्दशा फैल गई।

और लोग इस वृत्तान्त को भूल बताकर कहते थे कि सो नहीं बरन पूर्वकाल के आदमी जंगली बरन बनपशुओं की नाईं रहते थे और उन के पास बिस्राम की वस्तु भी नहीं पाई जाती थीं बरन वे बोलना भी न जानते थे और जानवरों की नाईं एक दूसरे को अपना मनोरथ प्रगट करते थे और पीछे थोथ देवता ने बोलना लिखना पढ़ना रोटी पकाना कपड़ा बिन्ना आदि सिखाया।

प्राचीन मिस्री मन्दिर।

साधारण लोगों में इस प्रकार की कहानियां प्रचलित थीं परन्तु मिस्री लोगों में जो ज्ञानी थे सो ऐसी बातों से सन्तुष्ट न हो सके। वे यह जान्ने चाहते थे कि हमारे पुरखों का आरंभ कैसा था और वे किस दशा में रहते थे और कैसे राजा अधिकार रखते थे और उन राजाओं के नाम और वृत्तान्त क्या २ थे और कौन २ परंपरों से उस पवित्र देश को छोड़के जो नील नदी के तीर पर है परदेश में बसने को निकल गये और वे जो मिस्र में रह गये सो धीरे २ सुख की बातों को प्राप्त करने और शिष्टाचार को पाने लगे क्योंकि देखते थे कि पुराने गृहों के चित्रों में प्रगट था कि शिष्टाचार किसी न किसी रीति से प्राचीनकाल में प्राप्त

हुआ था । इन बातों के बहुत वृत्तान्त लोगों में सुने सुनाये प्रचलित थे और हिलिपोलिस नगर के जो याजक लोग थे सो इन वृत्तान्तों को बहुत बूझते और तौलते थे जिसतें सत्य झूठ को अलग करें । जो बातें उन साधारण लोगों में प्रचलित थीं यह नेववाली बातें समझी गईं जिन का तौलना और जांचना और स्थान के अनुसार मिलाना पड़ा जिस्तें देश का प्राचीन इतिहास बनावें । जो नौ देवते अधिक बर्णन किये जाते थे उन्हीं को नौराजा बताते थे और प्रचलित कहानियों के अनुसार एक २ राजा के गुण औगुण उस के राज्य के बर्षों की गिन्ती उस के बड़े २ राजकार्य्य इत्यादि बर्णन करते थे और देवताओं के वृत्तान्त में वे सांसारिक राजाओं के वृत्तान्त को मिला देते थे और कहते थे कि रा देवता संसार का पहिला राजा हुआ बरन उस ने बड़ी कठिनता से अपने राज्य को स्थापन किया । उस के ऐसे महा बैरी थे जो पराजय के पुत्र कहलाते और संसार में गड़बड़ी चाहते थे सो वे इस नये राजा पर बड़ी क्रूरता से चढ़ाई करते थे और रात्रि को उसे भगाया चाहते थे परन्तु दो ऐसे रात के महा युद्धों में उस ने उन पर विजय किया और अपने अधिकार को स्थिर किया । अपोपी नाम महा सांप उस का शत्रु था परन्तु जिस समय कि वह घायल होकर समुद्र में डाला गया उस समय से नया साल गिना जाता है सो नौ देवताओं और सूर्य्य से पहिले राज्य का आरंभ हुआ और उस समय से जब लों कि ऐसस का पुत्र होरस न आया तब लों समाप्त न हुआ ।

मिस्र का ऐतिहासिक बर्णन ।

हम इस बर्णन को कि देवतागण मिस्र के सिंहासन पर बैठे थे मान नहीं सकते हैं परन्तु यदि इतिहास की रीति से पूछें कि मिस्र की पहिली दशा कैसी थी तो इस का उत्तर देना कठिन है । मिस्रियों का एक वृत्तान्त ऐसा है कि हमारा पहिला राजा मिनीज था जो मसीह से पहिले ४,५०० बरस जीता था । कहते हैं कि उस ने ममाफिस नाम नगर को उस स्थान के समीप जहां खैरू नगर अब बना है बनवाया और कि उस ने देश को व्यवस्था दिई और देवताओं की पूजा को सुधारा । उस के विषय कहानी यह है कि एक दिन अपने अहेरी कुत्ते को संग लेकर आखेट करने को गया परन्तु किसी कारण से कुत्ते उस के फाड़ने के लिये दौड़े उन से बचने के लिये वह मेरिस झील के तट पर भाग गया तहां

थोथमेस तीसरा ।

एक मगरमच्छ ने बादशाह पर दया किई और उस को पीठ पर चढ़ाया और उसे झील के पार कुशल क्षेम से पहुंचाया । इस से बादशाह यहां लों प्रसन्न हुआ कि वहां एक नगर की नेव डाली और उस का नाम मगरमच्छपुर रक्खा और उस मगर को नगर का इष्टदेव स्थापन किया । इस बादशाह का वृत्तान्त कहां तक सत्य है कौन जानता है परन्तु सिकन्दर महान के दिन लों उस के नाम को स्मरण करके कहते थे कि हमारे बादशाहों में मिनीज पहिला था ।

मिनीज के पीछे जो महाराजा थे उन के नामों की फिरिस्त पाई जाती हैं और यह भी कि एक २ कितने साल लों राज्य करता रहा परन्तु प्रगट नहीं कि यह सूची कहां से आई अथवा कैसे बनाई गई सो प्रगट नहीं कि कहां लों उन पर भरोसा रक्खें बरन सूचीपत्रों में भिन्नता है और कौन जाने कि कौन सूचीपत्र सत्य है परन्तु वृत्तान्त जैसा कि ज्ञानवान अधिक करके मानते हैं नीचे वर्णित है । राजाओं की पहिली दश श्रेणी ममफिस को अपना मुख्य नगर जानती थीं और समस्त मिस्र पर अधिकार रखती थीं । उन के दिनों में शिष्टाचार मिस्र में बहुत फैल गया था । उन में से खूफ नाम एक बादशाह ने पिरमिद नाम

उस बड़े गृह को बनवाया जो खैरू के समीप सब से बड़ा अब भी पाया जाता है। कहते हैं कि उस के बनवाने में एक लाख आदमी बीस बरस लों लगाये गये। सीफरानेज उस के भाई ने उस के निदर्शन पर दूसरा पिरमिद बनवाया और उस समय से लेके सैकड़ों बरस लों और पिरमिद बनते चले आये। कितने ज्ञानवान सोचते हैं कि यह बादशाहों के दफनाने के लिये बनाये गये परन्तु इस को प्रमाण तक पहुंचाना कठिन है।

जैसा बादशाहों के पहिले दस घराने ममफिस नगर के बसनेहारे थे वैसा ही दूसरे दस घराने अर्थात ग्यारहवें राजकुल से लेकर २० तक थीब्ज नगर के रहनेहारे थे जो १५० कोस और भी दक्खिन को बना था परन्तु यह दश राजबंश दो भागों में बांटे जाते हैं क्योंकि बीच में हिकसोस अर्थात गड़ेरिये लोगों ने पूर्व से आकर मिस्र पर चढ़ाई किई। उन्हों ने ममफिस नगर को ले लिया और बहुत दिन तक उसे मुख्य नगर बनाकर राज्य करते रहे परन्तु पीछे को थीब्जवाले बादशाहों ने उन को मिस्र से भगा दिया। इस्से कितने बरस आगे ऐसा हुआ कि इस्राएली लोग कनान को छोड़कर मिस्र में आ बसे। पहिले वे बिश्राम से रहे परन्तु पीछे को मिस्र के बादशाह उन पर बड़ी क्रूरता करने लगे। इस तंगी के मारे वे मूसा नाम सरदार को अगुवा बनाकर मिस्र को छोड़कर लाल समुद्र के पार होके कनान में जा रहे।

थीब्जवाले बादशाहों में कितने चतुर और सामर्थी थे और देश को लड़ाई के द्वारा से बहुत बढ़ाते जाते थे और उन का अधिकार कुछ छः सौ बरस लों प्रबल बना रहा। उन में तीसरा ताथमेज नाम जो मसीह से १४०० बर्ष पहिले था बहुत विख्यात हुआ। उस ने अराम देश पर विजय किया बरन बाबुल और असूर भी उसे शुल्क दिया करते थे। थोड़े दिन हुए इस बादशाह की मम्मी अर्थात सूखी हुई लोथ एक गुप्त कबर में पाई गई परन्तु ज्यों उस में से लिपटे हुए कपड़े निकालते थे त्यों वह एक दम में राख हो गई परन्तु पहिले उस की फ़ोटोग्राफ अर्थात तसवीर उतारी गई परन्तु उस कफन में जिस से लोथ निकाली गई थी फूलों के हार रक्खे हुए थे जिन का कुछ २ रंग इतने हजार बरस लों बचा रहा।

रामसीस दूसरा एक और थीब्जवाला बिख्यात बादशाह हुआ। यह वह बादशाह है जिस को यूनानी लोग सीसाट्रिस नाम से बहुत बर्णन करते हैं। उस ने सेना सहित यूरप के पूरबवाले देशों पर चढ़ाई किई और एशिया में भी हिन्द

नील नदी और तीन पिरमिड कैरो नगर के समीप ।

रामसीस दूसरे का चित्र।

की सीमा लों आगे बढ़ा। वह हबश देश को और उस के समीप के सब टापुओं को मिस्र के बश में लाया। कहते हैं कि वह ऐसा अहंकारी था कि जिन राजाओं पर विजय किया था उन से अपनी गाड़ी खिंचवाता था परन्तु ४४ बरस के राज्य करने के पीछे जब अन्धा और बलहीन हुआ तब उस ने अपने प्राण को त्यागा। अब थोड़े दिन हुए उस की लोथ भी पाई गई और कपड़ा उतार कर उस का चित्र उतारा गया।

इक्कीस राजबंश से लेकर तीस तक सैऐत मिस्री बादशाह कहलाते हैं परन्तु यह भी दो भागों में बांटे जाते हैं क्योंकि बीच में फारसदेश के बादशाह आकर कुछ दिन लों मिस्र के स्वामी हो गये । नीको दूसरा जो मिस्री बादशाह था सो नौकाविद्या से प्रसन्न था और उस ने सूएज की जमीन में ऐसी नहर खोदने चाही कि जिस्से नौका रूम समुद्र में और लाल समुद्र में आया जाया करें । कहते हैं कि उस के दिनों में फिनीकी लोगों के जहाज आफ्रिका देश की पूरी परिक्रमा कर गये । सन ५२५ मसीह से पहिले काम्बायसेज नाम फारस के बादशाह ने मिस्र पर चढ़ाई किई और बहुत सामर्थी होकर उस ने उन लोगों को बहुत तंग किया । कहते हैं कि उस ने पीलूसियम नाम उन के एक पावन नगर को घेर लिया और उसे लेने चाहा सो यह जानकर कि मिस्री लोग कुत्तों और बिल्लियों को पूजते हैं और मारने नहीं चाहते उस ने उन को अपनी सेना के आगे रक्खा और यूं सहज से नगर में प्रवेश पाया परन्तु उस ने मिस्रियों के महामन्दिरों को लूट लिया और एपिस सांड़ को जो उन का इष्टदेव था घात किया ।

जब सिकन्दर महान एशिया पर चढ़ाई करने को गया तब फारसियों का अधिकार मिस्र में प्रचलित था पर सिकन्दर ने उसे अपने बश में कर लिया और वहां सिकंदरिया नाम एक प्रसिद्ध नगर की नेव डाली । जब वह मर गया तब तालमी नाम उस का एक सरदार मिस्र का बादशाह हुआ और अधिकार बहुत बरस लों उस के बंश में बना रहा । उन दिनों में मिस्र के लोग यूनानी भाषा बोलने लगे और यूनानी बिद्याओं में प्रवीण होने लगे यहां लों कि उन दिनों में बिद्यार्थी दूर २ देशों से वहां पढ़ने के लिये आया करते थे । तालमी फिलादलफुस नाम एक बादशाह था जिस के दरबार में बड़े ज्ञानी और बिद्वान एकट्ठे होते थे और उस ने उत्तम पुस्तकों के रखने के लिये सिकंदरिया नगर में एक बिख्यात पुस्तकालय बनाया और यहूदी लोग कहते हैं कि उस ने ज्ञानी लोगों के हाथ से तौरेत का वही उलथा करवाया अर्थात इब्रानी भाषा से यूनानी भाषा में करवाया जो आज लों सपत्तुजिन्त नाम से प्रसिद्ध है ।

क्लियोपाट्रा महारानी जो सुन्दरता में बहुत प्रसिद्ध थी सो मिस्र की पिछली महारानी थी । जब मसीह से पहिले ३१ बरस में क्लियोपाट्रा आक्तूयम नाम लड़ाई में हार मानके भाग गई और सांप के काटने से प्राण त्यागा तब मिस्र रूम देश का एक भाग हो गया । फिर सन ई० ३९५ में जब रूमी राज्य दो भागों में बांटा गया तब मिस्र पूरबवाले भाग में एक सूबा बना रहा । सन ई० ६३९ में उमर

नाम एक मुसलमान ने अरबी सेना लेकर मिस्र पर चढ़ाई किई सो वह उमर खलीफा के राज्य का एक भाग हो गया ।

अब के मिस्र देश का वृत्तान्त ।

निवासियों का वर्णन ।

एक जवान मिस्री स्त्री का आंखों में सुरमा लगाना ।

मिस्र देश के निवासी आजकल बहुधा फिल्ला अर्थात खोदनेवाले कहलाते हैं और प्रगट है कि मिस्र में काम काज करनेवाले बहुधा फिल्ला होते हैं बरन पूर्बकाल से जो कुछ कामकाज देश में किया गया है सो अधिक करके उन से किया गया है हां अरब लोग वहां बहुत हैं परन्तु वे उद्योग से कम प्रसन्न होते हैं और ऐसा जाना जाता कि जो जात जमीन को जोतती बोती है सो वही है जो कुफू बादशाह के दिनों में किसनई करती थी जब बड़ा पिरमिद बनाया जाता था ।

यह फिल्ला लोग ऊंचे नहीं हैं तौभी उन का रूप अच्छा है और देह बलवान और परिश्रम करने योग्य है । उन का रंग भूरा सा है और उन की आंखें काली काली और चमकीली हैं परन्तु शोक की बात यह है कि बहुत से मिस्रियों की एक आंख जाती रही है कारण इस का यह है कि उस देश में मक्खियां अधिक

मिस्री दुभाषिया।

हैं और बच्चों के मुख बहुत मैले रहते हैं और माता पिता ऐसे अज्ञान हैं कि बच्चों को मक्खियों से बचाये नहीं रहते सो आंख का रोग बच्चों में बहुत फैल जाता बरन बहुत से अन्धे भी हो जाते हैं। फिर उस देश में धूप अधिक होती है और लोग धूप में आंखें अधमून्दी करके फिरा करते हैं। बहुत मिस्री सिर को मुंड़वाते परन्तु हिन्दुओं की नाईं सिर के ऊपर चोटी रखते हैं और जब उन से पूछा जाये कि यह बाल क्यों छोड़ा जाता है तो कहेंगे कि इस चोटी का लाभ यह है कि जब घातक मेरे सिर को उड़ा देवे तो इस को पकड़के सिर को उठावेगा। जब मिस्री को डाढ़ी हो तब बड़े आदर सन्मान से उसे रख लेता और उस के द्वारा से किरिया खाता है और जब कोई दुष्कर्म्म करे तब यह कहते हैं कि उस ने अपनी डाढ़ी का अपमान किया है।

वस्त्र का वृत्तान्त ।

मिस्री स्त्रियां ।

बहुत से कङ्गाल लोग केवल धोती पहिनते हैं परन्तु जिस पास कुछ धन हो तो वह पायजामा पहिनेगा और उस के ऊपर नीले रंग का लंबा कुरता । फेज नाम एक प्रकार की ऊनी लाल टोपी बहुत पहिनी जाती है बरन कभी २ पिता उसे पुत्र के लिये छोड़ देता यहां लों कि उस का लाल रंग कुछ भी नहीं रहता है । जिन के पास यह टोपी भी न हो तो एक पतली श्वेत टोपी पहिनेगा जैसा कि हिन्दुस्तान में रीति है । धनवान लोग नाना प्रकार के अच्छे २ वस्त्र रखते हैं बरन प्रधान लोग आजकल विलायतियों के दस्तूर पर बहुत चलते हैं। जवानी के समय में बहुत सी मिस्री स्त्रियां रूपवती होती हैं परन्तु उन की सुन्दरता शीघ्र जाती रहती है । उन का दस्तूर यह है कि आंखों में सुरमा लगातीं और हाथ पांव में मेंहदी से लाल रंग लगातीं बरन उन में ऐसी हैं कि जो गोदना से अपनी देहों में चित्र खिंचवाती हैं बरन समझती हैं कि इस जंगलीपन से हम को शोभा मिलती है । धनवान स्त्रियां बहुत वस्त्रों को रखती हैं परन्तु कङ्गाल

स्त्रियां केवल दोही कपड़ा पहिनतीं अर्थात नीले रंग का झूला जो पांव तक रहता है और सिर पर चादर ओढ़ती हैं जिसे किसी आदमी को देखकर

मिस्री माता और बच्चा।

घूंघट कर लेती हैं। जब अच्छे घर की स्त्रियां सड़कों में निकलती हैं तो बुरका पहिनती हैं जो समस्त देह को छिपाता है केवल आंखें खुली रहती हैं।

स्त्रियों का नील नदी से पानी भरना।

यूरप में माता अपने बच्चों को बांहों पर उठाके लिये फिरती हैं। हिन्दू स्त्रियां

बालक को कमर पर बैठाती हैं और मिस्री स्त्रियां उन को कान्धे पर रख लेती हैं । उन की एक अद्भुत कुरीति यह है कि जब माता साफ सुथरे बस्त्रों को पहिरे हो जो कदाचित कौशाम्बर अथवा बहुमूल्य हों तौभी उस के साथ उस के बालक बहुत मैले कुचैले फिरते हैं और ऐसा देख पड़ता कि न लड़का न कपड़े महीनों तक साफ किये जाते हैं । इस का कारण यह है कि लोग बुरी दृष्टि से बहुत डरते हैं और बालक को इस लिये मैला कुचैला रखते हैं न हो कि कोई आपद उन पर गिरे ।

भोजन का वृत्तान्त ।

भोजन करनेहारे का हाथ धोना ।

फिल्ला लोग विशेषकर काली रोटी अर्थात जुआर की रोटियां खाते हैं और इन के संग पिआज आदि वस्तु कच्ची और पक्की और छुहारा आदि फल खरबूजा तरबूज खाते हैं । फिर जब मिले तब भूना हुआ अन्न और लोबिया आदि को काम में लाते हैं । और वस्तु जो उन के पास हों जैसा गाय बैल भेड़ी बकरी मुर्गी कबूतर अंडे दूध माखन इत्यादि को वे आप नहीं खाते बरन बाजार में ले जाके बेंचते हैं हां सौ दिन में दो तीन बार अर्थात किसी बड़े त्योहार के दिन में वे भेड़ी का मांस खाते हैं । जब मिस्री मांस खाने की लालसा से किसी जानवर को मारे तो यह कहकर कि ईश्वर के नाम पर ईश्वर का बड़ा महात्म है उस का गला कटवाके उस का लहू बहवाता है । फिल्ला लोग मदिरा को नहीं पीते बरन तमाखू के बड़े पीनेहारे हैं ।

मिस्रियों का भोजन खाना।

नगरबासियों का यह दस्तूर है कि सवेरे उठकर एक प्याला कहुआ बिन दूध और चीनी के पी लेते और तमाखू पीके अपना काम काज करने को निकलते हैं। और लोग सवेरे उठके छोटी हाजरी खाते हैं। हाजरी के लिये बहुत लोग रोटी को दूध के साथ वा अंडों के साथ खाया करते हैं अथवा पूरियां जो घी में पकाई जाती हैं। दूकानों में ऐसी लोबिया जो घी और तेल के साथ तली गई हों सवेरे बिकती हैं। जो धनवान हैं सो दिन में बार २ काफी और हुक्का पीते हैं बरन बहुतेरे ऐसे भी हैं कि जहां कहीं जाते तहां सेवक हाथ में हुक्का लिये हुए पीछे रहता है। भोजन खाने से पहिले दस्तूर है कि आदमी जाके अपने हाथों को धो ले क्योंकि चम्मच छूरी कांटा काम में नहीं आते हैं। कभी २ सेवक पाहुन के हाथ पर पानी डालता और उस के हाथों को रूमाल से पोंछता है।

भोजन के समय एक छोटी माची बीच में रखी जाती और उस के ऊपर एक थाल रक्खा जाता है जिस के ऊपर भोजन के कितने बर्त्तन रक्खे जाते हैं। फिर उन के चारों ओर रोटी के टुकड़े और कटे हुए नीबू रक्खे जाते हैं जिस्तें जब जी चाहे तो किसी बस्तु पर रस निचोड़े। उस थाल के पास सब खानेहारे ज़मीन पर बैठ जाते हैं और पहिले ईश्वर का नाम लेकर बिसमिल्लाह पढ़ते हैं तब हाथों से खाने लगते हैं। कभी २ कोई किसी उत्तम बस्तु को अपने बर्त्तन से निकालकर अपने मित्र के बर्त्तन में रखता कि यह मित्रता का चिन्ह है। जब

कोई खा चुकता है तब उठके ईश्वर को धन्य कहता और औरों के लिये नहीं ठहरता बरन सेवक पानी लाता और वह अपने हाथ मुंह को धोता है ।

घरों का बर्णन ।

कंगाल मिस्रियों की झोंपड़ियां ।

जैसा हिन्दुस्तान में तैसा मिस्र में फिल्ला लोगों के घर बहुधा कच्ची ईंटों के बनते और उन में दो तीन कोठरियां रहती हैं और एक कोठरी में एक चूल्हा इतना चौड़ा बना रहता जैसी कोठरी की चौड़ाई हो । यह ईंट और मिट्टी का दो तीन फुट ऊंचा आसन बनाया जाता और ऊपर को बराबर रहता है सो जाड़े के दिनों में कङ्गाल लोग आग सुलगाकर उस के ऊपर सोया करते हैं क्योंकि उन के पास ओढ़ने के लिये कपड़ा कम रहता है । कोठरियों की भीतों में ऊपर को दो एक खिड़कियां रहती जिन से ज्योति और पवन पहुंचे । छत बनाने के लिये वे ताड़ के बृक्ष की धड़ को चीरके रखते और इन के ऊपर वृक्ष की डालियां और पत्तियां बिछाते और उन के ऊपर घास और सब के ऊपर मिट्टी घास के संग मिलाई हुई डालते हैं । उन के घरों में केवल दो चार बस्तु पाई जाती हैं अर्थात दो चार मिट्टी की हांडियां और अन्न पीसने के लिये चक्की और सोने के लिये दो चार चटाइयां । बहुत गांव में कबूतरों के रहने के लिये घर छत के ऊपर चौकोन बने रहते हैं जिन में बहुत सी हांडियां रक्खी जाती हैं ऐसा कि कबूतरों के हर एक जोड़े के लिये एक हांडी ।

मिस्री घर।

मिस्र के बहुत से गांव ऐसे स्थानों पर बने हैं जहां तक कि नील नदी का जल चढ़ सकता है। इस लिये वे थोड़े ऊंचे पर बनाये जाते हैं अर्थात जहां पुराने गिरे हुए घरों की डीह हो उस के ऊपर बनाते हैं और गांव के पास छुहारे वा ताड़ के दो चार वृक्ष रहते हैं। यदि गांव में कोई जमीन्दार वा महाशय होवे तो उस का घर पक्की ईंटों का दोमहला बना रहता है परन्तु उन थोड़े लोगों को छोड़ जो विलायती रीति व्यवहारों पर चलते हैं इन घरों में सामग्री बहुत थोड़ी होती हैं सोने की कोठरियों में न खटिया न मेज न चौकी रहती केवल इधर उधर कोई फर्श वा गलीचा वा तकिया पड़ी रहती। बिछौना जिस पर रात को सोते हैं उसे दिन को लपेटके छिपा रखते हैं वरन मिस्र देश में रहने के लिये घर का प्रयोजन बहुत कम है क्योंकि जाड़ा और गरमी वहां बहुत कम है और पानी थोड़ा ही बरसता है सो चाहे कोई बाहर पड़ा रहे तो इस में कुछ बहुत कष्ट नहीं होता।

प्रतिदिन का जीवन वृत्तान्त ।

मिस्री घर का भीतरी भाग ।
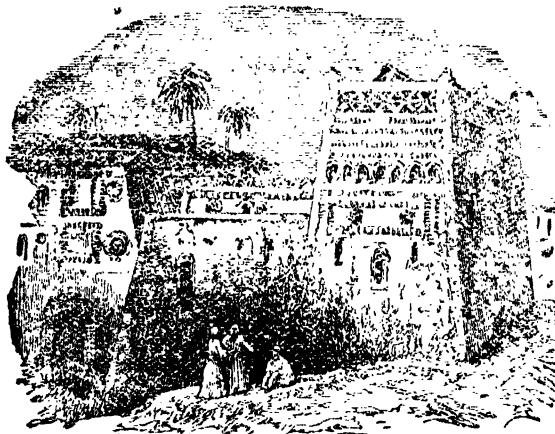
मिस्री शेख का घर ।

मिस्री लोग सांझ को शीघ्र सो जाते हैं इस लिये भोर को उठा करते हैं । जो मुसलमान हैं सो पौ फटते ही सवेरे की निमाज को पढ़ते सो उचित है कि बड़े सवेरे उठके हाथ मुंह धोवें और कपड़ा पहिनें और इतने में उस की पत्नी वा दासी उस के लिये एक प्याला काफ़ी तैयार करती है ।

फिल्ला लोगों का विशेष काम खेतों को सींचना है । वे बहुधा जल को एक हांडी के द्वारा जो कि लकड़ी के एक सिरे पर बंधी रहती है उठाया करते हैं लकड़ी बीच में एक दूसरी लकड़ी पर बंधी रहती और दूसरे सिरे पर मट्टी का बोझ रहता है जिसे कि हिन्दुस्तान में ढेंकी कहते हैं। फारस का भी दस्तूर वहां पाया जाता है अर्थात एक बड़ी पहिया जिस को रहट कहते और जिस में बहुत सी हांडियां बंधी रहती हैं और जब बैल पहिये को घुमाते हैं तब पानी उठाया और किसी नाली में चलाया जाता है । उन दिनों में जब नील नदी में बड़ी बाढ़ आती और जमीन के ऊपर दूर लों फैल जाती है तब किसान के लिये कुछ परिश्रम कम हो जाता है क्योंकि पानी बड़ी नालियों से छोटी में और छोटी नाली से खेत में जाता है और अपने पांव से वह एक नाली को बन्द कर लेता और दूसरी को खोल देता जैसा यहां के खेतों में किया जाता है और अपने खेत में जैसा चाहता तैसा थोड़ा बहुत सींचता है । जब बीज बोया जाता और उगने लगता है तब उस को बचाना

प्रतिदिन के मिस्री कामकाज।

रहट।
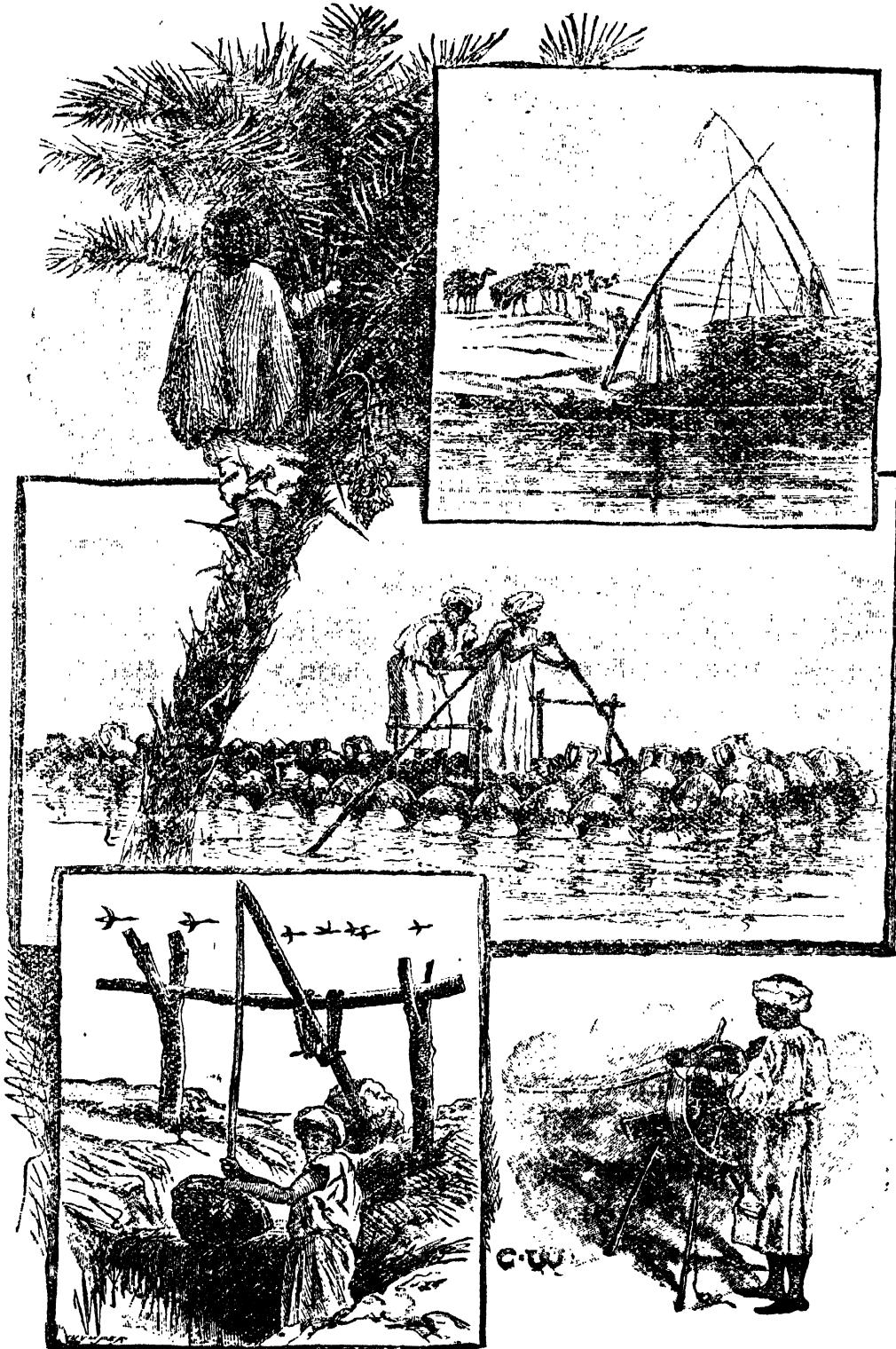
और पशु पक्षी को भगाना पड़ता है परन्तु इस परिश्रम के साथ वह जहां तक हो सके बिश्राम भी करता है। कहीं छाया में पड़ा रहता कहीं गा बजाकर अपने मन को बहलाता कहीं संगियों से बक २ करता है और वह किसी रीति से फुरती नहीं करता। उन मिस्रियों का जो नगरबासी हैं और प्रकार का जीवन है और वह भी बिश्राम के बड़े चाहनेहारे हैं। किसी ने एक नगरबासी के दस्तूरों का यह बर्णन किया है कि सवेरे उठके वह अपने धर्म्म के शिक्षानुसार स्नान करता और तब प्रातःकाल की प्रार्थना करता है तब एक प्याला काफी पीकर हुक्का पीने लगता है तब हाजरी के लिये जो कुछ कल के भोजन से बचा हो सो खाता अथवा कुछ रोटियां दूध के साथ खाता अथवा यह न मिले तो बाजार से वही बस्तु मंगवाता जो मिस्रियों का प्यारा भोजन है अर्थात तली लोबिया तिस के पीछे दिन के कामकाज में हाथ लगाकर बेचता मोल लेता बनाता बनवाता चलता फिरता जैसा काम हो पर सदा इन सब में बड़ा धीर्य्य धरता है मानो हर काम में कहता रहता कि कल करेंगे यदि ईश्वर की इच्छा हो। चाहे काम भारी और जरूरी हो तौभी उस के बीच में ठहरके भाई के साथ हुक्का वा काफी पियेगा। कभी २ जब काम नहीं मिलता तब भी घबराता नहीं पर मित्र परोसी के द्वार पर चलता फिरता है इस भरोसे से कि ईश्वर दयालु है और परोसी मुझ को भूखों मरते देखकर दया करेंगे। जब दो पहर

की प्रार्थना के लिये बुलाहट हो तो प्रार्थना कर घर जाता है और दो पहर की रोटी खाकर सो जाता है। गरमी के दिन में कुछ देर लों शयन करता और फिर जागके स्नान और प्रार्थना करता है और काफ़ी पीता है जैसा कि सवेरे कामकाज के लिये तैयार है परन्तु उठने में सांझ हो जाती है और सांझ की प्रार्थना की बुलाहट मसजिद से सुनाई देती है तब कारीगर अपने हथियारों को इकट्ठा करके बान्धता और विद्यार्थी और लेखक और पंडित अपने पुस्तकों को बन्द करते और प्रार्थना करके घर जाते हैं इतने में सांझ का खाना तैयार किया जाता है। खाने के पीछे अपने घर के बाहर बिश्राम करते अथवा परोसियों के साथ जा मिलते क्योंकि उस देश में न पंडित न मूर्ख किसी प्रकार के काम को रात में करने चाहते हैं।

मिस्रियों के बालकों का वृत्तान्त।

ऊपर वर्णन हुआ कि मिस्री अपने बालकों को बहुत ही मैले कुचैले रखते हैं जिस में बुरी दृष्टि से उन को किसी प्रकार की हानि न पहुंचे। जब लड़का पांच छः बरस का हो जाता है तब उस का खतना करवाते हैं और उस्से पहिले यदि हो सके तो उसे धूमधाम से नगर के गली कूचे में फिराते हैं। व्यय से बचने के लिये यदि हो सके तो लड़का और उस के संगी किसी बिवाह के बरातियों के संग मिल जाते हैं जिन के आगे २ चलते। लड़का घोड़े पर सवार कराया जाता है और लड़की के से कपड़े पहिनता है। यह कपड़े किसी मित्र से उधार लिये जाते हैं और लड़के के लिये बहुधा बहुत बड़े ठहरते हैं लड़का लाल पगड़ी पहिने रहता है।

अगले चित्र में मिस्री लड़कों का एक विशेष खेल दिखाई देता है। वे चार २ छोटी लकड़ियां हाथ में लेते जिन में एक ओर लाल और एक ओर काला रंग है तब इन को भूमि पर डालकर रंगों का हिसाब करते हैं।

माता पिता आप अपने बालकों को बहुत थोड़ी शिक्षा देते हैं क्योंकि समझते हैं कि यह स्कूल के शिक्षकों का काम है हां थोड़ा बहुत अपने महम्मदी धर्म्म की बातें सिखाते हैं अर्थात पहिले उसे कलमा पढ़ने को सिखाते कि ईश्वर एक है और महम्मद उस का रसूल है और वे सिखाये जाते हैं कि अपने धर्म्म में फूलकर समस्त और धर्म्मवालों को तुच्छ जानें क्योंकि इस बात में लड़के लोग अपने बड़ों

की लीक पर चलते हैं बरन कभी २ लड़कों को ऐसी प्रार्थना सिखाई जाती है कि हे ईश्वर मसीहियों को स्राप दे और जो कुछ उन का है सो हमहीं लोगों

मिस्री बालकों का एक खेल ।

को दिला । सो कुछ आश्चर्य्य नहीं कि ऐसी शिक्षा पाकर उन में प्रीति के लक्षण कम दिखाई दें ।

जब लड़का पाठशाले में भेजा जाता है तो वह जमीन पर शिक्षक के साम्हने बैठा करता है और उस के हाथ में एक तख्ती रहती अथवा कुरान का कोई भाग रिहल पर उस के आगे रक्खा रहता । दस्तूर है कि सब लड़के चिल्ला २ कर और अपनी देहों को हिला डुलाकर पाठ पढ़ते हैं जैसा हिन्दू लड़कों की रीति है । थोड़े शिक्षक ऐसे हैं जो लड़कों को लिखना भी सिखाते हैं । यह दूसरे आदमी का काम है जो बाजार में सौदा तौलता है । वह उन लड़कों को जो चाहते हैं लिखना और गणित विद्या पढ़ाता है । ज्यों ज्यों लड़के सीखते जाते हैं त्यों २ पिता शिक्षक को कुछ देता जाता है ।

लड़कियां पाठशालों में कम भेजी जाती हैं और ऐसी मिस्री लड़कियां थोड़ी हैं जो लिखना पढ़ना जानती हैं और रईस लोगों में भी यही दशा है बरन मिस्री स्त्रियां ऐसी कम हैं जो अपने नमाज पढ़ने को जानती हैं । कभी २ धनवान
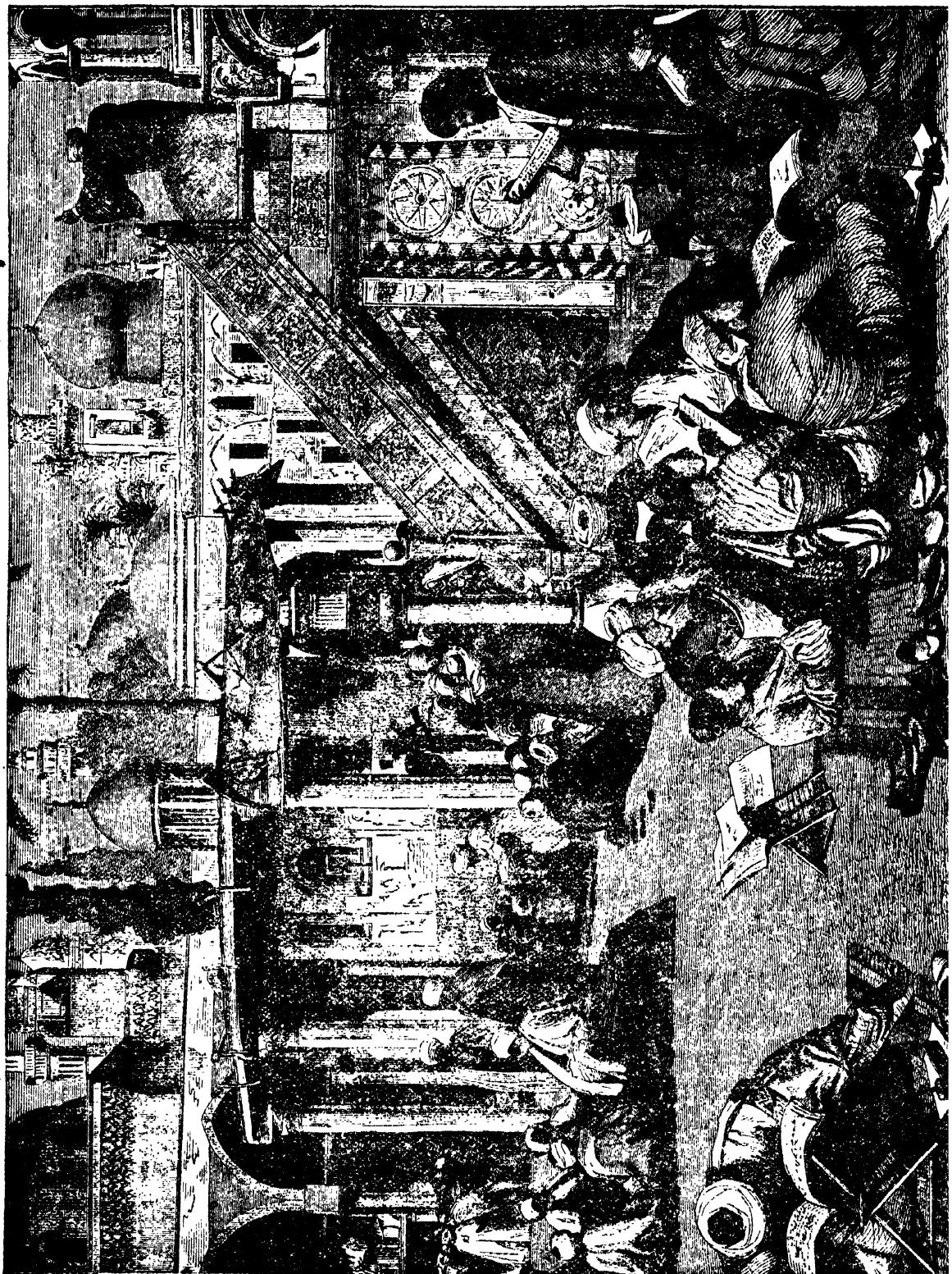
लोग जो अपनी लड़कियों को और शिक्षा देने नहीं चाहते हैं तो इतना करते हैं कि किसी पढ़ी स्त्री को पैसा देते जो जनाना में आकर कुरान के दो चार सूरे कहने को अथवा दो चार निमाज पढ़ने को सिखाती हैं परन्तु मिस्र में कितने ऐसे पाठशाले हैं जहां लड़कियों को सिलाई करना और बूटा काढ़ना सिखाया जाता है। अलखैह्र में अलअज़हार नाम महम्मदियों का सब से प्रसिद्ध कालिज है और जो लड़के मुल्ला होने अथवा किसी प्रसिद्ध विद्या को पढ़ने चाहते हैं सो बहुधा उस में जाके पढ़ते हैं। उस में एक हजार से ३००० लों लड़के पढ़ते हैं बरन दूर देशों से वहां पढ़ने के लिये आया करते हैं। कालिज का गृह एक चौकोन आंगन की चारों ओर बना रहता है। उस में लड़के फीस नहीं देते क्योंकि उन में बहुधा कंगाल हैं बरन वे जो दूर से आते रोटी के लिये कुछ पैसे भी प्राप्त करते हैं। उस में जो शिक्षक हैं संत ही सिखाते हैं। कितनों के मित्र परोसी उन्हें पाला करते हैं और यदि यह भी न मिले अथवा उन पास कुछ अपना धन न हो तो वे इधर उधर धनवानों के घरों में पढ़ाते हैं अथवा पुस्तकों की नकल करने से रोटी कमाते हैं। वह बस्तु जो इस कालिज में पढ़ाई जाती है सो वही है कि जिस से मुसलमान धर्म्म को अधिक लाभ पहुंचे अर्थात लोग उस के सुनाने के लिये अधिक तैयार किये जाते अर्थात व्याकरण अलंकारविद्या तर्कविद्या कुरान का ज्ञान और देश की व्यवस्था का ज्ञान। कालिज में रुपये रखे रहते हैं कि जिस से अन्धे लड़के कुरान के सुनानेवाले अर्थात हाफिज बन्ने के लिये सिखाये जांय। यह लोग उस धर्म्म के लिये लड़ने-हारे प्रसिद्ध हैं। पिछले पृष्ठ में इस कालिज का चित्र है।

ब्याह के दस्तूरों का वृत्तान्त।

मिस्री लोग बहुधा मुसलमान होते हैं सो बिवाह की रीतें उस धर्म्म के अनु-सार किई जाती हैं। लड़कियां बहुधा १२ वा १३ बरस की होकर बिवाह दिई जाती हैं। ऐसी स्त्रियां हैं जिन का यह काम है कि घर २ फिरकर बिवाह का बन्दोबस्त करती हैं। जब तक लड़की सयानी न हो जाये तब लों माता पिता उस की इच्छा बिना उसे ब्याह देते हैं परन्तु जब बड़ी हुई तो उस्से पूछना पड़ता है और वह कभी अपने लिये बर चुन लेती है। हर एक लड़की के संग स्त्रीधन देना पड़ता है और बहुधा यह दस्तूर है कि स्त्रीधन की दो तिहाई

बिवाह के संग दिई जाती है और एक तिहाई को रख छोड़ते जिस्तें स्त्री को उस समय मिले यदि पीछे बिधवा हो जाये अथवा पति उसे छोड़े । तो जैसा

मिस्री स्त्रियों का बुरका ।

हिन्दुस्तान में तैसा मिस्र में भी बिवाह में बहुत अनुचित धूमधाम किई जाती है और लोग इतने रुपयों को उड़ाते कि जीवन भर की बन्धुआई हो जाती है । जब लों ब्याह का दिन न आवे तब लों बर कन्या को नहीं देखता । यदि देखके प्रसन्न हो तो उन स्त्रियों से जो बाहर खड़ी हैं सैन करता और तब वे आनन्द से चिल्लाने लगती हैं । थोड़े ऐसे हैं जो कन्या को देखकर ब्याह से इनकार करते हैं परन्तु कभी २ बिवाह करके दस बीस दिन पीछे वह अपनी पत्नी को निकाल देता है । महम्मदी व्यवस्था के अनुसार पत्नी को त्याग देना बहुत सहज बात है । उस व्यवस्था के अनुसार पुरुष चार पत्नियों को रख सकता है परन्तु मिस्री बहुधा केवल एक को रखते हैं पर हां जब जी चाहता तब इस एक को त्याग सकता और उस की सन्ती में दूसरी को ले सकता है । जब इच्छा हो तब अपनी पत्नी से केवल इतना कहे कि तू त्यागी गई तब बस चाहे कारण हो वा न हो उसे अपने पिता के घर लौटना पड़ता है । स्त्रियों के सारे कष्टों में सब से भारी कष्ट यह है कि चाहे निरपराध हो तौभी अचानक घर से दूर किई जा सकती और यदि पिता के घर में न जा सकती तो कभी भूखों मरती है । पति दो बार इस रीति से उस को त्याग सकता और उसे फिर ले सकता है परन्तु तीसरी बार उस का फिर लेना बर्जित है । हां जब वह स्त्री किसी दूसरे के संग ब्याही जाये और उस्से त्यागी जाये तब पीछे पहिले पति के पास लौट सकती है । कभी २ जब पति का क्रोध ठंढा होता और अपनी पत्नी को तीसरी बार बुलाने चाहता है तो यह बहाना

करता है कि किसी मित्र से कहता है कि तुम उस स्त्री से झूठमूठ ब्याह करो और उसी दिन उस को त्याग दो जिसतें मैं उसे फिर ले सकूं ।

हर एक ज्ञानवान यह जान सकेगा कि इस स्त्री त्यागने की बुरी रीति से मिस्र देश में कैसी बुरी दशा हो जाती है । मिस्र में ऐसे पुरुष मिलेंगे जो दस बरस के बीच में २० वा ३० स्त्रियों के संग बिवाह कर चुके हैं और ऐसी स्त्रियां भी मिलतीं जो अब लों बुढ़िया न हुईं और दस बीस पुरुषों को बिवाह चुकी हैं । यह दस्तूर है कि जब बिधवा अथवा त्यागी हुई स्त्री ब्याही जाती है तो उस में कुछ धूमधाम वा रीति ब्योहार नहीं है केवल वह उस पुरुष से कहती जिस पुरुष से ब्याह करने चाहती है कि मैं अपने को तुझे देती हूं । जब इस प्रकार का बिवाह किया जाता है तब स्त्रीधन की केवल एक तिहाई उस के संग देना पड़ता है ।

दफनाने की रीतों का वर्णन ।

लोथ को कबर पास पहुंचाना ।

मिस्र में जब कोई महम्मदी यह सोचता है कि अब मेरा मरणकाल आ गया है तो यह चाहता कि मेरा दरस परस किया जाय जैसा कि नमाज पढ़ने से पहिले किया जाता है जिसतें वह पवित्र होके मरे तब उस का सिरहाना मक्का नगर की ओर रक्खा जाता है। जब मर चुकता तब घर की स्त्रियां बड़े जोर से यों चिल्लाने लगतीं कि हे मेरे प्यारे हे मेरे स्वामी हे मेरे सिंह हे मेरे ऊंट इत्यादि और इस मातम को सुनकर परोस की स्त्रियां भी यों चिल्लाने लगती हैं। न केवल यह परन्तु ऐसी बिलाप करनेहारी स्त्री हैं जो इस में सहायता देके रोटी कमाती हैं। वे ढोल बजा २ कर उस मरे हुए जन के गुण गातीं कि कैसा सुन्दर कैसा दाता था कैसा धर्म्मी था इत्यादि। जब लोथ दफनाने के लिये उठाई जाती है तब परोसी दो २ करके क्रम २ से संग चलते हैं। पहिले छः आदमी बहुधा अन्धे होते हैं जो कलमा पढ़ पढ़के जाते हैं। मृतक के मित्र क्रम २ करके रत्थी को उठाया करते हैं और उस के पीछे बिलाप करनेहारियां चिल्लाती हुई चली जाती हैं और दो तीन झंडे आदि लिपटे हुए संग लिये जाते हैं। लोग मानते हैं कि मुनकिर नकीर नाम दो स्वर्गदूत मृतकों के जांचने के लिये कबरों पास आते और इस लिये उन का यह दस्तूर है कि कबर को पक्की ईंटों से और ऊपर गोल सा बनाते हैं इस अर्थ से कि मृतक दूत से बातें करने के लिये बैठ सकेगा। वे लोथ को इस रीति से रखते हैं जिसतें मुख मक्का नगर की ओर रहे। यदि मृतक धनवान हो तो दस्तूर है कि रोटी लदे हुए दो तीन ऊंटों को कबर पास ले आते हैं और कंगालों की भीड़ को खिलाते हैं। कभी इस से बढ़कर एक भैंस घात किई जाती और उस का मांस मातम करनेहारों को बांटा जाता है।

धर्म्म के बर्णन में।

जैसा ऊपर बर्णित हुआ मिस्री लोग बहुत करके मुसलमान हैं। वे आप ही उस धर्म्म को इसलाम अर्थात भक्त नाम देते हैं। बिश्वास करने को ईमान कहते और धर्म्माचार को दीन कहते हैं। बिश्वास की बिशेष टेक कलिमा कहलाता है जिस में दो भारी बातें हैं कि ईश्वर एक है और महम्मद उस का रसूल। वे मानते हैं कि पांच बड़े नबी हो चुके हैं जिन में से एक २ को व्यवस्था ईश्वर से दिई गई थी। यह पांचों आदम नूह अबिरहाम मूसा और ईसा हैं। उन

का शास्त्र कुरान नाम से प्रसिद्ध है । धर्म्म कार्य्य उन में चार अधिक प्रसिद्ध हैं प्रार्थना करना कंगालों को दान देना स्थापित समयों पर उपवास करना और पावन स्थानों में तीर्थ अर्थात हज्ज करना ।

नमाज पढ़ने के चार रूप ।

नमाज अर्थात प्रार्थना इस रीति से करते हैं कि पहिले बांह को नंगा करके धो लेते हैं तब हाथ को तीन बार धोते तब मुंह को तीन बार इस रीति से धोते कि उस में हाथ से पानी डाला करते हैं तब दहिने हाथ से नथुनों में पानी डालते हैं सूंघकर उसे नाक के ऊपर में पहुंचा देते हैं और तब पानी को दूर फेंकते और बायें हाथ से नथुनों को दबा देते हैं यह तीन बार किया जाता। फिर अन्त में मुंह को तीन बार धोते हैं और सब के पीछे वह अपने पांव को धोते

हैं। शुद्ध होकर वह पहिले स्वर्ग की ओर और फिर पृथिवी की ओर अपनी साक्षी देते हैं कि ईश्वर को छोड़ कोई दूसरा नहीं जिस को पूजना उचित है और कि महम्मद उस का रसूल है। यह साक्षी देना कलिमा पढ़ना कहलाता है। प्रार्थना करते ही कितने प्रकार की बिन्ती किई जातीं और ईश्वर की कितने प्रकार की स्तुति किई जाती हैं और प्रार्थना करने में कितने प्रकार के रूप भी स्थापन किये जाते हैं कि इस बात के सुनाने में खड़ा होना और इस बात को कहके घुटनों पर बैठना और इस बात को कहके माथे से जमीन को रगड़ना है। जब जमीन के छूने में मुंह पर कुछ धूल लगे तब उस को दूर नहीं करेंगे बरन आदर का चिन्ह समझेंगे जैसा हिन्दू तिलक को समझते हैं। उन में नमाज पांचों समय अर्थात सूर्य्य के उदय होते ही और सांझ और भोर को और दो पहर दिन और दो पहर के पीछे मानते हैं। जब यह समय आता तो मसजिद का सेवक ऊपर चढ़के पुकारता और नमाजियों को चितौनी देता है। शुक्र के दिन उन लोगों की विशेष सभा मसजिद में होती है परन्तु उन का यह दस्तूर नहीं है कि उस दिन को काम से छुट्टी ले लें केवल उस समय को छोड़ जब मसजिद में जाना है और समयों पर उस दिन जैसा और दिनों पर तैसा कामकाज करेंगे। खैरु नगर में अनेक बड़ी २ मसजिदें पाई जाती हैं। वे बहुधा पत्थर की बनी हैं जिस में मिमबर मक्का की ओर बना रहता है। इस की ओर नमाजी खड़ा होके नमाज पढ़ता है। बहुत सी मसजिदें दो रंग के पत्थरों से अर्थात लाल और श्वेत से बनी हुई हैं। भीतर

अलखैरु नगर की एक मसजिद का भीतरी भाग।

जमीन पर चटाइयां बिछाई जातीं जिस पर छोटे बड़े लोग एक संग नमाज

पड़ते हैं । दान देना दो प्रकार का होता है अर्थात ऐसे दान हैं जिन को देना पड़ता है और ऐसे हैं जिन को वही देता जो चाहता है ।

महम्मदियों का तीसरा धर्म्मकार्य्य उपवास करना है । रमजान के महीने में उन को आज्ञा है कि प्रतिदिन सवेरे से सांझ लों उपवास करें । आज्ञा है कि न खावें न पानी पीवें न तमाखू पीवें न सुगन्ध सूंघें यहां लों कि मुंह का थूक भी जान बूझके निगल न जावें । कभी २ जब रमजान का महीना गरमी के समय में पड़ता है तो उन लोगों को उस्से अत्यन्त क्लेश पहुंचता है ।

दोसेह की रीति ।

चौथा धर्म्मकार्य्य हज अर्थात तीर्थ करना है हर एक महम्मदी को उचित है

कि जीवन में कम से कम एक बार मक्का नगर और अराफात पर्ब्बत को देख आवें। यदि वह रोगी होके निर्बल है तो हज करना उस्से मांगा न जायेगा और यदि वह ऐसा कंगाल हो कि यात्रा का व्यय न उठा सके तो वह क्षमा किया जाता है। इस चित्र में दोसेह अर्थात रगेदने का दस्तूर दिखाया जाता है। यह दर्बेशों अर्थात महम्मदी योगियों की एक रीति है जिस को वे बड़े आश्चर्य्य कर्म्म बताते हैं कि बहुत से दर्बेश एक संग सड़क पर समीप २ मुंह के बल लेट जाते हैं मानो उन की पीठों से नई सड़क बन जाती है जिस पर शेखजी घोड़े पर सवार हो चले जांय और वे कहते हैं कि हमारा पुण्य प्रताप ऐसा प्रबल है कि घोड़े के पांव से जब हमारे ऊपर चलता है तो हम को चोट नहीं लगती और लेट २ कर वे सिर को अपने बांहों पर संभालते हैं अल्लाह २ पुकारके चिल्लाते हैं तब दो चार दर्बेश ढोल बजाते हुए उन की पीठों पर दौड़ते हैं। घोड़ा पहिले आदमी की पीठ पर पांव डालने नहीं चाहता परन्तु दो साईस उस के सिर को पकड़के लिये चलते हैं और देखनेहारे बहुत गुल मचाके चिल्लाते रहते हैं। हर एक दर्बेश जब घोड़ा निकल चुकता तब उठके शेखजी के पीछे हो लेता है। यद्यपि यह लोग कहते कि हमारा इतना पुण्य प्रताप है कि हम को चोट नहीं लगती तौभी कभी २ देखने में आता कि इस कुरीति के मान्ने में कोई जोगी भारी चोट खाता बरन घात भी किया जाता है।

मिस्रियों के मिथ्या बिचारों का वृत्तान्त।

संसार भर में यह बात देखने में आती कि जो लोग बहुत अज्ञान हैं उन में मिथ्या बिचार भी बहुत हैं। इसी रीति से मिस्री भी अज्ञान होकर नाना प्रकार की झूठ बातों को माना करते हैं। अगिली तसबीर में हम देखते हैं कि कितनी स्त्रियां एक ज्योतिषी से कुछ पूछने आई हैं। कोई स्त्री उस से यह पूछती है कि मेरा पति जो बिदेश गया है कब लौट आयेगा अथवा मेरा बालक जो रोगी है कब भला चंगा होगा अथवा क्या मेरे पुत्र का बिवाह जो अब हुआ है सफल होगा वा नहीं इत्यादि। ज्योतिषी लोग ऐसी बातों के बूझने में नाना प्रकार के बहानों को काम में लाते हैं। कोई तारों को देखता है कोई पक्षियों के उड़ने को देखता है इत्यादि। मिस्र में उन की एक रीति यह बहुत प्रचलित है कि कितनी कौड़ियां हाथ में लेकर कुछ पैसे बर्तन के टुकड़े आदि बस्तुन के साथ
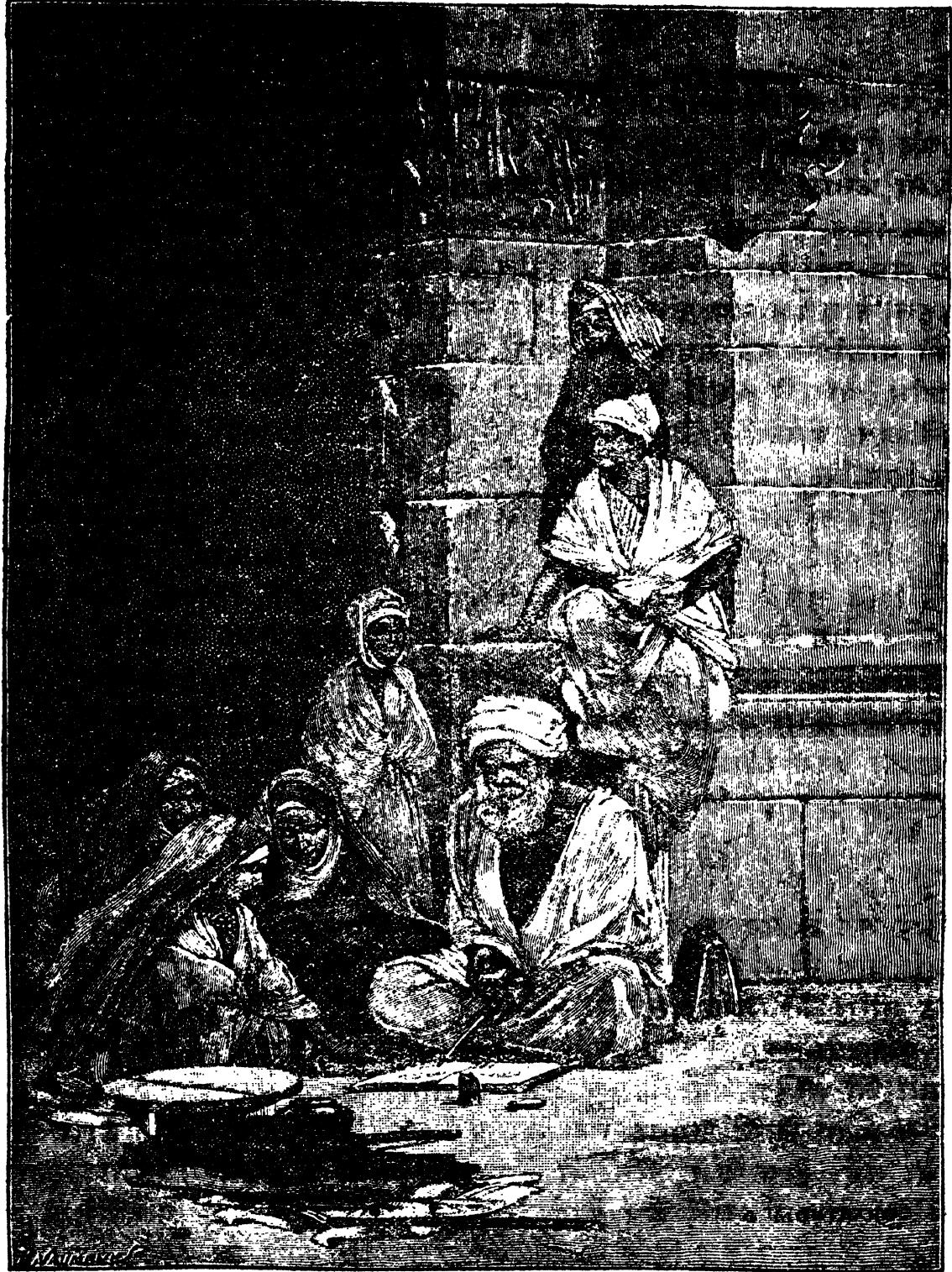
स्त्रियों का ज्योतिषी के पास आना ।

जमीन पर डाला करते हैं और जैसा यह वस्तु गिरतीं तैसी दशा बताते हैं जैसा कि सब से बड़ी कौड़ी पूछनेहारे का लक्षण है और सब कौड़ी आदि वस्तु उस के संग हैं अथवा बिरुद्ध जैसा कि हिसाब किया जाता कि कोई कुभाग्य कोई सुभाग्य का लक्षण कोई होनहार बात समीप है वा दूर है इत्यादि।

मिस्री लोग लिखे हुए मंत्रों पर अद्भुत रीति से भरोसा रखते हैं। पाठशालों के शिक्षक मंत्र के लिखनेहारे बहुधा होते हैं यह नहीं कि उन्हों ने इस की कोई विद्या सीखी केवल इतनी बात है कि कितने प्रकार के मंत्र उन में प्रचलित हैं और वे समझते हैं कि उन का बड़ा प्रताप है सो लिखके वे अनपढ़े लोगों के हाथ बेचते हैं। इन मंत्रों में कहीं २ कुरान के लिखे हुए पद अथवा ईश्वर के दो चार नाम वा साधू संतों के नाम और कितने गिन्ती के अक्षर और ऐसी बातें लिखी जाती हैं चाहे उन में कुछ अर्थ हो वा न हो तौभी लोग सोचते हैं कि इन से हम को बड़ा लाभ पहुंचेगा और इन के लिये आनन्द से पैसा देते हैं। एक मंत्र बहुत प्रसिद्ध है कि परमेश्वर के निन्नानवे नामों को एक कागज पर लिखते हैं और घर में रखते जिस्से घर पर बिपत्ति न पड़े न कोई बुरी दृष्टि लगाने से बालकों पर कष्ट भेजे न घरवालों पर कोई रोग हो जाये। दूसरा मंत्र यह है कि उन वस्तुओं के नाम को जो महम्मद के मरने पर छोड़ी गई थीं एक कागज पर लिखते हैं और इस्से अद्भुत प्रकार का बचाव बताते हैं। जो किसी की प्रीति चाहता है अथवा किसी पर प्रबल होने चाहता है तो कुरान के बचनों को कागज पर लिखके और तांबे में बंद करके उसे बांह पर बांधते वा गले में लटकाते हैं और सोचते हैं कि इस्से हमारा अर्थ सिद्ध होगा। बहुतेरे मिस्री पुरुष स्त्री लड़केवाले मिलेंगे जो ऐसे मंत्रों को पहिना करते हैं।

खैरू नगर में यह दस्तूर है कि कटरा बृक्ष को हर एक नये घर के द्वार पर लटका देते हैं अथवा जब घर में नया द्वार कटे उस पर लटकाते हैं और सोचते हैं कि इस्से घर भी देर लों बना रहेगा और घरवाले उस में सुख से रहा करेंगे। स्त्रियां भी कहती हैं कि जब यह बृक्ष किसी के घर पर टंगा है तो महम्मद आप उस घर में आयेगा।

फिर मिस्री शुभ अशुभ दिनों के बड़े मान्नेहारे हैं। इतवार अशुभ दिन है उस में कोई भारी कार्य्य नहीं करते। सोमबार को कोई अच्छा और कोई बुरा ठहराता है। मंगल बुरा है बुद्ध बीचवाला अर्थात न अच्छा न बुरा बृस्पतिवार सुभाग्य का दिन है और शुक्र बहुत ही शुभ दिन और शनीचर बहुत ही अशुभ दिन है यदि कोई

शनीचर को यात्रा करने के लिये सिधारे तो बिपत्ति पड़ेगी। फिर शनीचर को न सिर मुंड़ाना न नाखून काटना चाहिये इन से बुराई होगी। एक बहुत बुरा दिन साल में होता है जिस में बहुत मिस्री लोग किसी रीति से घर के बाहर नहीं निकलते न हो कि दुःख उन पर पड़े मानो उस दिन शैतान का मनुष्य पर अधिक जोर चलता है।

मिस्री लोगों में धर्म्मी होना एक आदर की बात समझी जाती है अर्थात धर्म्मी होना एक रीति से भले मनुष्य होना ठहरता है परन्तु यह नहीं कि इस धर्म्म के साथ कुछ बोलचाल की शुद्धता होये। ऐसे लोग जब धर्म्म की बातों की चर्चा करते हैं तो उस में गंदी बातों की चर्चा भी मिला देते हैं और यह न देखेंगे कि इन दो बातों में बड़ी विपरीतता है। जो लोग बुरे गीतों के गानेहारे हैं उन में ईश्वर का नाम मिला देंगे और न समझेंगे कि हम से बड़ा अनुचित काम हुआ। एक कारण इस का यह है कि वे लोग निरर्थक ईश्वर के नाम को अपनी बातचीत में बहुत लाया करते हैं जैसा कोई अपने मित्र को कोई फल देता है तो कहता है कि अल्लाह करीम के नाम में लीजिये। मिस्री लोग चाहते हैं कि जो बुराई चाहें सो करें पर केवल उस के संग यह कहें कि ईश्वर से क्षमा मांगता हूं। जैसा कोई मिस्री निर्लज्ज हो बड़ा झूठ बोलेगा तो उस के संग यह भी कहेगा कि ईश्वर से क्षमा मांगता हूं। मिस्री लोग बहुत दया करते हैं भिखारियों को विशेषकर अन्धों को बहुत दिया करते हैं केवल इतना नहीं परन्तु बिल्लियों और कुत्तों के पालने के लिये बहुत कुछ दिया करते। जो आप कंगाल भी हैं तो बाजारों में जाके वे स्वामी के कुत्ता बिल्ली को खिला देंगे और उन के पीने के लिये बर्त्तनों को जल से भर देंगे। एक नगर में कोतवाल साहिब नगर की सब बिल्लियों को एक स्थान में इकट्ठा करके खिलाया करता है। एक तिकोण रूप यंत्र मंत्र बहुत बनाया जाता जो बालकों की टोपी के आगे और घोड़ों की आंखों के ऊपर टंगा रहता है यह बुरी दृष्टि से बचाने के लिये विशेष उपाय समझा जाता है। मिस्री लोग जैसे हिन्दू तैसे टोना से बहुत डरते हैं और उस्से बचने के लिये नाना प्रकार के उपाय करते हैं। यदि कोई किसी कि बस्तु देखकर उस से प्रसन्न हो और कहे कि क्या ही अच्छी वा क्या ही सुन्दर तो ऐसा कहना बहुत बुरा लगता है। उस बस्तु का स्वामी बिस्मित हो पुकारेगा कि धन्य नबी के नाम को। यदि कहनेवाला मान ले कि हां ईश्वर कृपा करे तो उस के बचन से कुछ हानि न होगी।

एक प्रकार का यंत्र जिस से मिस्री बहुत प्रसन्न होते हैं यह है कि एक प्याला लेकर वे सियाही से उस के भीतर कोई बचन लिख देते हैं और तब पानी डालकर उस लिखे हुए बचन को मिटा देते और तब उस पानी को कि जिस में सियाही गई पी लेते हैं। वे समझते हैं कि यदि वह जो रोगी है ऐसा पानी पीये तो भला चंगा हो जायेगा और यह भी चाहे मुसलमान हो वा न हो परन्तु इस होड़ पर कि उस यंत्र पर उस का पक्का भरोसा होवे। वह बचन जो बहुत करके पीने के लिये लिखे जाते हैं सो ऐसे हैं जैसा कुरान में लिखा है कि इस में मनुष्य के लिये औषध है या यह कि वह अपने लोगों को जो बिश्वासी हैं भला चंगा करेगा। जब कि किसी घर में खटमल बहुत हैं तो उन के मिटाने के लिये कुरान से यही पद लिखते हैं कि क्या तू ने उन का बिचार नहीं किया जो मृत्यु के डर से अपने २ घर को छोड़ गये हैं कि हजारों ऐसे हुए और ईश्वर ने उन्हें कहा कि मरो मरो मरो। मरो शब्द इस रीति से तीन बार लिखा जाता है। इस मंत्र को तीन अलग कागजों पर लिखते और कोठरी की भीतों पर अर्थात उस एक को छोड़कर कि जिस में द्वार है लटका देते हैं इस से कहते हैं कि समस्त खटमल उस स्थान को छोड़कर चले जायेंगे। और भी बस्तु हैं जिन से लोगों की समझ में कितना लाभ पहुंचता जितना यंत्रों से जैसा थोड़ी सी धूल जो महम्मद की कबर से लाई जाती है वा जमजम नाम मक्के के कुए से पानी जो लाया जाता है अथवा उस कपड़े के छोटे टुकड़े जो काबा अर्थात मक्का के विशेष मन्दिर के ऊपर डाला जाता है। जब कोई मुसलमान मर जाये तो यदि हो सके तो परोसी लोग मृतक के कपड़ों पर जमजम का जल छिड़केंगे। वे सोचते हैं कि यदि कोई अपने दांत के ब्रुश को जमजम के जल में भिगो देगा तो उसे दांत का दुःख कभी न होगा।

मिस्रियों के प्रतिदिन का जीवन।

मिस्र में गदहे बड़े और अच्छे होते हैं और घोड़ों से अधिक काम में लाये जाते हैं। वे भार लादने के काम में और सवारी के काम में भी बहुत आते हैं। लड़के जो उन्हें हांकते सो ढिठाई और चतुराई में प्रसिद्ध हैं। वे थोड़ा २ अंगरेजी बोलने को सिखाये जाते हैं और जब चाहते कि कोई अंगरेज सवार हो तो अपने गदहे को अंगरेजी नाम देते और साहिब के पीछे लगे हुए चिल्लाते हैं कि हमारा गदहा लीजिये वह अंगरेजी बोलना जानता है वह गुडमारनिंग करता

है। भले मनुष्य जो घरवाले हैं सो मिस्रियों में शेख कहलाते हैं। जो महम्मद के वंश के होते सो सय्यद कहलाते और हरे रंग की पगड़ियां पहिनते हैं। जब

मिस्री फिल्ला और गदहा।

कोई हज करके लौट आता है तो उस समय से हाजी नाम से प्रसिद्ध होता है। घरों में अच्छे लोग स्त्रियों के लिये जनाना की कोठरियां बनवाते हैं और इन में घर के स्वामी और दो चार नातेदार को छोड़ कोई पुरुष प्रवेश नहीं करने पाता है। इन जनानी कोठरियों में पत्नी को छोड़ बालक और दासियां रहती हैं जहां श्वेत और हबशी दासियां रक्खी जातीं जो बहुत करके स्वामी की उपपत्नियां होती हैं। जो काली दासी हैं सो बहुधा भोजन पकाती और खिलाती हैं। जब भले मनुष्य की स्त्रियां कहीं चलने के लिये घर से निकलतीं तो बहुधा गधे पर सवार होके जाती हैं। उस पर चौड़ा जीन बान्धा जाता और उस के ऊपर बिछौना बिछाया

जाता जिस पर स्त्रियां बैठती हैं। यदि हो सके तो जनाना की समस्त स्त्रियां एक संग निकलतीं और गधे जिन पर सवार होतीं एक दूसरे के पीछे चलते हैं। बड़े घर की स्त्रियां जब बाहर निकलतीं तो पैदल चलने नहीं चाहतीं और यदि चलतीं भी तो उन के लिये चलना कठिन होता है क्योंकि सिलपट जो वे पहिनतीं सो चलने में पांव से निकल जाती हैं। यदि वे दूकान से कुछ लेने चाहतीं तो आप लेने न जायेंगी परन्तु सेवक के द्वारा से मंगवावेंगी।

मिस्री स्त्री और गदहा।

मिस्र की दक्खिन ओर सुदान नाम एक देश है जहां से पूर्वकाल में बहुत से बेचारे दास दासी लाये जाते थे। आजकल विशेषकर अंगरेजों से दासों का पकड़ना और बेंचना रोका गया है। विशेषकर दासियों का वहां से लाना और मिस्र में बेचना बर्जित किया गया है। जब यह व्यवस्था पहिले सुनाई गई तब मिस्री उसे बहुत तोड़ते थे और हर साल बहुत सी स्त्रियां चुपके से बेंचते थे परन्तु अब कई साल से अंगरेजों का अधिकार मिस्र में बढ़ गया है और उन्हों ने कितने रईसों को दण्ड दिलवाया है जो दासियों के मोल लेनेहारे थे सो लोग अब ऐसे काम करने से बहुत डरते हैं।

मिस्रियों में सलाम अद्भुत रीति से किया जाता है वे होंठ माथा और छाती को छू लेते हैं जिस का अर्थ यह है कि होंठ का बचन सिर का बिचार और दिल का प्यार सब आप के हैं परन्तु जब मिस्री आपस में बातचीत करते हैं तो बहुत ही अनुचित बचन मुंह से निकालते हैं। भले मनुष्यों में भी बुरी बकबक बहुत प्रचलित है और स्त्रियां आपस में बातचीत करके बहुत कुबचन मुंह पर

दास दासी जो बिकने के लिये बटोरे गये ।

लाती हैं और समझती नहीं कि ऐसी मन की मलीनता प्रगट करने से लज्जित होना चाहिये ।

मिस्रियों में धर्म्म का गर्ब बहुत है । वे सोचते हैं कि जगत भर में हम ही ईश्वर के प्यारे लोग हैं और हमारे समान कोई नहीं और लोगों को बेईमान और काफिर और नरक के बच्चे नाम देते हैं बरन जैसा ऊपर लिखा गया छोटे बच्चे भी ऐसे नामों को मुंह से निकालना सीखते हैं यहां लों कि माता पिता भी उन्हें मसीहियों को निरर्थक कोसने और स्राप देने को सिखाते हैं ।

जैसा हिन्दुस्तान में तैसा मिस्र में नाचनेहारियां हैं जो बिना घूंघट बाजारों में नाचती हैं । बिवाहों में यह लोग बहुधा बुलाई जाती हैं । दस्तूर है कि नाना प्रकार के गहनों को पहिना करतीं और मेंहदी से हाथ पांव को लाल करतीं और आंखों को सुरमा से काला करती हैं । जब पुरुषों के आगे किसी घर में नाचतीं तो उन का पहिनावा बहुत ही अनुचित और उन का नाचना बहुत ही

निर्लज्ज है पर उन्हें और भी निर्लज्ज बनाने के लिये नाचते समय उन को बहुत शराब पिलाई जाती है। उन में ऐसी भी हैं जो बहुत सुन्दर हैं और ऐसियों से उस देश का बड़ा बिगाड़ होता है। जैसा हिन्दुस्तान में वैसा वहां भी बहुत से मूर्ख उन से बिगड़ जाते हैं जैसा सुलेमान ने कहा है कि उन का घर नरक का मार्ग है।

काप्त लोगों का वृत्तान्त।

काप्त लोगों का याजक।

काप्त लोग पूर्वकाल के मिस्रियों के बंश से निकले हैं और वे मसीही कहलाते हैं। कहते हैं कि मार्क प्रेरित जिस से मार्क का सुसमाचार लिखा गया सो मिस्र में आया और सिकन्दरिया में उपदेश देता रहा और वहां मूर्तपूजकों से घात किया गया और उस से बहुतेरे लोग मसीह के चेले हुए जिन के बंश से यह काप्त लोग निकले हैं। जब कि सन ई० ६४० में मुसलमान लोगों ने आकर मिस्र

को अपने बश में कर लिया तब से काप्त लोग निपट तंग किये गये हैं यहां लों कि उन में से बहुतेरे अपने मत को छोड़के मुसलमान भी बन गये ।

आजकल मिस्र देश में कुछ ३,00,000 काप्त लोग हैं उन में बहुतेरे सुनार हैं और दूकानों में बहुत से लेखक और हिसाब करनेहारे हैं । उन का पहिनावा मुसलमानों का सा है परन्तु उन का चिन्ह यह है कि बहुधा काली वा नीले रंग की पगड़ी पहिनते हैं उन की स्त्रियां चादर ओढ़ती हैं । पूर्वकाल में काप्त और यहूदी इन दोनों को घोड़े पर सवार होना मिस्र में बर्जित था परन्तु आजकल इस बात की चिन्ता नहीं किई जाती है । जब इब्राहीम पाशा मिस्र का बादशाह था तब दमिशक के मुसलमानों ने उस पास यों कहला भेजा कि आप के देश में बेईमान लोग घोड़ों पर सवारी करते हैं जो बहुत अनुचित है क्योंकि यों करके वे मुसलमानों के ऊपर चढ़ जाते हैं । बादशाह ने उन पास फिर उत्तर भेजा कि यदि मुसलमान मसीहियों से ऊंचे होने चाहते हैं तो ऊंटों पर सवारी करें ।

आजकल काप्तिक भाषा बोली नहीं जाती क्योंकि दसवीं सदी में अरबी भाषा उस की सन्ती में आई परन्तु दस्तूर है कि पुरानी भाषा को उन की सभाओं में आज तक काम में लाते हैं अर्थात उस में धर्म्मपुस्तक में से कुछ पढ़ते और तब उस का अर्थ अरबी भाषा में सुनाते हैं क्योंकि लोग पुरानी को कम समझते हैं । उन में पाठशाले बहुत हैं जिन में लड़के पहिले धर्म्म की बातों को अरबी में और पीछे उन का अर्थ काप्तिक में सीखते हैं । उन में लड़कियां पढ़ाई नहीं जातीं । काप्तिक भाषा यूनानी अक्षरों में लिखी जाती है क्योंकि जब काप्त लोग मसीही हो गये तब यूनानी भाषा को कुछ काम में लाने लगे ।

आजकल के मसीही पादरियों का बर्णन ।

सन ई० १७५0 में जर्मनी के मसीही लोग काप्त लोगों के पास उपदेश देने के लिये पादरी भेजने लगे । उन में से आनतेज नाम एक पादरी था जो खैरू नगर में जा रहा । एक दिन जब वह बाहर टहलता था तब किसी प्रधान के सेवकों ने उसे पकड़ा और कहा कि यदि बहुत कुछ हमें न दोगे तो हम तुम्हें न छोड़ेंगे । जो कुछ साहिब के पास था उन्हों ने सब लिया पर थोड़ा था और वे दुष्ट संतुष्ट न हुए सो यह कहके अपने स्वामी पास ले गये कि साहिब यह एक विलायती जन है जिस से आप बहुत कुछ पा सकते हैं । प्रधान ने यह झूठा

बहाना किया कि यह एक चोर है जिस की खोज में हम बहुत दिन से रहे और बोला उसे गढ़ में ले जाओ मैं पीछे आकर उस का न्याय करूंगा। ऐसी आज्ञा पाके

आनतेज साहिब का पकड़ा जाना।

दुष्ट सेवक बहुत प्रसन्न हुए सो आनतेज साहिब के गले में रस्सी बांधके वे उसे मारते हुए और मुंह पर थूकते हुए ले गये। गढ़ के नीचे एक अंधियारी कोठरी थी जिस में एक भारी लकड़ी थी और जिस में एक जंजीर भी बंधी थी। इस जंजीर में ताला डालके उन्हों ने आनतेज साहिब के गले में लगाया। जब प्रधान गढ़ में आया तब यह लोग जंजीर खोलकर पादरी साहिब को उस के सन्मुख ले आये। प्रधान ने दो बार प्रश्नों को किया तब कहा कि उसे जमीन पर पटक दो। पादरी साहिब ने पूछा कि महाराज मैं ने कौन सी बुराई किई है। तिस पर प्रधान क्रोधित हो बोला कि अरे दुष्ट क्या तू पूछता है कि मैं ने कौन सी बुराई किई। इस को जमीन पर पटको। वह गिराया गया और दोनों पांव में बेड़ियां इस रीति से बांधी गईं कि पांव ऊपर किये गये तब दोनों ओर आदमी खड़े हुए जिन के हाथों में लंबे मोटे चमड़े के चाबुक थे और उस के पांव पर मारने को तैयार हुए। इतने में एक सेवक उस के कान में फुसफुसाके बोला कि काहे के लिये मार खाओगे। प्रधान को २,000 रुपये देओ वह तुझे छोड़ देगा। तब उस ने कहा कि मैं न देऊंगा। तब प्रधान ने कहा कि मारो। जब बहुत मार खाई तब उस से फिर कहा कि प्रधान को ४,000 रुपये देओ तो बचोगे। उस ने कहा कि मैं न दूंगा। तब सेवक लोग और भी जोर से मारने लगे। पहिले पांव को बड़ी चोट लगती थी परन्तु पीछे वे सुन्न हो गये और उन में दुःख कम पहुंचता था।

जब प्रधान ने देखा कि पादरी साहिब रुपये न देगा तब आज्ञा दिई कि उसे अन्धेरी कोठरी में ले जाओ । आध घंटे पीछे आज्ञा आई कि उसे फिर ले आओ । जब प्रधान के सन्मुख आया तब पादरी ने सोचा कि फिर मार खाना होगा परन्तु एक जन वहां खड़ा था जो बहाना करके पादरी साहिब को पहिचानता था और पुकारा कि अरे यह समस्त नगर भर का उत्तम जन है । प्रधान ने कहा कि भला इस को ले जाओ । वह जन उसे घर ले गया और उस के घाओं को धोया और बांधा और उस से २०० रुपये ले लिये । तब पादरी साहिब को उस के घर में पहुंचा दिया । घर पहुंचके बहुत दिन लों वह पलंग पर पड़ा रहा और डेढ़ मास लों पैदल न चल सका । जब तुर्क के प्रधान वहां अधिकार रखते थे तो उस देश की यही दशा थी ।

एक मिस्स साहिबा का वर्णन ।

मिस व्हेतली साहिबा ।

मिस्स वेतली एक स्त्री थी जिस्से मिस्र की स्त्रियों को बहुत ही लाभ पहुंचा है। वह आर्चबिशप की बेटी थी और सन ई० १८२४ में उत्पन्न हुई। छुटपन से वह कंगाल और अनपढ़े लोगों पर बहुत दया करती और उन्हें सहायता देने चाहती थी। १८५८ ई० में उस ने बहुत देशों की यात्रा किई और उन की दशा बूझ लिई। उस समय वह यरूसलम और मिस्र को भी देख आई। दो साल पीछे वह रोगी हुई और बैद्य ने कहा कि तुम को चाहिये कि किसी गरम देश में ५ वा ६ मास तक जा रहो। इस से वह मिस्र में लौट गई और वहां की स्त्रियों के सुधारने में परिस्रम करने लगी। यह काम उसे ऐसा प्यारा हो गया कि २७ बरस लों अर्थात मरणकाल लों परिस्रम करती रही। खैरू नगर के उस भाग में जहां कंगाल मुसलमान लोग रहते थे मिस्स साहिबा ने घर लिया और तब आसपास के घरों में जाकर माताओं से कहने लगी कि अपनी बेटियों को रोज मेरे घर में भेजो कि मैं उन्हें कुछ सिखाया चाहती हूं। बहुत माताओं ने कहा कि उन्हें सिखाना अच्छा नहीं है परन्तु कितनों ने कहा कि हम अवश्य करके भेजेंगी। जब दिन आया तो नौ छोटी लड़कियां एकट्ठी हुईं और उस के साम्ने जमीन पर बैठ गईं। इन लड़कियों को अक्षर सीखना बुरा लगता था परन्तु जब सिलाई का काम होने लगा तो प्रसन्न हुईं और अंगरेजी सुई कैंची अरु और बस्तुन को देखकर वाह २ करने लगीं। उन की मातायें कभी २ काम को रोकती थीं क्योंकि अपने बालकों पर बहुत दया करती थीं यह सोचके कि उन को अब बड़ा उद्योग करना पड़ा है सो उन के लिये गाजर आदि खाने की बस्तुन को ला देती थीं। दूसरे दिन ९ की सन्ती १४ लड़कियां आईं और तीन महीने में स्कूल में ४६ लड़कियां पढ़ने लगीं। मिस्स साहिबा को यह कष्ट भारी था कि लड़कियां हाथ मुंह बस्त्र को मैला रखके आती हैं और यह माताओं का अपराध था क्योंकि वे सोचती थीं कि यदि लड़कियां साफ सुथरी हों तो बुरी दृष्टि से दुःख उठायेंगी।

सन १८६४ ई० में उस ने उस से बड़ा घर लिया और लड़कों के लिये भी पाठशाला खोला गया और उन के पढ़ाने के लिये सूरिया के कालिज से अच्छा शिक्षक मंगाया गया सो दोनों स्कूल बढ़ते गये जब लों उन में ४०० लड़के लड़-कियां न हुए। सन १८६९ में बादशाह ने मिस्स साहिबा को जमीन दिई जिस पर मिशन का घर बनाया गया। दस बरस पीछे औषध विद्या का काम खोला गया और जब किसी को भय लगता था तब मिस्स साहिबा उस के पलंग पास खड़ी होके रोगी को दिलासा देती थीं जैसा एक दिन जब एक मिस्री बुढ़िया

की आंख में से कोई वस्तु काटी जाती थी तब मिस्स साहिबा ने प्रेम से बुढ़िया के कांधे पर हाथ डालकर कहा कि माई घबराओ मत । अब दुःख तो है परन्तु शीघ्र अच्छा हो जायेगा । मिस्स साहिबा न केवल खैरू नगर में पीड़ितों के लिये परिश्रम करती थीं परन्तु नौका में सवार होके उन स्त्रियों के पास जो नदी के समीप गांव में रहती थीं जाया करती थीं । सन १८८७ में मिस्स साहिबा को किसी रीति से जाड़ा लगा और वह रोगी होके मर गईं । सब से बड़ा मिशन जो मिस्र में काम करता है सो अमेरिकन प्रेसबिटीरियन है जिस ने १८५७ में सिकन्दरिया नगर में आरंभ किया और अब मिस्र के बहुत नगरों में असवान लों फैला हुआ है । सन ई० १८८७ में इस मिशन के ३० विलायती और २२८ देशी परिश्रम करनेहारे थे और २,०४२ मिस्री मसीही उन की मंडलियों में थे जो साल में १५,००० रुपये चंदा देते थे और ५,२६३ लड़के और लड़कियां मिशन के पाठशालों में पढ़ते थे ।

आजकल के मिस्री राज्य का बर्णन ।

जैसा ऊपर बर्णन हुआ मिस्र देश सन ई० ६४० में मुसलमानों के बश में आया और अरबी अध्यक्ष वहां राज्य करते और कभी २ अपने को स्वाधीन बनाते थे । बारहवीं सदी के अन्त में सलाउद्दीन ने मिस्र को ले लिया और खैरू नगर को दृढ़ किया और उस का बड़ा गढ़ बनवाया । उन दिनों में यूरपवाले तुर्कों से लड़ा करते थे । सलाउद्दीन ने यूरपवालों पर चढ़ाई किई और सूरिया देश के बड़े भाग को अपने बश में कर लिया । उस के बंश के जो बादशाह थे सो बहुत गोरे लोगों को मिस्र में लाकर उन्हें दास बनाते थे जो ममलूक नाम से प्रसिद्ध हो गये । इन में से बहुत योद्धा बन गये यहां लों कि जब सन ई० १२५० में बादशाह मरा तब इन ममलूक लोगों ने देश के अधिकार को आप छीन लिया । २५० बरस लों मिस्र का राज्य इन दासों के हाथ में रहा । उन में झगड़ा लड़ाई बहुत रही और बहुत रक्त बहाया गया तौभी सत्य है कि उन्हों ने अरब के शिक्षकों को वहां बुलाया और बहुत मसजिदों को बनवाया और कई बातों में उन का राज्य अच्छा ठहरा । सन ई० १५१७ में सीलिम पहिले ने जो तुर्कों का सुलतान था उन के राज्य को उलट दिया । कुछ ३०० बरस लों तुर्कों का अधम और निर्बल राज्य वहां रहा और सन ई० १७९८ में नपोलियन बोनापार्ट फ्रान्सीसी

सेना सहित वहां आया और मिस्र को तुर्कों के हाथ से छीन लिया । उस ने सिकन्दरिया नगर को ले लिया और खैरू के समीप मिस्र की सेना पर बड़ा विजय किया । नपोलियन की इच्छा यह थी कि पहिले मिस्र को बश में लाकर मैं हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करूंगा और अंगरेजों को वहां से निकाल दूंगा परन्तु नेलसन साहिब ने नपोलियन के जहाजों को अबूकिर के कोल में पाकर उन पर बड़ा विजय किया सो नपोलियन को मिस्र से भागना पड़ा । फ्रान्सीसी सेना मिस्र में छोड़ी गई थी परन्तु पीछे से अंगरेजों ने उस पर विजय किया और सन ई० १८०१ में मिस्र तुर्कों के हाथ में लौटा दिया गया ।

सन ई० १८०५ में सुलतान ने महम्मद अली को जो अलबानिया का एक योद्धा था मिस्र का बादशाह बनाया । वह बड़ा सामर्थी और चतुर अध्यक्ष था और उस ने देखा कि यह ममलूक योद्धा ऐसे प्रबल हो गये हैं कि बादशाह भी उन के बश में आ जाता है तो उस ने बिचार किया कि जब लों इन को बश में न लाऊं तब लों देश का किसी रीति से भला न होगा क्योंकि ये जब जी चाहे तब अध्यक्षों को डराते हैं । सो उस ने यह बहाना किया कि मैं किसी देश पर चढ़ाई करने चाहता हूं और इस चढ़ाई के विषय मैं कुछ ममलूक के सरदारों से परामर्श लिया चाहता हूं सो उस ने बड़ा जेवनार करके सरदारों को बुलाया । संभोजन खैरू नगर के ऊंचे गढ़ में हुआ । जब ये भली भांति खा पी चुके थे तब उस ने उन सरदारों से बिन्ती किई कि यहां गढ़ के आंगन में आप लोग अपनी उत्तम घुड़चढ़ी को दिखा दीजिये । सरदार इस्से बहुत प्रसन्न हुए और अच्छे से अच्छे बस्त्र पहिने हुए और उत्तम घोड़ों पर सवार हुए आंगन में इकट्ठे हुए । जब महम्मद अली ने देखा कि सब बड़े सरदार आ गये हैं तब सेवकों को आज्ञा दिई कि गढ़ के सब फाटकों को बन्द करो और तब हजार योद्धाओं को जो चुपके से रक्खे गये थे आज्ञा दिई कि सरदारों पर गोली चलाओ । वहां आंगन में वे लाचार फंस गये थे और अपनी रक्षा के लिये कुछ न कर सकते थे तौभी अपनी मौत को बड़ी बीरता से उठाते थे । कोई हाथ जोड़ ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कोई बादशाह के कपट पर स्राप देता रहा । केवल उन सभों में से एक जन जीता बच निकला क्योंकि वह घोड़े सहित गढ़ की भीत के ऊपर से कूद गया । घोड़ा तो नाश हुआ परन्तु सरदार उस को जमीन पर छोड़के भाग गया । ऊपर से बहुत सी गोलियां उस पर चलाई गईं परन्तु कोई गोली न लगी और वह दौड़के एक मसजिद में शरणागत हुआ और बादशाह उसे वहां से न निकाल सका ।

महम्मद अली के दिनों में एक बड़ी लड़ाई प्रसिद्ध हुई क्योंकि उस के बेटे इब्राहीम ने मिस्री सेना लेकर सूरिया देश पर चढ़ाई किई। तुर्क लोगों की सेना ने उसे रोकने चाहा पर उस ने अलप्पो नगर के समीप उन को जीत लिया और एकड़ और दमिश्क नगरों को उन से छीन लिया। तुर्कों की बड़ी सेना अर्थात ६0,000 सिपाही कोनिया नगर के समीप इब्राहीम से लड़ने को आये परन्तु यह भी भगाये गये और वजीर साहिब जो उन का सेनापति था पकड़ा गया। केवल छः कूच रहे कि इब्राहीम रूम नगर में पहुंच जाता और क्या जाने वह तुर्कों का मुख्य नगर उस समय ले लेता परन्तु रूम के राजा ने सुलतान को बचा लिया और उस के द्वारा तुर्कों और मिस्रियों में नियम बान्धा गया। उस नियम के अनुसार मिस्र स्वाधीन हो गया केवल तुर्कों के नाम का अधिकार रहा और उन को थोड़ा सा शुल्क हर साल देना पड़ा। बरन सूरिया भी मिस्रियों के अधिकार में रहा पर सन ई0 १८४१ में सूरिया के मुसलमान वहां के मसीहियों को घात करने लगे और मिस्री अध्यक्ष उन्हें रोकते न थे सो सूरिया देश छीन लिया गया और तुर्कों के हाथ में लौटाया गया। सन १८४८ ई0 में महम्मद अली बावला हो गया और उस का बेटा इब्राहीम गद्दी पर बैठाया गया परन्तु दो महीने पीछे इब्राहीम मर गया और एक साल पीछे महम्मद अली भी मर गया।

महम्मद अली बलवान अध्यक्ष था परन्तु वह कितनी बातों में बड़ा उपद्रव करता था। उस ने बहुत लोगों का धन जमीन जो पुरखों से चली आई थी छीन लिई। उस ने बहुत सी मसजिदों को बरजोरी से ले लिया और बहुत से मनुष्यों को पकड़के बरजोरी से उन्हें सेना में भेजा कि योद्धा बन जायें। जब इब्राहीम मरा तब अब्बास गद्दी पर बैठा। वह बहुत अज्ञान था और उस ने मुसलमानी धर्म्म के स्थापन करने में बहुत मन लगाया परन्तु उस ने सुख बिलास के खोज में रहकर प्रजा की भलाई की कुछ भी चिन्ता न किई। वह सन ई0 १८५४ में मरा और महम्मद अली का चौथा पुत्र अर्थात सैदपाशा उस की सन्ती में राज्य करने लगा। उस के राज्य में सब से प्रसिद्ध बात जो हुई यह थी कि सूएज नहर खोदी गई। सन १८६३ ई0 में इब्राहीम का बेटा इस्माइल गद्दी पर बैठा। उस ने बहुत चाहा कि मिस्र देश तुर्कों के अधिकार से छूटके स्वाधीन हो जाये और उस ने बहुत रुपये देने से अपने मनोरथ को यहां लों प्राप्त किया कि खदेव नाम से मिस्र में राज्य करने लगा और आज्ञा दिई कि जब पिता मरे तो उस का बड़ा पुत्र गद्दी पर बैठे। इस्माइल के दिनों में कितने अच्छे राजकार्य्य

किये गये । उस ने डाकघर के काम को समस्त देश में जारी किया । उस ने लोगों के पढ़वाने में बहुत सहायता दिई और युद्ध विद्या के सिखाने के लिये एक बड़ा कालिज खोला । वह बहुत चाहता था कि राज्य कार्य्य ठीक ऐसे किये जायें जैसा कि और विलायतों में किये जाते हैं । नई २ रेलवे बनाई गईं जहाजों के लिये रक्षास्थान खोले गये सन्देश भेजने के लिये तार लगाये गये समुद्र किनारे दीपस्तंभ उठाये गये और बहुत से कार्य्य देश की उन्नति के लिये इस्माइल से किये गये पर शोक की बात यह है कि इन अच्छे कार्य्यों में रुपये बहुत लगे और सत्य पूछो तो इस्माइल रुपयों का बड़ा उड़ानेहारा था और इन रुपयों के प्राप्त करने के लिये बेचारे किसानों को बहुत तंग करता था वह न केवल बड़ा महसूल लेता था जैसा और मिस्री अध्यक्षों का दस्तूर था परन्तु कभी २ उन बस्तुन पर जो नहीं थीं महसूल लगाता था । फिर जब खेत में अन्न उगता था तबही उस का महसूल लेता था और चाहे पके वा न पके महसूल देना पड़ता था । इस्से बेचारे किसान बनियों के हाथ में पड़ गये । उस ने मिस्र देश को बढ़ा भी दिया क्योंकि सेना दक्खिन में भेजकर सुदान देश को अपने बश में कर लिया । उस के दिनों में देश का ऋण जो ३,००,००,००० था सो ८०,००,००,००० तक बढ़

तूफिक पाशा मिस्र का खदेव ।

गया । जब प्रगट था कि इतना ऋण का ब्याज कभी प्राप्त न होगा तब उन महाजनों ने जिन से उस ने रुपये उधार लिये थे ऐसा उपाय किया कि वह गट्टी से उतारा गया और देश का बड़ा अधिकार इंगलिस्तान और फ्रान्स के बश में छोड़ा गया । सन ई० १८७९ में इस्माइल का बड़ा बेटा तूफिक गट्टी पर बैठाया गया ।

बहुत से मिस्री लोग विलायती लोगों के अधिकार से अति अप्रसन्न थे सो सन १८८२ ई० में अरबी पाशा और कितने और सरदारों ने सेना में बलवा मचाया और तूफिक से यह मांगा कि राजमंत्री बदले जायें और सेना इतनी बढ़ाई जाये कि उस में १८,००० योद्धा हों । खदेव सेना के आगे दब गया और मिस्री

अरबी सेनापति ।

लोग विलायतियों से घिन करके सेना की सहायता करते थे यहां लों कि अरबी सरदार किसी की आज्ञा न मानता था बरन जो चाहता सोही करता था । जो इधर उधर गढ़ों को बनवाने और उन में तोप चढ़ाने लगे उन्हें अंगरेजों ने आज्ञा दिई कि गढ़ को न बनावें । परन्तु अरबी ने न माना और सिकन्दरिया आदि

नगरों को दृढ़ करता रहा तब नगरबासी सिकन्दरिया में यूरपवालों को सड़कों में मार डालने लगे । इस काम को देखकर फ्रान्सीसी सरदार अपनी सेना लेके चला गया परन्तु अंगरेजी जहाज अरबी गढ़ों पर तोप चलाने और उन्हें गिराने लगे । तब अरबी सेना सहित सिकन्दरिया नगर के बाहर चला गया । इस्से नगर में कोई अधिकार न रहा और दुष्ट लोग नगर को लूटने और घरों को फूंकने लगे । तीसरे दिन जहाजों के सरदार ने अंगरेजों को नगर में भेज दिया जिस्तें दुष्टों को डरावें परन्तु अरबी पाशा सेना सहित समीप रहा और प्रगट था कि जब लों यह हार न जाये तब लों मिस्र में चैन न हो सकेगा सो इंगलिस्तान से एक सेना भेजी गई और अरबी की सेना तेलअल कबीर नाम एक स्थान में २५ दिन के बीच में पाई गई और बिलकुल हराई गई और अरबी सेनापति पकड़ा गया और लंका में भेजा गया और मर भी गया ।

जब कि सन ई० १८७९ में इस्माइल गद्दी से उतारा गया था तब दो साहिब एक इंगलिस्तान की ओर से और एक फ्रान्स की ओर से भेजे गये जो मंत्री की रीति से खदेव को परामर्श देवें परन्तु जब अरबी की लड़ाई में फ्रान्सीसी लोग इस पद को त्यागके चले गये तब से नया बन्दोबस्त हुआ और अब एक अंगरेज खदेव के पास रहता है और व्यय की सब बातों में कुछ अधिकार रखता है । सन ई० १८८३ में बेरिङ्ग साहिब जो पहिले हिन्दुस्तान में लार्ड साहिब के पास थे इस काम पर स्थापित हुए और बहुत अच्छी रीति से उस काम को चलाते थे । सन ई० १८९२ में तूफिक पाशा मर गया और उस का पुत्र अब्बास जो १८ बरस का लड़का था खदेव बना ।

मिस्र के बड़े नगरों का वृत्तान्त ।

सिकन्दरिया का वर्णन ।

सिकन्दरिया जो रूम नगर को छोड़कर बहुत दिनों लों समस्त रूमी राज्य का दूसरा नगर था सो सन मसीह से ३३२ वर्ष पहिले सिकन्दर महान से बनवाया गया । उस स्थान पर मेरिओटिस झील और रूम समुद्र के बीच में एक नीचान था जिस पर पहिले नगर बसाया गया । उस नीचान के साम्हने एक टापू था जिस पर तालमी बादशाह ने एक बड़ा दीपस्तंभ बनाया था जिस के विषय लोग
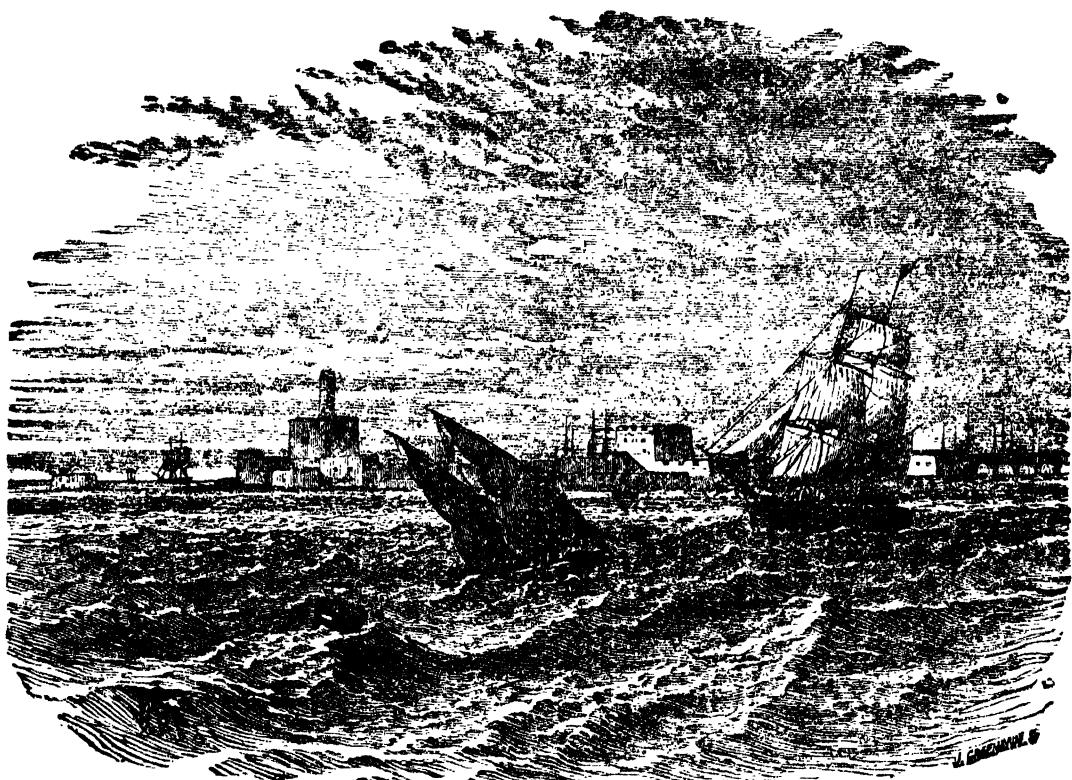
सिकन्दरिया ।

कहते हैं कि यह ४00 फुट ऊंचा था । टापू का नाम फारोस था और वह दीपस्तंभ ऐसा विख्यात हुआ कि जब लोग और स्थानों में दीपस्तंभ बनाते तो उन्हें फारोस नाम देते थे । पीछे को टापू और धरती जोड़ी गई सो टापू की दोनों ओर जहाजों के लिये कोल बन गये । तालमी नाम कितने यूनानी बादशाह इस नगर में रहते थे और बड़े २ गृह भवन मन्दिर आदि बनाकर उसे विभूषित करते थे और वे बहुत ज्ञानियों और उपदेशकों को बुलाते थे यहां लों कि नगर ज्ञान और विद्या में बहुत विख्यात हुआ । बड़े २ पुस्तकालय वहां बनाये गये जिस में ७,00,000 पुस्तकें रक्खी गईं । कहते हैं कि उन दिनों में बहुत दास दासियों को छोड़ सिकन्दरिया में ३,00,000 निवासी थे ।

जब यहूदी देश का राज्य उलट दिया गया तब अगणित यहूदी लोग सिकन्दरिया में आ बसे वे गिन्ती में और धन संपत्ति में बहुत ही बढ़ते जाते थे यहां लों कि कहते हैं कि उन दिनों में निवासियों की तिहाई यहूदी थे । जब उन्हों

ने अपने लिये धर्म्मपुस्तक चाहा तब कहते हैं कि बादशाह की आज्ञा से धर्म्म-पुस्तक का उलथा इब्रानी भाषा से यूनानी भाषा में किया गया जो कि आजतक सिप्तूअजिन्त अर्थात सत्तर नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि कहते हैं ७० पंडित उस के उलथा करने में सहायता देते थे।

कहते हैं कि मिस्र में मार्क प्रेरित पहिला मसीही उपदेशक था और उन दिनों में मसीही मंडली बड़ी हो गई और उस में बहुत से अच्छे शिक्षक पाये गये। सन ई० ६४१ में अमरू मुसलमानों की सेना सहित आया और सिकन्दरिया नगर को बश में कर लिया। उस समय उस का पुस्तकालय जगत भर में प्रसिद्ध था। कहते हैं कि सेना के सरदार ने उमर खलीफा से पूछा कि मैं इन पुस्तकों को रक्खूं वा नाश करूं। उमर ने उत्तर दिया कि यदि उन पुस्तकों की बातें कुरान के अनुसार हैं तो उन से कुछ लाभ नहीं क्योंकि कुरान आप ही हमारे पास है। यदि इन में ऐसी बातें हों जो कुरान में नहीं हैं तो उन से हानि होगी तो दोनों रीति से उन का भस्म करना अच्छा होगा। कहते हैं कि ऐसी आज्ञा पाकर सेनापति ने उन सब पुस्तकों को नगर के हम्मामघरों में भेज दिया और कहा कि इन्हें आग में डालकर पानी को गर्म करो।

जब काहिरा देश का मुख्य नगर बन गया तो इस्से सिकन्दरिया घटने लगा और जब नाविक लोग मिस्र के मार्ग से नहीं परन्तु आफ्रिका की दक्खिन ओर के मार्ग से हिन्दुस्तान में जाने लगे तो उस की और भी बड़ी हानि हुई। जब सन ई० १५१७ में वह तुर्कों के हाथ में पड़ा तब सिकन्दरिया बिलकुल उजाड़ हो गया था और बहुत दिन लों उस की बुरी दशा रही। सन ई० १७७८ में उस में केवल ६,००० निवासी पाये गये। नगर की उन्नति महम्मदअली बादशाह के दिनों से होने लगी। सन ई० १८१९ में उस ने महमूदिया नाम नहर खोदवाई कि जिस से नगर नील नदी से जोड़ा गया है। यह नहर ७० मील लंबी और ९० फुट चौड़ी है और उस के बनाने में बेचारे मजूरों को बड़ा कष्ट हुआ क्योंकि २,५०,००० मजूर बेगार पकड़े गये और उस में काम करने के लिये भेजे गये और उन में से २०,००० आदमी तंगी और दुःख के मारे मर गये।

वह सिकन्दरिया जो अब है मानो नया नगर है क्योंकि पूर्वकाल के गृह भवन मन्दिर आदि जाते रहे हैं। शहर के समीप एक लाल पत्थर का खंभ आज लों खड़ा है जो पाम्पी नाम रूमी सेनापति के नाम से प्रसिद्ध है परन्तु सत्य पूछो तो वह पाम्पी के बहुत दिन पीछे डियोक्लीशियन रूमी बादशाह के नाम में उठाया
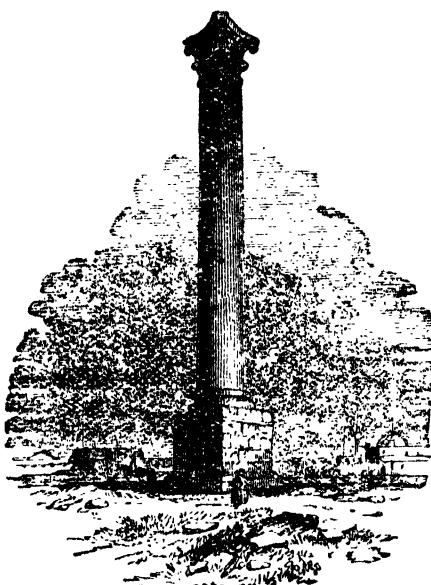
पाम्पी का खंभ ।

गया था । दो और पत्थर के खंभ बहुत दिन लों सिकन्दरिया के समीप खड़े थे क्योंकि क्लियोपाट्रा महारानी उन्हें एक प्राचीन मिस्री मन्दिर से ले आई थी और उन को यहां रक्खा परन्तु उन में से एक अमरीका में और दूसरा लण्डन नगर में अब खड़ा है । लोग उन्हें क्लियोपाट्रा की नीड्ल्स अर्थात सूइयां नाम देते हैं क्योंकि वे लंबे और पतले हैं ।

आजकल का सिकन्दरिया नगर अद्भुत प्रकार का है कि जिस में प्राचीन और नया काल एक दूसरे से मिलाये गये हैं । उस भाग में जहां देशी लोग बस्ते हैं तहां गली कूचों में सड़क कच्ची हैं और जब पानी बरसता तब उन में चलना कठिन होता है और बहुत लोग झोंपड़ियों और छोटे छोटे घरों में रहते हैं परन्तु वह भाग जहां साहिब लोग रहते हैं ऐसा दिखाई देता जैसा विलायत का नगर जिस में बड़ी २ दूकानें बनीं और सड़कें अच्छी पटी हुई हैं और रात को प्रकाश अच्छा होता है । चारों ओर कंगाल लोग भीख मांगते फिरते हैं और गधेवाले अपने गधों को हांके फिरते हैं । जहां फारोस टापू पर दीपस्तंभ प्राचीनकाल में बना था तहां नया दीपस्तंभ अब बना है जिस का प्रकाश बीस मील तक दिखाई देता है । आजकल सिकन्दरिया के साम्हने नौकाओं का रक्षास्थान ठीक किया गया है क्योंकि एक बांध दो मील लंबा इस रीति से बांधा गया है कि पानी
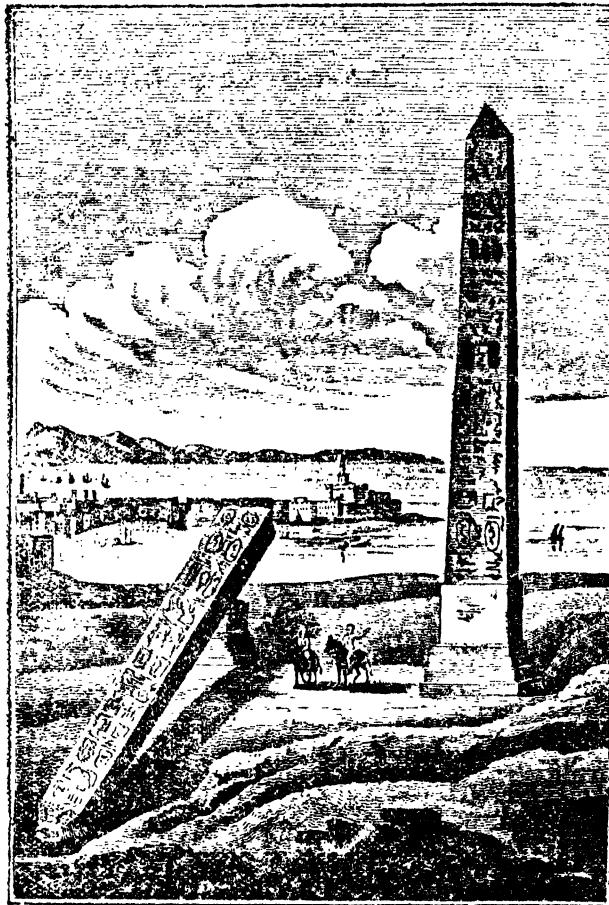
क्लियोपाट्रा की सूइयां ।

में २६,००० बड़े भारी पत्थर डाले गये हैं तौभी इस रक्षास्थान में प्रवेश करना चटानों के मारे कठिन है । जब से पोर्टसैद नगर बन गया है तब से सिकन्दरिया का लेनदेन कुछ कम हो गया है तौभी सिकन्दरिया का बाजार गरम रहता और जब लों देश की उन्नति रहेगी तब लों बहुत ब्योपार वहां किया जायेगा । नगर में और मेरिओतिस झील के बीच में कई मील तक समुद्र के तट पर बालू के बड़े बड़े ढेर हैं और एक २ पर अनाज पीसने के लिये पनचक्की बनी हुई है । यात्री सिकन्दरिया में रेल पर सवार होके सूएज में और काहिरा में जा सकता है ।

अबूकिर नाम एक गांव है जो समुद्र तीर पर सिकन्दरिया से १३ मील पूरब ओर है । उस के साम्हने वही कोल है जहां निपोलियन के जहाज आये जब उस ने सेना सहित मिस्र पर चढ़ाई किई परन्तु नेलसन साहिब ने अंगरेजी जहाज

गदहा का हांकनेवाला ।

सहित उन पर बड़ा विजय किया यहां लों कि केवल दो ही फ्रान्सीसी जहाज बच निकले सो निपोलियन अपनी इच्छानुसार हिन्दुस्तान पर चढ़ाई न कर सका । अबूकिर गांव के समीप सन ई० १८०१ में धरती पर एक और लड़ाई हुई जिस में अंगरेजों ने फ्रान्सीसी सेना को जीत लिया ।

रोसट्टा एक और नगर समुद्र तीर पर है । वह सिकन्दरिया से ४० मील उत्तर पूरब ओर को है और उस स्थान से ९ मील दूर है जहां नील नदी का पानी समुद्र में गिरता है । कोल के आगे बालू का ढेर है जिस के मारे बड़े जहाज नगर के पास पहुंच नहीं सकते हैं । उस के समीप नील नदी में एक बड़ा बान्ध बान्धा गया है जिस्तें नदी के जल को ऊपर खेतों तक पहुंचावें । रोसट्टा नगर के पास वह लिखा हुआ पत्थर पाया गया कि जिस की सहायता से ज्ञानी लोग प्राचीन मिस्रियों की भाषा को पढ़ने लगे ।

नील नदी के पूरबी मुहाने के समीप दमयट्टा नाम एक नगर बना है । वह अच्छी रीति का बना हुआ नगर है और उस में कितनी अच्छी मसजिदें भी पाई जाती हैं । वहां से काहिरा नगर को रेलवे बनी है ।

पोर्टसैद एक नया नगर है जो सूएज नहर के खोदने से बनाया गया है और उस का नाम सय्यदपाशा से रक्खा गया है जिस ने उस की नेव डाली । वह उस बालूमय जमीन पर बना है जो मनजेला झील और रूम समुद्र के बीच में है और सिकन्दरिया से एक सौ दस मील पूरब ओर को है ।

सूएज नहर का वृत्तान्त ।

लाल समुद्र और रूम समुद्र के बीच में केवल १०० मील जमीन है और वह भी नीची और बालूमय है सो पूर्वकाल से लोगों ने सोचा कि यदि इन दोनों के बीच नहर खोदी जाये तो बहुत लाभ की बात होगी क्योंकि जहाज एक समुद्र से दूसरे तक आया जाया करेंगे सो पूर्वकाल में रामसेज बादशाह ने नहर

सूवज के पास नहर का आरंभ ।

खोदवाई परन्तु वहां की आंधियों में बालू बहुत उड़ाई जाती है सो नहर बालू से भर गई और निकम्मी हो गई और दारा नाम फारश के बादशाह ने उस को फिर खोदवाया। मुसलमानों के दिनों में वह फिर भर गई और खोदवाई गई। जब निपोलियन मिस्र में आया तब उस ने चाहा कि वहां ऐसी बड़ी नहर खोदवाये कि जिस से बड़े २ युद्ध के जहाज आया जाया करें सो उस ने किसी को उस बीच की जमीन नापने को भेजा परन्तु नापनेवाले ने नापने में किसी रीति से बड़ी भूल किई। उस ने निपोलियन को बताया कि लाल समुद्र का पानी रूम समुद्र के पानी से ३० फुट ऊंचा है और यदि बड़ी नहर खोदी जाये तो हानि होगी सो निपोलियन ने उस बात को त्याग दिया। पीछे प्रगट हुआ कि पानी की ऊंचाई में बहुत थोड़ा अन्तर है सो लेसप्स साहिब एक फ्रान्सीसी ज्ञानी ने सोचा कि यहां नहर सहज से खुद सकती जिस से जगत भर के व्योपारियों को बड़ा लाभ पहुंच सकता है। सो सन ई० १८५४ में उस ने मिस्र के बादशाह सय्यदपाशा के पास जाकर अपना मनोरथ प्रगट किया। बादशाह उस से बहुत प्रसन्न हुआ और चार बरस पीछे खोदने का काम आरंभ हुआ। बादशाह ने यह उपाय किया कि २५,००० मजूर टोकरियां लेकर उस बालू को उठाके दूर फेंकें और यह मजूर जो बेगार पकड़े गये सो चार २ महीने के पीछे घर जाते अरु और भी उन की सन्ती में आ जाते थे। अंगरेजों ने बादशाह से कहा कि इस रीति मजूरों को पकड़ना और बन में ले जाना जहां बहुत लोग रोगी होके मर भी जाते हैं बड़ा उपद्रव है। उन के कहने से बादशाह ने मजूरों को छोड़ दिया और खोदने के लिये बड़ी २ कलों को मंगवाया जो भाफ के बल से चलतीं और बालू को शीघ्र उठातीं और दूर फेंकती थीं। न केवल यह परन्तु अंगरेज पहिले नहर के खोदने से बहुत अप्रसन्न हुए। वे कहते थे कि यदि खोली भी जाये तौभी फिर पूर्वकाल के समान बालू से भरके निकम्मी हो जायेगी। परन्तु लेसप्स साहिब किसी के रोकने से न रुका और सन १८६५ ई० में नहर यहां लों बन गई कि छोटे जहाज एक समुद्र से दूसरे लों आने जाने लगे और १८६९ में काम समाप्त हुआ और नहर बड़ी धूमधाम से समस्त देशों के जहाजों के लिये खोली गई। उस समय के तमाशे में आष्ट्रिया का बादशाह और फ्रान्स की महारानी आये और बड़ा आनन्द किया गया।

नहर के खोदने में २०,००,००,००० रुपये व्यय किये गये। उस भाग के लिये जो मिस्र के बादशाह के हाथ में रहा उस को सरकार अंगरेज ने चार करोड़

रुपये देकर मोल लिया जिस्से उस का नहर पर कुछ अधिकार न रहे। उस समय से जहाजों का आना जाना यहां लों बढ़ गया है कि नहर को बढ़ाना अरु और भी गहिरा और चौड़ा बनाना पड़ा। अब उस की गहिराई २८ फुट है और रूम समुद्र से लेके कड़वी झील तक १४४ फुट और वहां से लाल समुद्र तक २१३ फुट चौड़ी है।

जब नहर पहिले खोली गई तब नाना देश के लोग पोर्टसैद में आके घर बनाने लगे क्योंकि सोचते थे कि यहां बहुत लेनदेन हो जायेगा। उन में से मालटा टापू और इटालिया और यूनान से बहुत दुष्ट लोग आके रहने लगे और कई साल लों उस नगर की बड़ी दुर्दशा रही परन्तु आजकल वहां का प्रबन्ध अच्छा होता जाता और नहरवालों का बड़ा गृह वहां बन गया है और बहुत अच्छी दूकानें खोली गईं जिन के बहुत से दूकानदार यूनानी हैं। सब से बड़ी सड़क में बहुत से बृक्ष लगे हैं जिन की छाया में छोटी २ मेज रहती हैं जहां लोग बैठकर शर्बत काफी चाह आदि पिया करते हैं।

पोर्टसैद में विशेष ब्योपार कोयला बेचना है। बहुत सी अग्निबोटें जब उन का कोयला जल जाता तो वहां आतीं और कोयला भरती हैं। कोयला भरने का उपाय यह है कि कोयले की नौका जहाज के पास बान्धी जाती और सीढ़ी उन के बीच में लगाई जाती और अगणित अरब लोग कोयले की थैलियां लेकर जहाज पर चढ़ जाते और शीघ्र उसे भर देते हैं।

उस नहर में रात दिन अनेक अग्निबोट प्रवेश पातीं और उस में से निकल जाती हैं। नहर के मुहाने के समीप एक बड़ा दीपस्तंभ बना है। धरती के समीप समुद्र का पानी उथला है सो दो बड़े भारी बान्ध एक २७३० गज लम्बा और दूसरा २०७० गज लम्बा समुद्र के पानी में बान्धे गये हैं। यह बड़े भारी पत्थरों के बनाये गये परन्तु भीत की रीति में जोड़े नहीं गये जैसा कि कोलंबो और मन्दराज के बान्धों में किया गया है पर केवल एक दूसरे के ऊपर इस बिचार से डाले गये हैं कि इतने भारी हों कि समुद्र की लहरें उन्हें दूर न कर सकें।

अब लों नहर की चौड़ाई कुछ कम है और जब दो जहाज मिल जाते तो एक किनारे पर रुका रहता है जब तक कि दूसरा आगे न चले। जहाजवालों को आज्ञा है कि नहर में घंटे भर में ५ मील से अधिक न चलें नहीं तो नहर के तीर कट जाते और कितने स्थानों में जहां बालू जल में अधिक गिरता है तहां तीर लकड़ियों वा पत्थरों से पाटा जाता है। जब नहर पहिले खोली गई तब

जहाज रात के समय चलने से बर्जित थे सो ३६ घंटे में जहाज निकल सकता था परन्तु आजकल तीर पर बहुत से दीपक लगे हुए हैं जिन की सहायता से
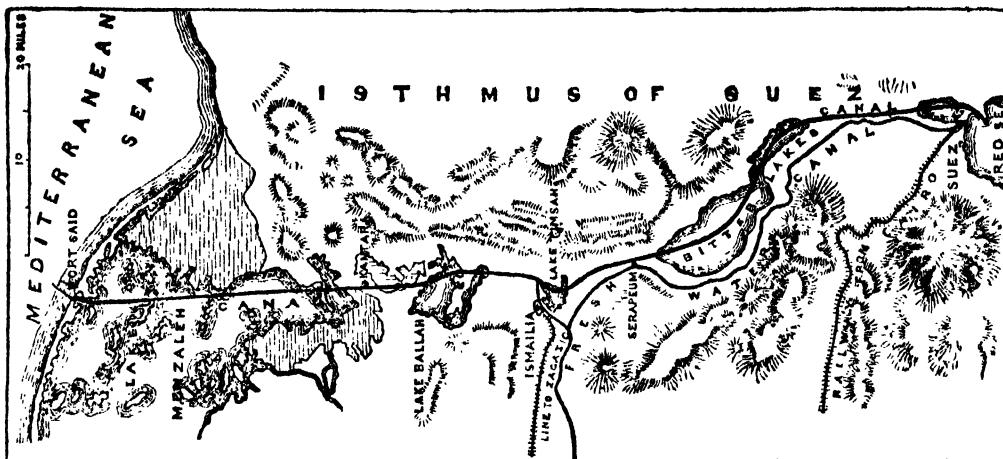
नहर का नकशा।

जहाज रात को चल सकते और २४ घंटे के चलने से दूसरे समुद्र में पहुंच जाते हैं। जब कोई पोर्टसैद छोड़कर और जहाज पर सवार होके नहर में चलता है तब पहिले मंजेला की झील को देखता है। यह झील समुद्र के समीप लगी है और ४00 वर्ग मील जमीन उस में है और उस में बहुत से टापू हैं जिन में कहीं २ झमी लोगों के गांव के चिन्ह देखने में आते हैं। उस झील में बहुत सी मछलियां पाई जातीं और उस के तीर पर अगणित जलपक्षी उड़ा करते हैं। उन दिनों को छोड़ जब नील नदी में बाढ़ आती है इस झील में केवल तीन फुट पानी होता है बरन कहते हैं कि पूर्बकाल में खेत इस स्थान में पाये जाते थे पर आजकल उस जमीन को सुखाने और खेत बनाने का बन्दोबस्त किया गया है।

आगे बढ़के बल्लाह की झील है जिस के समीप कन्तारा नाम एक स्थान है जहां वह सड़क मिलती जिस में पूर्वकाल से लेके अब तक मिस्र और सूरिया देशों के बीच में आना जाना हुआ है। और इस से आगे बढ़के दोनों ओर बालूमय मरुभूमि दिखाई देती है जिस में दो चार अरब और उन के ऊंटों को छोड़ एक भी जीव दिखाई नहीं देता परन्तु कहीं २ नहर के पास एक दूसरे से चार एक मील दूरी पर नहरवालों के घर बने हैं जो आने जानेवाले जहाजों का हिसाब रखते और नहर को नाना प्रकार की हानि से बचाये रखते हैं। कभी २ नहरवालों की छोटी

अग्निबोट इधर उधर जाती है वा बड़ी खोदने की कल देखने में आती जो बालू को नीचे से निकालके तीर के ऊपर फेंक देती है और तीर पर तार भी लगा है और गास के पीपे हैं जिन के द्वारा रात को प्रकाश होता है।

नहर के बीच ही में तिमसा नाम अर्थात मगरमच्छ नाम झील है जो पांच मील लंबी है। इस स्थान पर जहाज को दूसरा अगुवा मिलता है और यात्री जो मिस्र में जाने चाहते हैं धरती पर उतरते हैं। इस झील के तट पर इस्माइलिया नाम एक नया नगर बन गया है जो इस्माइल बादशाह के नाम से कहलाता है। वह अच्छी रीति से बना है और उस के समीप बादशाह का भवन है। यहां से एक छोटी नहर जिस में नील नदी का पानी बहता है नील नदी तक ४0 फुट चौड़ी और नौ फुट गहिरी खुदी हुई है क्योंकि जो लोग नहर के समीप और इस्माइलिया में बस्ते हैं सो खारे पानी को पी नहीं सकते हैं। इस्माइलिया से यात्री रेल पर सवार होके सिकन्दरिया में और काहिरा में जा सकते हैं।

फिर आगे बढ़के कड़वे जल की झील देखने में आती है जो २३ मील लंबी है और सूएज से १६ मील दूर है। यहां की धूप बड़ी कड़ी है और सूखने से जल इतना खारी हो जाता कि उस में मछलियां रह नहीं सकती हैं। यह झीलें चौड़ी हैं और इन में जहाज शीघ्र ही जा सकता है। आगे बढ़के वह जगह मिलती जहां नहर लाल समुद्र में मिली है। उस स्थान पर नहरवालों के कितने बंगले हैं और एक गिरजाघर और एक सड़क बनी है जिस के तीर पर वृक्ष उगे हैं क्योंकि नील नदी का जल वहां तक पहुंचाया जाता है।

सूएज समीप का एक पुराना नगर है। २000 बरस बीते अर्थात तालमी बादशाह के दिनों में उस का नाम आर्सिनो प्रसिद्ध था बरन वह एक विशेष कोल था जिस के द्वारा हिन्दुस्तान के ब्योपारी यूरप में जाया करते थे। इस सदी के आरंभ में सूएज नगर बहुत छोटा हो गया था परन्तु अब सन ई0 १८३७ से जब से साहिब लोग मिस्र में होके विलायत को जाने लगे वह फिर उन्नति पाने लगा। मिस्र के बादशाह ने यात्रियों के लिये बड़ा होटलघर वहां बनवाया। जब तक नहर खोली न गई तब तक यह दस्तूर था कि विलायत के जानेहारे धरती पर उतरके होटल में जाते और वह डाक गाड़ियों में सवार होके मरुभूमि के मार्ग से काहिरा में जाते थे और वहां से नौका में सिकन्दरिया को जाते थे। जब मरुभूमि में रेलवे बनी तब डाक गाड़ियां नहीं जाती थीं और अब जो नहर खोली

गई थोड़े से यात्री लोग सूएज में उतरते हैं बरन जहाज बहुधा सूएज के पास नहीं ठहरते तौभी उन हाजियों के मारे जो सूएज में होके अरबिस्तान के जानेहारे हैं नगर का काम चलाया जाता है। इस में निवासी ११,००० हैं। नगर के पास जहाजों के सुधारने के लिये स्थान बने हैं। सूएज के साम्हने पानी के उस पार एक स्थान है जो मूसा का कुआ नाम से प्रसिद्ध है। वहां नाना प्रकार के छोटे बड़े कुए हैं जिन में कितने गहिरे हैं और पत्थरों से पक्के किये गये। बहुधा उन में का पानी कड़वा है परन्तु कितनों का पानी पीने के योग्य है। यह वही स्थान होगा जिस को बनी इस्राएल जब इस बन में फिरते थे तब मारा अर्थात कड़ुवा नाम देते थे।

सीना के पहाड़ का वृत्तान्त।
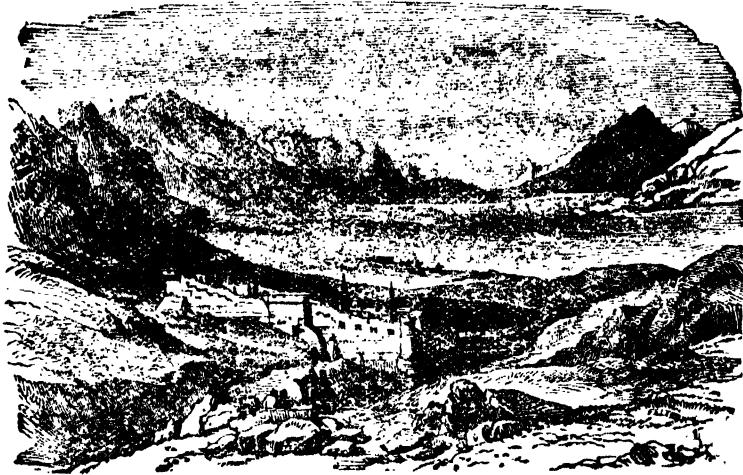
कतरीन का धर्म्मशाला।

सीना का पहाड़ जो सूएज के खाल की पूरब ओर है मिस्र के अधिकार में है। यह देश एक लंबा चौड़ा है। पहाड़ों की दो पांतियां उत्तर की ओर जातीं और वहां एक में मिल जाती हैं। वहां कभी २ पहाड़ के चटान रंगीन हैं तौभी समस्त देश बहुत ही उजाड़ देख पड़ता है। केवल पानी के नालों के समीप थोड़ी सी झाड़ियां और खजूर के वृक्ष उगते हैं और निचानों में थोड़ी सी घास है कि जिस पर फिरनेवाले अरब लोग अपनी भेड़ बकरियों को चराते हैं।

जब मूसा की अगुवाई से इस्राएली लोग कनान की ओर चले जाते थे तब

उन्हों ने पाप करके ईश्वर को क्रोध दिलाया सो ४० बरस लों उन्हें इस बन के बीच में फिरना पड़ा। सीना पहाड़ के ऊपर बड़े बादलों और बिजलियों के साथ ईश्वर ने उस समय मूसा से बातें किईं और दस आज्ञा अर्थात व्यवस्था दिई। वह पहाड़ जिस पर मूसा बादलों से घिरा हुआ उस समय खड़ा था वही होगा जिस को आजकल कतरीन पर्ब्बत कहते हैं। उस पर्ब्बत की दो ऊंची चोटियां हैं जिन में से एक हूरीब और एक मूसा पर्ब्बत नाम प्रसिद्ध हैं। इस पहाड़ की ऊंचाई ८७०५ फुट है और उस के समीप कतरीन का धर्म्मशाला है जो सन ई० ५२७ में गढ़ के समान बनाया गया है।

यदि सूएज में जब जहाज पर सवार हो यात्री दक्खिन ओर चलेगा तो उस स्थान के समीप जहां सूएज की खाल लाल समुद्र में मिली है शादवान नाम एक लाल टापू मिलता है जिस पर कई बरस हुए कि एक बड़ी अग्निबोट टक्कर खाके नाश हुई। आजकल टापू के दक्खिन ओर एक दीपस्तंभ बना है। और दक्खिन की ओर बढ़के कासायर नगर देखने में आता है कि जिस के कोल में कितने जहाज जाया करते हैं। यह उस स्थान के साम्हने है जहां थीब्ज नगर बना था जो पूर्वकाल में मिस्र का मुख्य नगर था। और भी दक्खिन को चलकर वह कोल मिलता है जो रूमियों के दिनों में बर्णीस नाम से प्रसिद्ध था। पूर्वकाल में हिन्दुस्तान का सौदा यहां उतारा जाता और ऊंटों के द्वारा मरुभूमि के उस पार तक पहुंचाया जाता था और वहां नौका में लदके सिकन्दरिया में भेजा जाता था।

आगे बढ़के लाल समुद्र का बड़ा कोल अर्थात स्वाकिम पाया जाता है। नगर छोटे टापू में बना है जो तट से थोड़ी दूर पर है और बीच में जल में सड़क बनी है। यह वह स्थान था जहां नूबिया सुदान आदि देश परदेशों से लेनदेन करते थे परन्तु सन ई० १८८३ में मुसलमानों के मेंहदी ने उस देश को अपने बश में कर लिया और उस का ब्योपार बहुधा बन्द किया गया पर सन ई० १८९६ में सरकार अंगरेज ने हिन्दुस्तानी सिपाहियों को वहां भेजकर स्वाकिम को अपने बश में कर लिया सो अब उस का ब्योपार फिर बढ़ता जाता है। इस कोल में हर साल ६,००० वा ७,००० महम्मदी लोग हज करने की इच्छा से आया करते हैं।

अलखैरू नगर का वृत्तान्त।

सिकन्दरिया से १३० मील दक्खिन की ओर अलखैरू नगर मिलता है जो
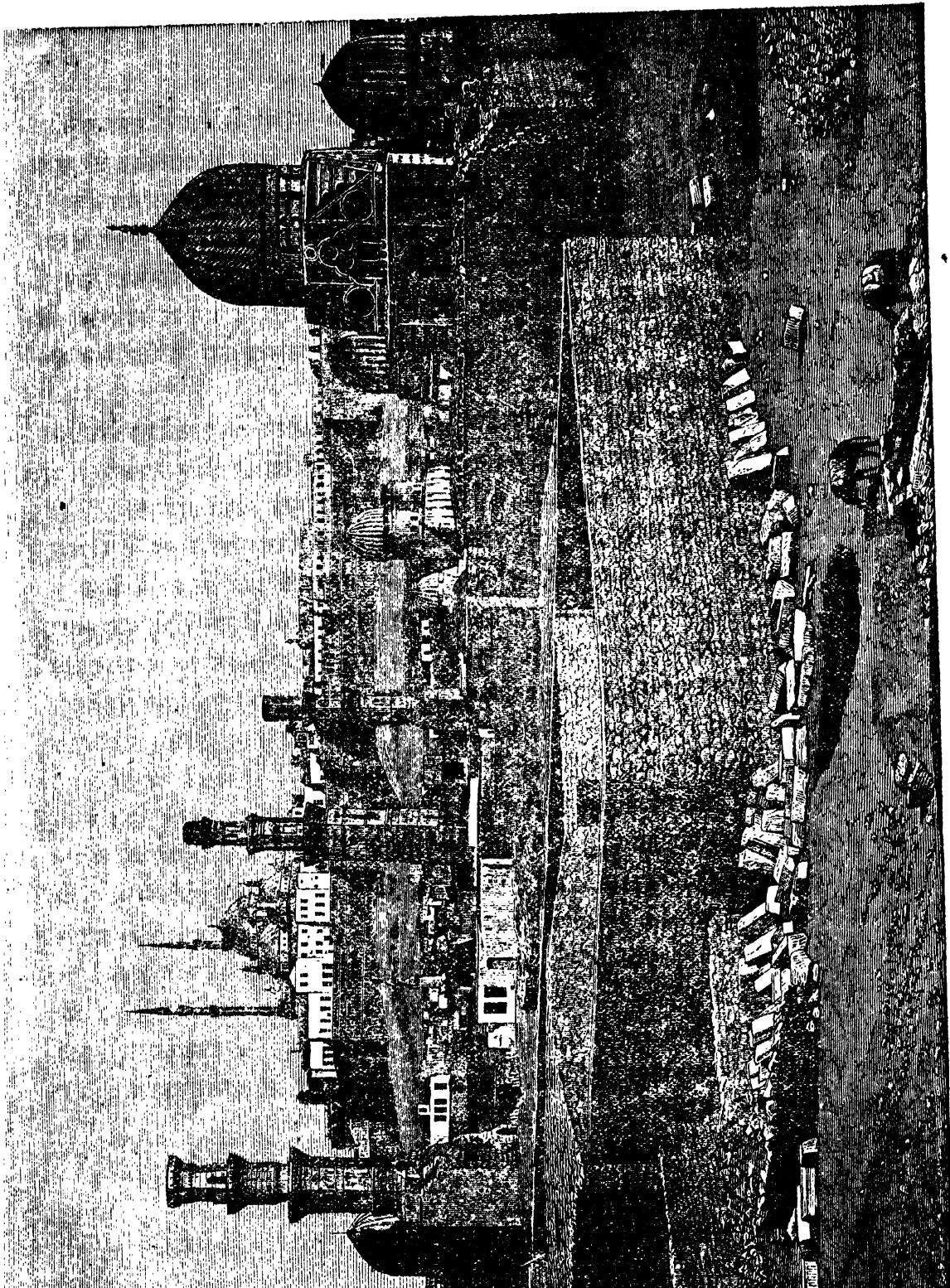
बहुत दिन से मिस्र का मुख्य नगर है। मिस्री लोग उस को अम्माउदद्दुनिया अर्थात जगत की माता नाम देते हैं। उस में और सिकन्दरिया में रेलवे बनी है। जमीन बहुत सम है और बीच में कितनी बस्तियां और बहुत से गांव और मस-जिदें देखने में आती हैं और चारों दिशा से रहटों की चरचराहट जहां खेत सींचे जाते हैं सुन्ने में आती है। खैरु की नेव अरबवालों से डाली गई। कहते हैं कि जब अमरु सेनापति ने मिस्र को जीत लिया तब आज्ञा दिई कि जहां मैं डेरा डालूं तहां बस्ती बसाओ तो पहिले उस का नाम डेरा इस लिये प्रसिद्ध था परन्तु तीन बार नगर का स्थान कुछ बदल गया और उस की भीतें ३ बार गिराई गईं। जब सलाहउद्दीन बादशाह हुआ तब उस ने मुकट्टम पहाड़ी पर जो नगर के समीप थी एक गढ़ बनवाया और नगर की भीतों को वहां तक पहुंचाया। उन दिनों में नील नदी का पानी नगर की पच्छिमवाली भीत तक पहुंचता था परन्तु १३ सदी में नदी कुछ हट गई और अब एक मील दूर पर बहती है। बुलाक वह गांव है जहां यात्री सौदान नगर के लिये उतारे जाते हैं।

अलखेड़ की एक स्त्री लड़कों सहित।

अलखैरू को दो भागों में बांट सकते हैं अर्थात प्राचीन और नवीन बस्ती और भिन्नता बहुत है। प्राचीन बस्ती में गली कूचे बहुत तंग और टेढ़े तिरछे हैं और कभी २ ऊपरवाली खिड़कियां यहां लों बढ़ाई हुई हैं कि आकाश की रोशनी सड़क में कम पहुंचती। ऐसी सड़कें मिलतीं जो केवल ५ फुट चौड़ी हैं। बहुत सड़कों में यह रीति है कि नीचे दूकान लगी हैं और ऊपरवाली कोठरियां रहने के लिये किराये पर दिई जाती हैं। दूकानें बहुत ऐसी हैं जैसा हिन्दुस्तान की बस्तियों में अर्थात छः फुट ऊंची तीन वा चार फुट चौड़ी और सड़क की ओर खुली हैं केवल उन में इतनी जगह चाहिये कि दूकानदार दो चार गाहकों के साथ बैठके हुक्का काफी पिया करे और रात को अथवा जब दूकानदार मसजिद में जाता है तो जाफरी से बन्द किई जाती हैं। दस्तूर है कि एक प्रकार की बहुत सी दूकानें अर्थात जिस में एक प्रकार की बस्तु बिकती सो एक संग लगाई जातीं।

इन तंग गलियों में बहुत ही आना जाना रहता है। बहुत लोग पैदल चलते हैं। अगणित भार से लदे हुए गदहे गले में घंटियां बान्धे हुए फिरते हैं। ऊंचे २ ऊंट आते जाते और मानों सब मनुष्यों पर घिन से देखते हैं। न वे किसी के लिये मार्ग छोड़ेंगे। यदि कोई अपने को बचाया चाहता है तो उन के आगे से हट जाये। नाना प्रकार के फिरनेवाले आते जाते हैं और नाना प्रकार की चिल्लाहट से अपनी बस्तुन की प्रशंसा करते हैं जैसा यह कि वह जो उन लोबियों को बेंचता जो नील नदी के किनारे उत्पन्न होती हैं तो यों पुकारता फिरता है कि क्या ही मन-भावन है नदी की उत्पत्ति। वह जो तरबूज का बीज बेचता है कि ले बिस्मित किये हुओं का दिलासा ले बीज। नारंगी का बेचनेहारा पुकारता है कि ले मधु ले नारंगी ले मधु। गुलाब का बेचनेहारा यह चिल्लाता है कि पहिले गुलाब कांटा था परन्तु महम्मद के पसीने से फूल खिला। क्योंकि मुसलमान नबी के ऐसे अद्भुत कार्य्य का वर्णन करते हैं। एक शब्द जो दिन भर खैरू की गली कूचों में सुनाई देता है सो पानी बेचनेहारे का है जो पीतल के कटोरों को ठोंक २ के बजाता और हर एक पियासे के लिये उन्हें भर देता है। सोनारों का बाजार बहुत तंग बना है। उस में दो मनुष्यों का संग २ चलना कठिन है। दोनों ओर सोनार अपनी २ दूकान में बैठे हुए अपने साम्हने कोयले की आग और छोटी निहाई और धौकनी और फूंकनी रखता है और वह सुन्दर गहनों को इन के द्वारा बनाता जिन के लिये खैरू का बाजार प्रसिद्ध है। ऐसे आदमी जो आप मैले कुचैले हैं और अन्धेरी दूकानों में बैठे हैं जहां देखना कठिन है सो सुन्दर २ मोती हीरा लाल आदि के

गहने बेंचते जिन से इंगलिस्तान की महारानी सुशोभित होती । वे बहुधा इन गहनों को तौल से बेंचते हैं और दूकान की पिछाड़ी में एक अंगरेजी लोहे का संदूक रहता कि जिस में बहुमूल्य वस्तु रक्खी रहती हैं।

अलखैर में प्राचीनकाल की एक सड़क।

पुरानी बस्ती में कहीं २ बड़ी हवेलियों के फाटक और बड़ी मसजिदें देखने में आती हैं। जैसा कि अयोध्या का अद्भुत वृत्तान्त रामायण में दिया जाता है वैसा ही अरब लोग अलखैर का गुण गाते हैं कि जिस ने खैर को न देखा उस ने जगत को न देखा उस की नील नदी आश्चर्य्य की है उस की सोने की जमीन है

उस की स्त्रियां काली आंखवाली परियों के समान हैं उस के घर राजभवन हैं उस की हवा कोमल उस की सुगन्ध चन्दन लकड़ी सी और मनभावन है। और ऐसा क्यों न होवे जब कि खैरू जगत की माता है। कहते हैं कि खैरू में ४०० मसजिदें हैं और उन में कितनी सुन्दर रीति से बनी हैं परन्तु आजकल वे बहुधा पुरानी हो गईं बरन उन में कितनी गिरती भी जाती हैं। लोग इस का एक कारण यह बताते हैं कि पहिले इन मसजिदों के लिये जमीन दिई जाती थी परन्तु आजकल बादशाह आप ही उस जमीन को ले लेता है। ऊपर सुलतान तूलम की मसजिद का चित्र दिखाई देता है जो हजार बरस बीते बनवाई गई। वह इस बात में प्रसिद्ध है कि नोकदार डाट पहिले इस के बनाने में काम आये। गढ़ के समीप सुलतान हसन की बड़ी मसजिद है जिस के बनाने के लिये बड़े पत्थर पिरमिद से लिये गये। यह मसजिद देखने योग्य है क्योंकि बाहर और भीतर नाना प्रकार से विभूषित है उस के भीतर हम रंगीन कांच की बट्टियां लटकी हुई देखते हैं जो सूरिया देश की बनी हुई हैं और सुलतान का नाम उन पर लिखा हुआ है। यह उन दिनों में बनीं जब कि कांच का बनाना नई बात थी परन्तु उन में कितनी टूट गईं और कितनी औरों की जंजीरें यहां लों जंग खाई हुई हैं कि गिरने पर हैं। खैरू के लोग इस मसजिद के बड़े गुण गाते हैं तौभी उस की ऐसी बुरी दशा है कि जिस से प्रगट है कि अपने धर्म्म की चेष्टा मन में बहुत कम रखते हैं। नई बस्ती अधिक विलायती प्रकार से बनी हुई है अर्थात उस की सड़कें सीधी और चौड़ी हैं और बहुत से घर अपने २ हाते में अलग बने हैं और बहुतों के पास अच्छी बारियां भी हैं जिन को पानी अच्छी रीति से पहुंचाया जाता है।

अलखैरू का गढ़ एक पहाड़ी के ऊपर बना है जो नगर की पूर्व ओर है। उस के ऊपर चढ़के मैदान और नील नदी का नीचान और नगर और बन अद्भुत रीति से दिखाई देते हैं और बीच में वह बड़े पिरमिद हैं जो पूर्वकाल से वहां खड़े हैं। यद्यपि दूर हैं तौभी वे इतने बड़े हैं कि छोटे देख पड़ते। इस गढ़ की नेव सन ई० ११७६ में सलाउद्दीन से डाली गई। ऊपर से हम उस दीवार को देख सकते हैं जिस के ऊपर से ममलूक का सरदार घोड़े सहित कूद गया जैसा ऊपर वर्णित हुआ। गढ़ के बीच में एक नई मसजिद है जो देखने योग्य है। उस के बनाने का आरंभ सन ई० १८४० में हुआ। उस के दो ऊंचे २ मीनार दूर से दिखाते हैं। भीतर एक चौकोण आंगन है जो ३५ पत्थर के खंभों से घिरा है और बीच में नहाने के लिये एक फौवारा है। फाटक जिस से लोग भीतर जाते

अलखेब की एक मसजिद।
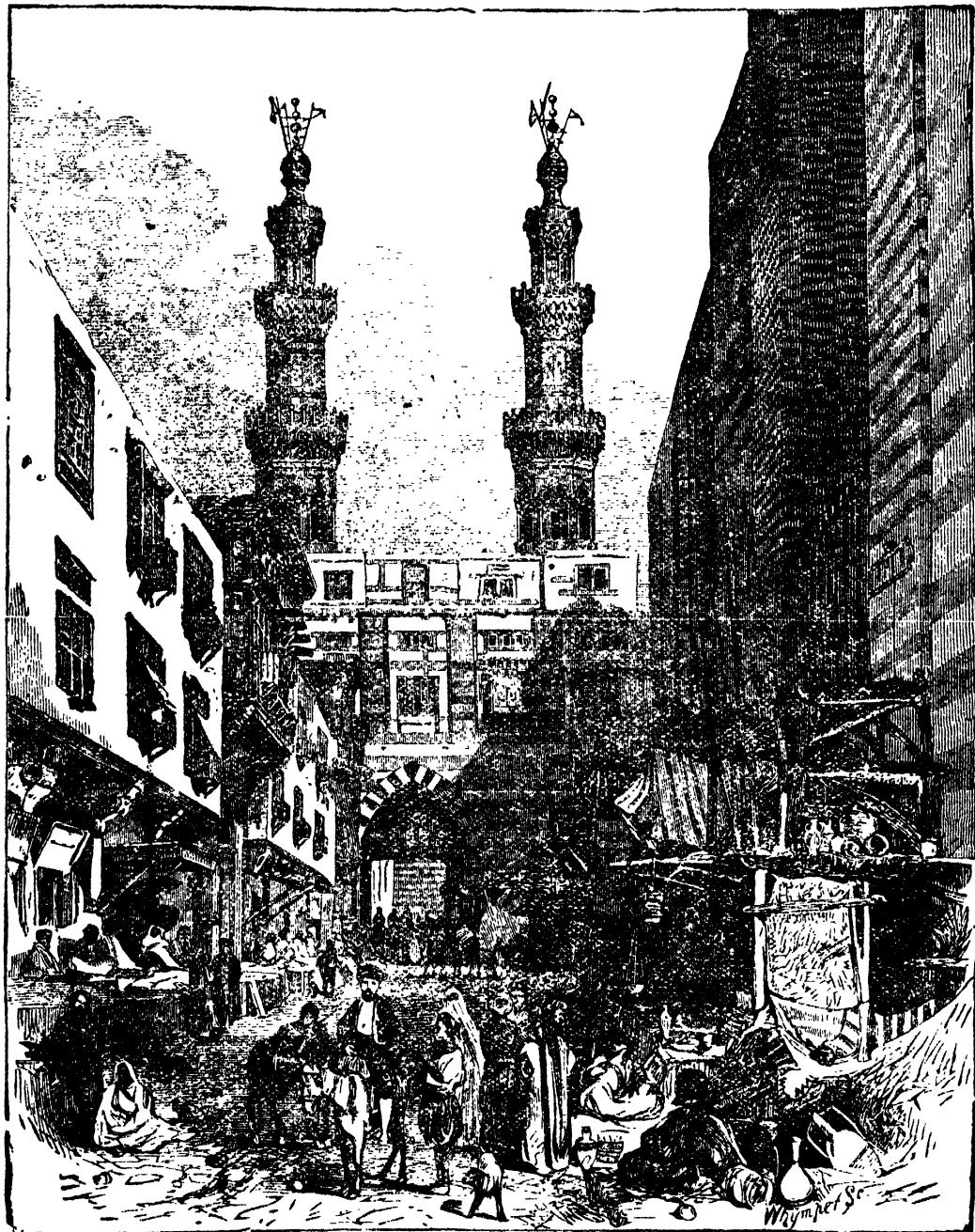
से पूरब ओर को है। अब भीतर की भीतें सुन्दर संगमरमर से विभूषित हैं। गढ़ में तोप बनाने के लिये दूकान है और हथियारों और सामग्री रखने के लिये

मलहैब का कब्रस्थान और खलीफा के मकबरे।
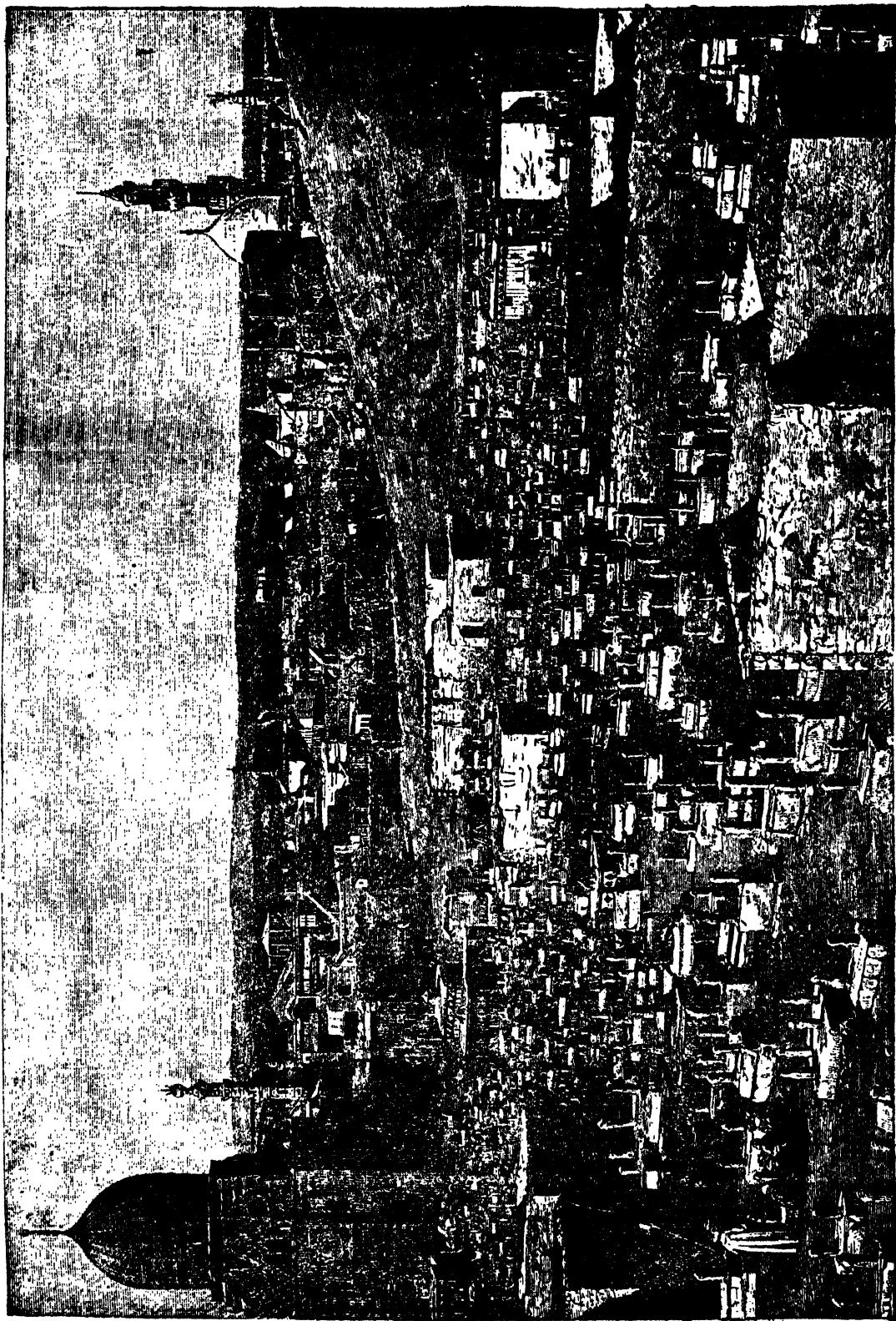
गोदाम। गढ़ के ऊपर चढ़के हम उस कबरस्थान को देख सकते हैं जहां मिस्र के खलीफा लोग पूर्वकाल में गाड़े गये। खैरू के समीप नील नदी में रोदा नाम दो मील लंबा एक टापू है जिस में अनेक धनवान मिस्रियों की हवेलियां और बारियां बड़ी सुन्दरता से बनी हुई हैं। इस टापू के तट पर नीलनाप नाम एक स्थान बना है जिस्से प्रगट होता कि नील का पानी कितना चढ़ा है और जिस से जाना जाता कि कटनी अच्छी वा बुरी होगी। खैरू के पच्छिम ओर बुलाक नाम एक बस्ती है जहां खैरू की नौकायें बान्धी जाती हैं। पहिले इस स्थान में एक कौतुकशाला बहुत देखने योग्य था जिस में प्राचीन मिस्र की अगणित बस्तें देखने के लिये रक्खी गई थीं परन्तु उस स्थान में गिलाई अधिक थी और वह बस्तें बिगड़ी जाती थीं सो अब वह कौतुकशाला गीजा नाम बस्ती में बनाया गया है। खैरू से ८ मील उधर की ओर वह स्थान है जहां पूर्वकाल में हीलीओपोलिस अर्थात सूर्य्य का नगर नाम मिस्रियों का बड़ा नगर बना था। यह नाम यूनानियों से उसे दिया गया। मिस्री लोग उसे ओन कहते थे। इस का कुछ वृत्तान्त बैबल में
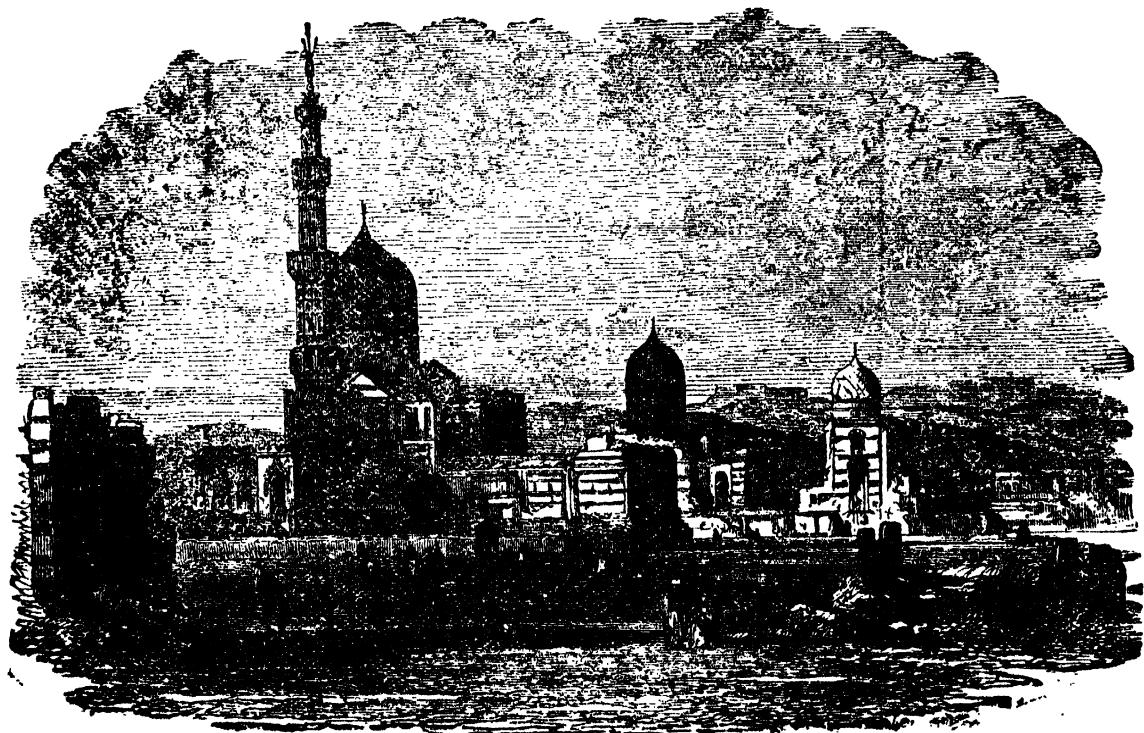
खलीफों के मकबरे।

पाया जाता है और यूसफ ने ओन के महायाजक की पुत्री को बिवाह लिया था। यह विशेष स्थान था जहां उन दिनों में मिस्रियों के पंडित रहते थे बरन यूनानी ज्ञानी लोग यहां पढ़ने को आया करते थे। अब उस का भवन कालिज मंदिर जो कुछ था सो जाता रहा और केवल एक पत्थर का खंभा अब लों खड़ा है। ऊपर बर्णन हुआ कि महारानी क्लियोपाट्रा ने दो बड़े खंभों को यहां से लेकर उन्हें सिकन्दरिया में खड़ा किया। खैरु से पांच मील दूर पर एक अद्भुत प्रकार

हीलिओपोलिस का पत्थर।

का बन है जिस की लकड़ियां सब पत्थर हो गई हैं। चारों दिशा बालू के मैदान और छोटी २ पहाड़ियों में उन बृक्षों के टुकड़े पड़े हुए दिखाई देते हैं जो इतने

कड़े हैं कि उन्हें यदि स्पात से मारो तो चिंगारियां निकलती हैं। यह टुकड़े पांच छ फुट लंबे पाये जाते हैं और कांच के समान टूटते हैं।

पिरमिद का वृत्तान्त।

पिरमिद अर्थात गावदुम आकार स्तंभ मिस्र में बहुत पाये जाते हैं और बहुत ज्ञानी लोग यह बिचार करते हैं कि यह राजाओं की कबरों के लिये बनाये गये थे। नीचे वे चौकोन हैं और ऊपर नोक में समाप्त होते हैं। मेमफिस नाम उस पुराने नगर के समीप जो खैरू के समीप बना था सत्तर ऐसे स्तंभ पाये जाते हैं। पिछले मिस्री बादशाह इन को कम चाहते और और प्रकार के स्थानों में दफनाये जाते थे। तीन पिरमिद जो अधिक बड़े और प्रसिद्ध हैं सो खैरू से दस मील दूर पर नील नदी पार बने हैं और ज्ञानी लोग कहते हैं कि उन में चौथे घराने के तीन बादशाह अर्थात कूफू और कफरा और मेनकारा दफनाये गये थे। सब से बड़ा पिरमिद अर्थात कूफू का ३३ बीघे जमीन पर खड़ा है। नीचे वह चौकोण है और ७४६ फुट लंबा चौड़ा है। पहिले वह ४८० फुट ऊंचा था परन्तु उस में से बहुत पत्थर निकाल लिये गये हैं। अब उस की ऊंचाई ४५० फुट है। उस की चारों बगलें ठीक पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन को हैं। उस के बाहर २०६ सीढ़ियां हैं जिन के द्वारा आदमी ऊपर चढ़ सकता है परन्तु चढ़ना कठिन है क्योंकि एक २ सीढ़ी दो से पांच फुट तक ऊंची है। एक अरबी पंडित लिखता है कि पहिले वह ऊपर अच्छे २ कटे हुए पत्थरों से ऐसा पटा था कि दो २ पत्थरों के बीच में छूरी डालना अनहोना था और पतले २ गारे से यह जोड़े गये थे और इन पत्थरों के ऊपर बहुत बचन खुदे हुए थे परन्तु यह गढ़े हुए पत्थर किसी काल में दूर किये गये। हिरादतस यूनानी इतिहासरचक कहता है कि इन पत्थरों में से एक पर यह लिखा था कि इस के बनानेवाले मजूरों को पियाज और मूली और लहसुन के मोल लेने के लिये १६०० चांदी की थैलियां दिई गई थीं। ऊपर की नोक अब जाती रही है और अब ऊपर ३२ फुट चौकोण एक चबूतरा पाया जाता है। चारों दिशा जहां पहिले मेमफिस नगर के गृह और मंदिर खड़े थे और जहां हजारों याजक लोग अपने देवताओं को चढ़ावा चढ़ाते थे अब केवल बालू का मैदान है जिस के बीच में नील नदी बहती है और जिस के उस पार खैरू की हवेलियां दिखाई देती हैं। दूसरा पिरमिद

पहिले से छोटा है अर्थात उस की लंबाई चौड़ाई ६९० फुट और उस की ऊंचाई ४४७ फुट है। तीसरा पिरमिद इन दोनों से छोटा है अर्थात उस की लंबाई चौड़ाई ३५२ फुट है और उस की ऊंचाई २०३ फुट।
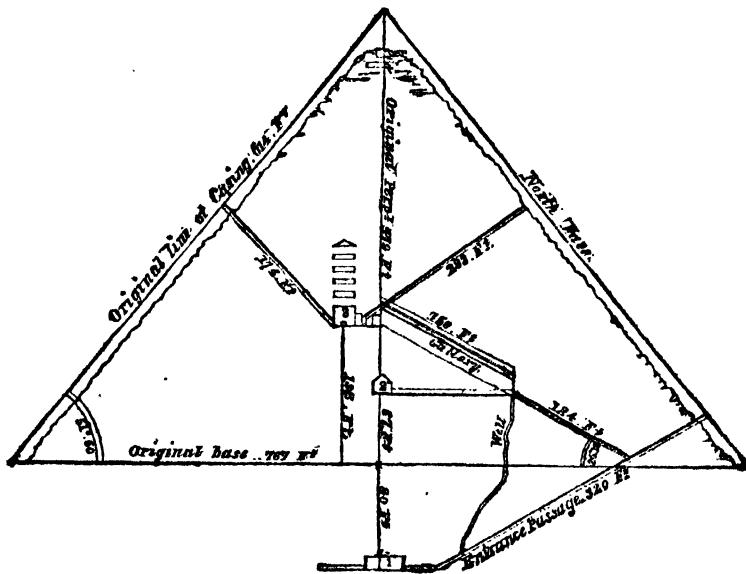
बड़े पिरमिद के भीतर का नकशा।

पूर्वकाल में प्रगट है कि कोई बड़े पिरमिद के भीतर प्रवेश न पा सकता था यद्यपि ऐसा हो सकता है कि याजक लोग ऐसा कोई पत्थर जानते थे जिस को सरकाके सीढ़ी पा सकते थे। भीतर जाने का मार्ग बना था परन्तु बाहर छिपा हुआ था। आजकल वह मार्ग फिर खोल दिया गया है। जमीन से ४० फुट ऊंचा चढ़के एक स्थान मिलता है जहां से प्रवेश पा सकते। ३२० फुट आगे बढ़के उस भीतर की कोठरी में पहुंचते हैं जहां बादशाह दफनाया गया होगा। वह मार्ग ४ फुट ऊंचा और चौड़ा है परन्तु एक समान नहीं बना न वह सीधा है। बादशाह की कोठरी में पहुंचने से पहिले वह मार्ग बहुत बड़ा हो जाता अर्थात उस में एक स्थान है जो १२० फुट लंबा और २८ फुट ऊंचा है जो ऊपर की ओर चढ़ता है। इस के नीचे से दूसरी कोठरी तक जिस को रानी की कोठरी नाम देते हैं एक और मार्ग बना है। बादशाह की कोठरी पिरमिद के बीच से कुछ थोड़ी हटके है और उस के ऊपर पांच खाली कोठरियां बनी हैं जिस्तें गृह का भार कम हो जाये। यहां से दो आठ इंच चौकोण मार्ग बाहर तक बने हुए हैं कि जिन से

पवन आया जाया करे । बादशाह की कोठरी ३५ फुट लंबी १७ फुट चौड़ी और १९ फुट ऊंची है और चारों ओर के पत्थर ऐसी अच्छी रीति से जुटे हुए हैं कि देखनेहारे आश्चर्य्य करते । लाल पत्थर की बड़ी भारी कबर पाई गई परन्तु खाली पड़ी थी न उस का कोई ढंकना था न बाहर भीतर कुछ भी लिखा था पर एक खाली कोठरी में कूफू बादशाह का नाम लिखा हुआ पाया गया कि जिस से यह पिरमिद कूफू का कहलाता है । रानी की कोठरी छोटी है और उस में चलना सहज है ।

पिरमिद की चढ़ाई ।

साहिब लोगों का दस्तूर है कि बड़े पिरमिद के ऊपर चढ़ते हैं परन्तु ऐसी सीढ़ी जिस के पत्थर तीन चार फुट ऊंचे होते हैं चढ़ना कठिन है इस लिये दो अरब यात्री के हाथों को पकड़के उसे शीघ्र ऊपर तक खींच लाते हैं बरन जभी कोई साहिब दूर से आते दिखाई देता है तब बकशिश २ पुकारते हुए अरब लोग उस पास दौड़ते हैं। चित्र में हम देखते हैं कि एक लड़की हाथ में पानी की सुराही लिये हुए खड़ी है जिस्तें साहिब को पानी पिलावे। ऊपर से देखना बहुत ही अच्छा लगता है। उत्तर पश्चिम जहां लों दृष्टि पहुंचती तहां लों मिस्र का फलदायक मैदान है जिस के बीच में नदी बहती है और पूरब ओर को अल-खेह नगर है और पश्चिम को लिबिया की मरुभूमि है। हरादतस यूनानी इतिहास-रचक यह कहता है कि इस पिरमिद के बनवाने में १,00,000 मनुष्य बेगार पकड़े और लगाये गये थे और कि वे तीन २ महीने के पीछे बदले गये थे।

दूसरा पिरमिद इस बात में प्रसिद्ध है कि उस में वेही पत्थर जिन से वह पाटा गया था अब लों हैं परन्तु बड़े पिरमिद में से यह पत्थर नगर के बनवाने के लिये निकाल लिये गये हैं। वह पत्थर कि जिस से तीसरा पिरमिद पहिले विभूषित था अब लों ३0 फुट ऊंचे लों बना है कि जिस से उस का नाम लाल पिरमिद प्रसिद्ध है।

स्फींक्स का वृत्तान्त।

उस मार्ग में जो पिरमिद की ओर जाता है मानो द्वारपाल के लिये स्फींक्स नाम एक बहुत प्रसिद्ध मूर्त्ति धरी है। मूर्त्ति का रूप यह है कि आदमी का सा सिर और छाती और सिंह का सा धड़ और पांव रखती है मानो उस में आदमी का सा ज्ञान और सिंह की सी सामर्थ्य है उस के समीप ६0 फुट लों नीचे तक चटान कटाके दूर किया गया था और मूर्त्ति वैसही चटान से कटी हुई छोड़ी गई। सन १८१७ ई0 में इतना बालू उस के ऊपर एकट्ठा हुआ कि केवल सिर और गला जमीन के ऊपर दिखाई देता था। आजकल बालू दूर किया गया है और सकल मूर्त्ति दिखाई देती है। वह नदी की ओर देखती और उस की ओर पांव फैलाये मानो बड़े बिश्राम से पड़ी है उस का मुंह कुछ हबशियों का सा है जैसा प्राचीन मिस्रियों का था परन्तु मुख अरब लोगों के बाण मारने और बर्छी डालने से बहुत बिगड़ गया है उस की डाढ़ी के कितने टुकड़े समीप पड़े २ मिल गये हैं
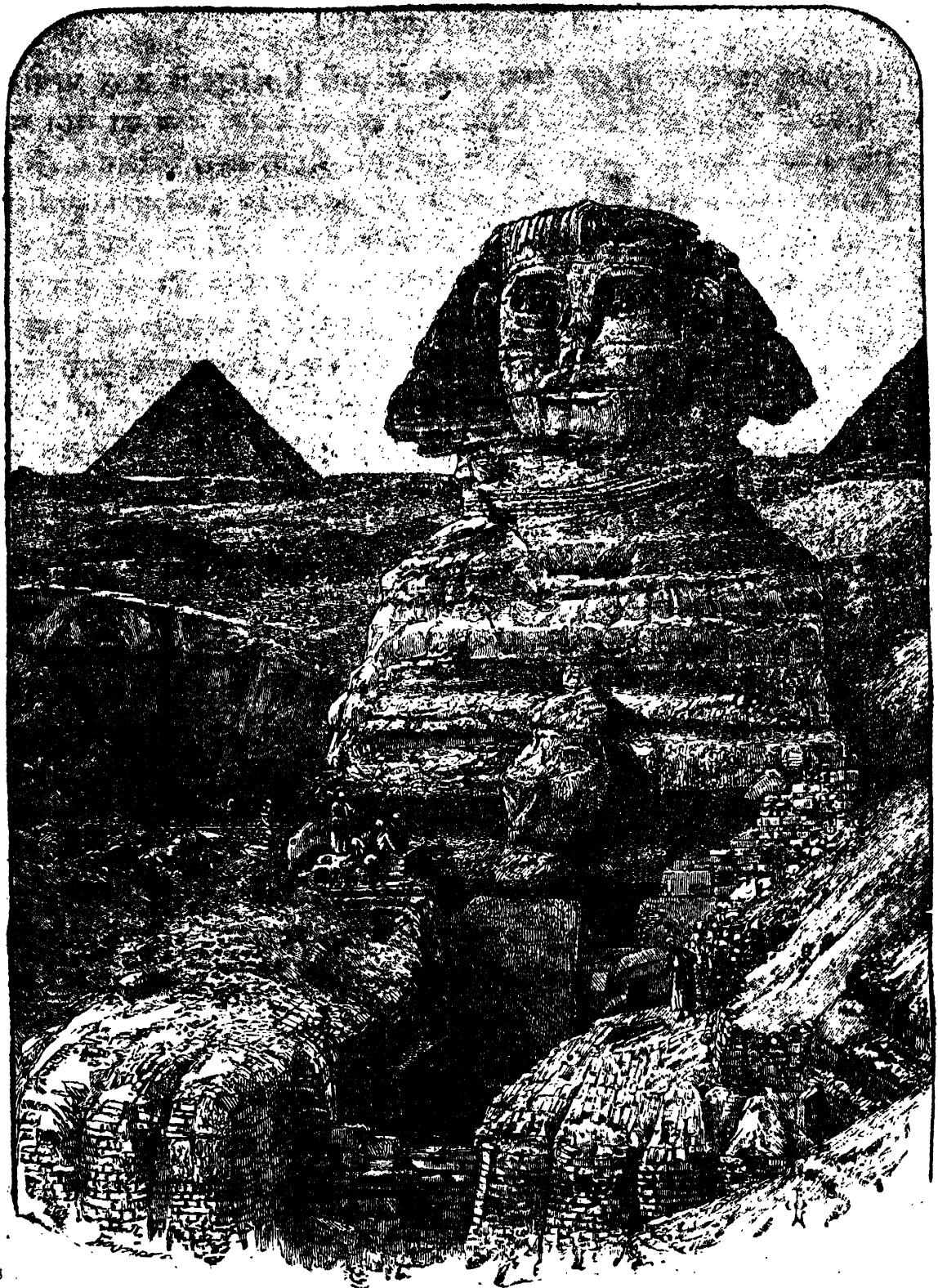
और गालों पर लाल रंग के कुछ चिन्ह देखने में आते हैं। सिर के ऊपर प्राचीन-काल में किसी प्रकार का मुकट वा टोपी थी जिस का केवल नीचे का भाग अब रह गया। अरब लोग इस मूर्त्ति को भय का पिता अर्थात अति भयंकर कहते हैं परन्तु प्राचीनकाल में उस का नाम होर-यम-को था अर्थात उठनेहारा सूर्य्य जो महाराजों का नाम प्रसिद्ध था। मूर्त्ति की ऊंचाई सिर की चोटी लों ७० फुट है देह उस की १४० फुट लंबी और उस के पांव ५० फुट लंबे और आगे को बढ़े हुए हैं। पहिले इन पांवों के बीच में एक बेदी बनी थी जिस पर मूर्त्ति के आगे चढ़ावे चढ़ाये जाते थे। प्रगट है कि यही मूर्त्ति थीब्स के राज्य की इष्ट देवी समझी जाती थी। रामसेज जो मिस्र के प्राचीन बड़े महाराजों में एक था सो इस मूर्त्ति का पुजेरी था और उस पर ऐसे बचन खुदे हुए हैं जिन से यह जाना जाता है कि उस की पूजा रूमियों के दिन तक होती थी। आगे की सीढ़ी पर एक छोटा गृह बना है जिस पर सिबरिस बादशाह का नाम है जो सन ई० २०२ में मिस्र को देखने आया। मूर्त्ति के साम्हने चटान दूर तक अद्भुत परिश्रम से दूर किया गया है और मूर्त्ति के साम्हने ऊंचा चबूतरा है जिस पर चढ़ने के लिये ४३ सीढ़ी बनी हैं वहां खड़े होके मूर्त्ति का रूप बहुत भयंकर देख पड़ता है वह ज्यों २ पुजेरी सीढ़ी से उतरके अपने चढ़ावे के चढ़ाने के लिये नीचे जाता था त्यों २ मूर्त्ति और भी भयं-कर उस के सिर के ऊपर ठहरती थी। प्रगट नहीं कि मूर्त्ति कब बनी परन्तु बहुत ही प्राचीन होगी उस की बड़ी खुली हुई आंखें बहुत से फिराऊन बादशाहों को और इब्रानी ब्योपारियों को और रूमी कैसरों को और फारसी सेनापतियों को और यूनानी ज्ञानियों और अरबी योद्धाओं को देख चुकी हैं। रामसेज ने उस की पूजा किई मूसा ने उस पर दृष्टि किई मसीही शिष्य उस की छाया में रहते थे। नपोलियन ने उस के साम्हने लड़ाई किई अंगरेज अपने जहाजों में उस के आगे से चले गये इन हजारों बरसों में उस के आगे क्या २ अद्भुत बातें बीत गईं और तौभी यह ठीक और अचल बनी रही।

मेमफिस नगर का वृत्तान्त।

अलखैह नगर से १५ मील दूर पर मेमफिस नाम एक बड़ा नगर बना था। वह बादशाह लोग जिन के दफनाने के लिये पिरमिद बने थे सो मेमफिस के बादशाह थे। मिस्री कहते हैं कि मेनेज जो पहिले घराने का पहिला बादशाह था इस की

ऐबिस पक्षी।

नेव डालनेहारा था। कहते हैं कि जहां नगर बना है तहां पहिले नील नदी बहती थी परन्तु बादशाह ने उस को हटाया और बांध बांधा कि पानी उस स्थान पर फिर न चढ़े। मेमफिस कई सौ बरस लों अर्थात छठवें घराने के बादशाहों के दिनों लों बहुत विख्यात नगर रहा तब से बहुत दिन लों घटता गया। प्रगट है कि जब हिकसोज लोगों ने पूरब से आकर देश को अपने बश में कर लिया अर्थात तेरहवीं सदी में मसीह से पहिले तब यह उन का मुख्य नगर हुआ। मसीह से छः सौ बरस पहिले वह फिर बहुत बलवन्त हो गया जब लों कि संहरिब बाबुल के बादशाह ने उसे अपने बश में न कर लिया। उन दिनों में उस के कितने मंदिर बहुत बड़े और देखने योग्य थे। जब कम्बाईसेज फारस के बादशाह ने मिस्र पर चढ़ाई किई अर्थात मसीह से पहिले ५२५ में तब ऐसिस नाम देवते के नाम पर एक बहुत प्रसिद्ध नया मंदिर बनाया गया था कि जिस में एपिस नाम वह सांड़ जिस की पूजा किई जाती थी रहता था। सिकन्दर महान ने इस मन्दिर में आकर सांड़ की पूजा किई और जब सिकन्दर मरा तब तालमी बादशाह ने उस की लोथ को पहिले इस नगर में पहुंचाया और फिर उसे सिकन्दरिया में ले गया मेमफिस के हर एक घरों में से एक पत्थर खोदके दूसरे स्थानों में घर बनवाने लगे परन्तु तेरहवीं सदी लों यहां बहुत घर दिखाते रहे परन्तु भरते २ बालू इतना ऊपर चढ़ गया कि दूसरे रामसेज की प्रतिमा को छोड़ वहां थोड़ा देखने में आता था जब लों आजकल लोग फिर बालू दूर न करने लगे। वह प्रतिमा पत्थर की बनी हुई ५० फुट ऊंची और बहुत अच्छी रीति से काढ़ी हुई है परन्तु गढ़े में गड़ी है जिस पर जब नदी में बाढ़ आती तब पानी चढ़ जाता है।

थोड़े दिन हुए किसी ने देखा कि इस स्थान के बालू में से किसी पत्थर की प्रतिमा का सिर निकला आता है। सर्कार ने उस स्थान पर मजूरों को लगाके ७० फुट गहिरे बालू को दूर कर दिया और क्या देखते हैं कि १४१ पत्थर की स्फींक्स मूर्त्तें रक्खी हुई हैं और बहुत औरों के स्तंभ आदि पड़े हुए हैं जो पांति की पांति एक कबर और एपिस देवता के मंदिर के आगे प्राचीनकाल में रक्खे हुए थे। मंदिर तो जाता रहा परन्तु कबर अब लों बनी है। उस में तीन भाग हैं और उन में से

एक भाग ४०० गज लंबा है। इस में एक कफन इतने बड़े पत्थर का बना हुआ धरा है कि उस में पांच आदमी समा सकते हैं। प्रगट है कि यह वह कफन है कि जिस में उस सांड़ की लोथ रक्खी गई थी। मेमफिस के समीप जमीन में सैकड़ों गुफे हैं कि जिन में वे लोग ऐबिस नाम पक्षी की लोथों को जिन को पूजते थे रक्खा करते थे। इन में करोड़ों पक्षियों की हड्डियां पाई जाती हैं। मेमफिस के समीप के बालूमय मैदान में एक कबरिस्थान साढ़े चार मील लंबा है कि जिस में प्राचीनकाल के अगणित मिस्री गाड़े गये थे और उस के बीच में सकारा नाम के पिरमिद बने हुए हैं। ज्ञानवान कहते हैं कि फिराऊन बादशाह जिस समय कि मूसा और हारून उस पास आके बिन्ती करते थे कि इस्राएलियों को जाने दीजिये वहां रहा करता था।

नील नदी में सैर करना।
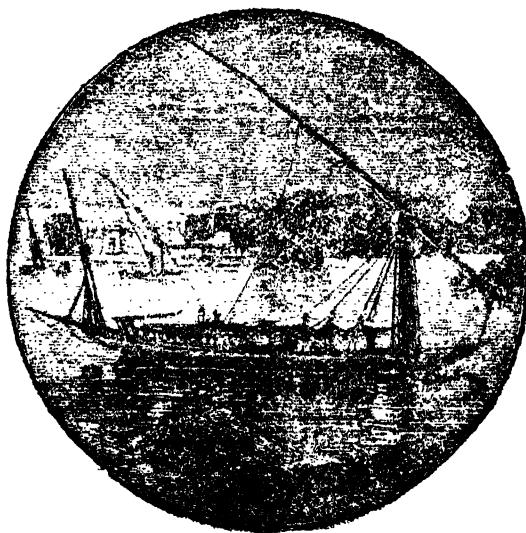
दहाबिया अर्थात नील की नौका।

प्रगट नहीं कि किस समय से लोगों ने नील नदी में नौका में सवार होके चलने का आरंभ किया। उस में चढ़ने के लिये एक बात लाभदायक है कि बहुत समय लों हवा दक्खिन की ओर बहती रहती है सो लोग पाल के बल से ऊपर चढ़ जाते और तब धारा के बल से लौटके आते हैं। भार ले जाने के लिये अनेक प्रकार की नौकायें हैं परन्तु वह जिस में साहिब लोग अधिक जाते हैं डहाबिया नाम से

प्रसिद्ध है। इन पर पाल के लिये लंबा मस्तूल है और ऐसी कोठरियां भी हैं जिस में दो से लेकर आठ लों बिश्राम कर सकते हैं। बहुधा उस में दो कोठरियां रहतीं अर्थात एक जिस में भोजन पकता है और दूसरी जिस में लोग बैठते और रात को सोते हैं। पूर्वकाल में ऐसी नौकायें कभी २ बहुत बड़ी और सोना चांदी से विभूषित होती थीं। आजकल अग्निबोट नील नदी में बहुत चलते हैं और एक रेलवे भी नदी के तट पर बनी है।

खेत की रक्षा।

नील नदी पर ७० मील दक्खिन की ओर चलके पच्छिम के पहाड़ नदी से हटे हैं और वहां एक मैदान है फैयून नाम जो मिस्र के सब मैदानों में फलदायक है । इस मैदान के सींचने के लिये २०७ मील लंबी एक नहर खोदी गई है जो असीयूट नगर के समीप नील से निकलती और फैयून में पानी पहुंचाती जहां बहुतेरी छोटी २ नहरों के द्वारा से जल खेतों को दिया जाता है । यह नहर प्राचीन है और बहर यूसफ नाम से प्रसिद्ध है । प्रगट नहीं कि वह यूसफ के दिनों में बनी वा पीछे से बनी है ।

समस्त मिस्रियों की जीविका मानो नील नदी से प्राप्त होती है वह नदी सैकड़ों कोस तक बालूमय जंगल में बहती है जहां बड़ी धूप भी पड़ती है तौभी आफ्रिका के बीच में ऐसी भारी झीलें हैं और वहां इतना पानी बरसता है कि नील नदी कभी सूखती नहीं । किसानों का विशेष काम यह है कि रात दिन रहट और डोल चलाया करते हैं और खेतों में पानी दिया जाता क्योंकि मिस्र में बहुत थोड़ा पानी बरसता है ।

नील की सैर करते अगणित पक्षी चारों ओर दिखाई देते हैं बगुले बत्तक राजहंस सारस गगनभेड़ चील्ह कबूतर आदि झुंड के झुंड तीरों पर रहते हैं वा टापुओं में एकट्ठे होते हैं वा ऊपर को उड़ते हैं । जैसा हिन्दुस्तान में खेत बचाने के लिये मचान बांधे जाते जिन पर लड़के दिन भर रहते और गोफन से पत्थर चलाके पक्षियों को उड़ाते हैं और वे उन के मारने में बहुत निपुण हो जाते हैं । नौकाओं के मल्लाह लोग बड़े गवैये हैं । उन की यह रीति है कि चाहे खेवते हों वा नौका की रस्सियां खींचते वा बेकाम नौका पर बैठे हों तो ताली बजा २ के वा ढोल बजाके ऐसा कोई बे मतलब का गीत घंटे भर गाते रहेंगे जैसा यह । मैं जल्दी आस्यूट में पहुंचने चाहता हूं । हे अल्लाह हे मेरे नबी मैं अपने लिये नई टोपी मोल लेऊंगा । हे अल्लाह हे मेरे नबी आज हवा बड़े जोर से बहती है । हे अल्लाह हे मेरे नबी इत्यादि ।

नील नदी में दरियाई घोड़े बहुत पाये जाते और बहुत मिस्री बर्छी से उन का शिकार भी करते हैं । इस चित्र में हम देखते हैं कि वे बर्छी में रस्सी बांधके उस को मारते हैं और इसी रस्सी के बल से उन की डोंगी खींची जाती है ।

उन पहाड़ियों में जो कहीं २ नदी के दोनों तीरों के समीप हैं बहुत सी गुफायें खुदी हुई दिखाई देती हैं । पहिले यह कबर के लिये खोदी गई थीं परन्तु पीछे जब लोग मसीही धर्म्म को मानने लगे तो बहुत से लोग घरों को त्यागकर उन में जाके रहने लगे ।

दरियाई घोड़े का शिकार।

बेनीहसन नाम खैरू नगर से १६० मील दूर पर बसा है ऐसे पत्थर के घर उस में बहुत हैं और चटान पर हर कहीं चित्र खींचे हुए हैं कि जिन में उन दिनों का बहुत जीवन बृत्तान्त प्रगट किया जाता है।

आस्यूट नगर ऊपरवाले मिस्र का सब से बड़ा नगर है। उस में और खैरू में २५० मील की रेलवे बनी है। उस की बाजारों में बड़ा अन्धेरा है तौभी उन में बहुत ही लेनदेन हुआ करता है। उस में अमेरिकन मिशन का एक कालिज है जिस में बहुत से शिक्षक और उपदेशक पाये जाते हैं। आस्यूट में कितनी बड़ी २ मसजिदें भी पाई जाती हैं। जब हम नगर के फाटक के बाहर जाते हैं तब हम झट लिबिया की बड़ी मरुभूमि में प्रवेश करते हैं। आगे की पहाड़ियों की बगलों में बहुतेरी कबरें खोदी हुई हैं और इन में भेड़ियों की अगणित लोथें पाई जाती हैं जिन में मसाला भरा हुआ था। प्राचीनकाल में यहां भेड़ियों की पूजा किई जाती थी और इस लिये नगर का नाम भेड़ियों का नगर प्रसिद्ध था। चारों ओर के मैदानों में मनुष्य की प्राचीन लोथें पड़ी हुई हैं।

जब यात्री अबैदास नगर में अर्थात खैरू से ३५० मील दूर पहुंचता है तब पहिले प्राचीन मंदिर देखने में आता है। यह बहुत ही प्राचीन नगर था और

नील नदी की सैर ।

थीब्स से थोड़ा छोटा परन्तु २००० बरस से उजाड़ पड़ा है । एक मंदिर ओसैरस देवता के नाम पर प्रसिद्ध है । दूसरा मंदिर सेती बादशाह से जो रामसेज दूसरे का पिता था बनाया गया था । चारों ओर की भीतों पर बहुत से चित्र पत्थर में काढ़े हुए हैं जिन में बादशाह के विशेष कार्य्य दिखाये जाते हैं । किसी में देवताओं की पूजा कर रहा है किसी में अपनी सेना सहित शत्रुओं को भगाता है किसी में अपने पुर्खों का आदरसन्मान करता है किसी में नाना प्रकार का शिकार करता है । इन मंदिरों की चारों दिशा मैदानों में कबरें फैली हुई हैं जैसा कि बहुतेरे और स्थानों में दस्तूर है । लोग अपने पावन तीर्थों के समीप अधिक दफनाये जाते थे ।

यहां पर वही पत्थर पाया गया जो अबैदास की तख्ती नाम से प्रसिद्ध है जिस में मिस्रियों के अठारहवें घराने का बर्णन पाया जाता है और जिस्से मिस्र देश की दशा बहुत प्रगट होती है । यह तख्ती आजकल फ्रान्स देश में रक्खी हुई है ।

अबैदास से ऊपर चढ़के शेख शेलिम नाम एक मुसलमान साधू का स्थान है जिस के विषय मल्लाह लोग यह कहते हैं कि वह कभी न खाता पीता न सोता है बरन रात दिन प्रार्थना और ध्यान करने में समय बिताता है । मल्लाह लोग आते जाते उस की दूकान पर ठहरते और उस से आशीष मांगते हैं जिस्तें यात्रा करने में जहाज को हानि न होवे ।

डंडेरा का मन्दिर ।
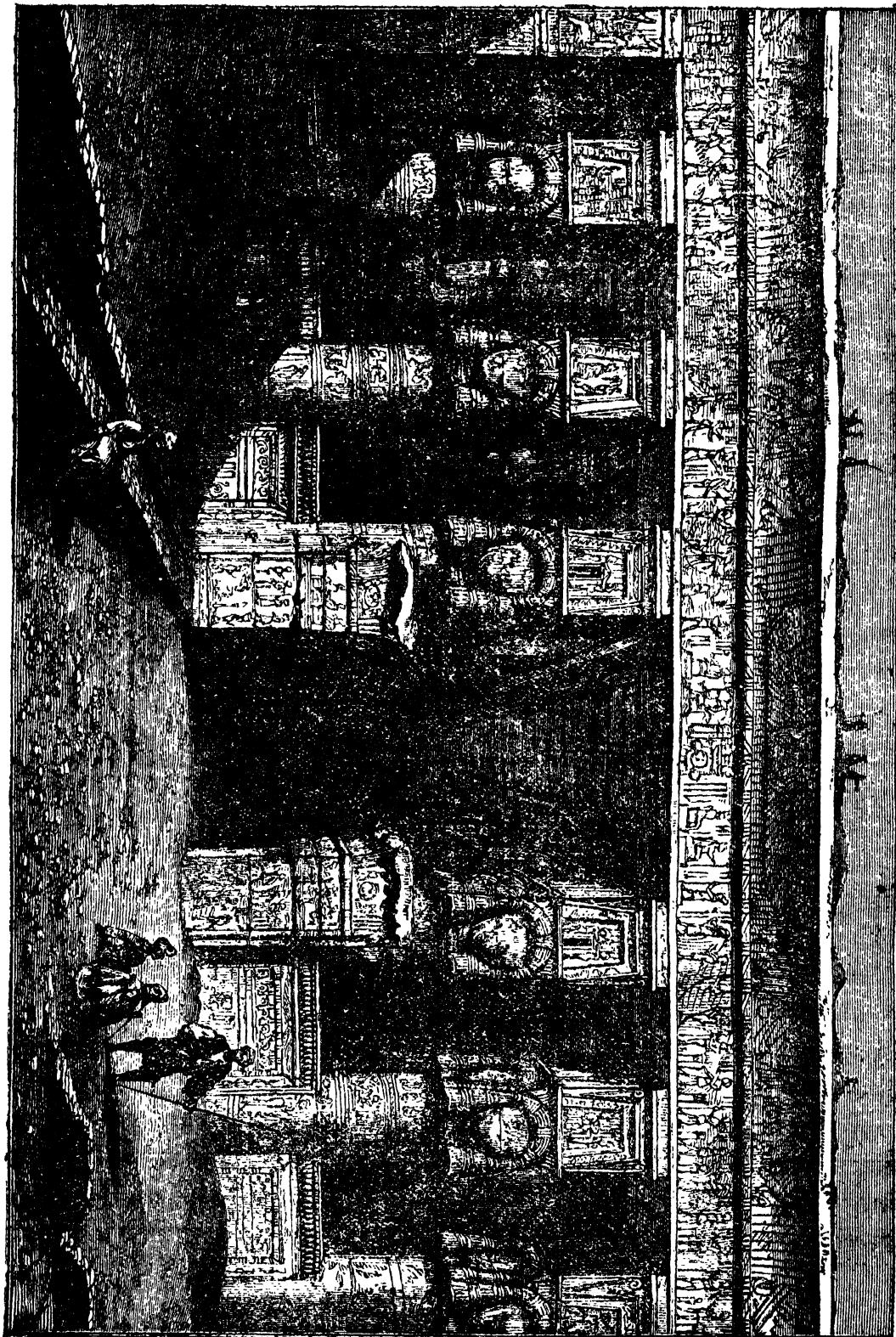
डंडेरा में जो कि अबैदास से सात मील आगे है एक मंदिर है जो मिस्र के प्राचीन मंदिरों में बड़ा और अच्छी रीति से बचा हुआ है। इस चित्र में हम उस के आगे के बड़े बरामदे को देखते हैं जो चौबीस बड़े २ पीलपायों पर बना है। कहते हैं कि क्लियोपाट्रा महारानी ने इस के बनाने का आरंभ किया और कि उस में उस की कितनी प्रतिमा दिखाई देती हैं परन्तु किसी में उस की ऐसी सुन्दरता नहीं देखने में आती जैसा कि उस की बताई गई है। यह मंदिर अथोर देवता के नाम पर बनाया गया है। प्राचीनकाल के इस नगर के निवासी इस बात में विख्यात थे कि और मिस्रियों के समान मगरमच्छ को पूजते न थे बरन इस के विरुद्ध उस से घिन करते थे सो एक बार उन में और ओमबास नगर के निवासियों में जहां मगर की पूजा होती थी भारी लड़ाई हुई।

थीब्स नगर का वृत्तान्त।
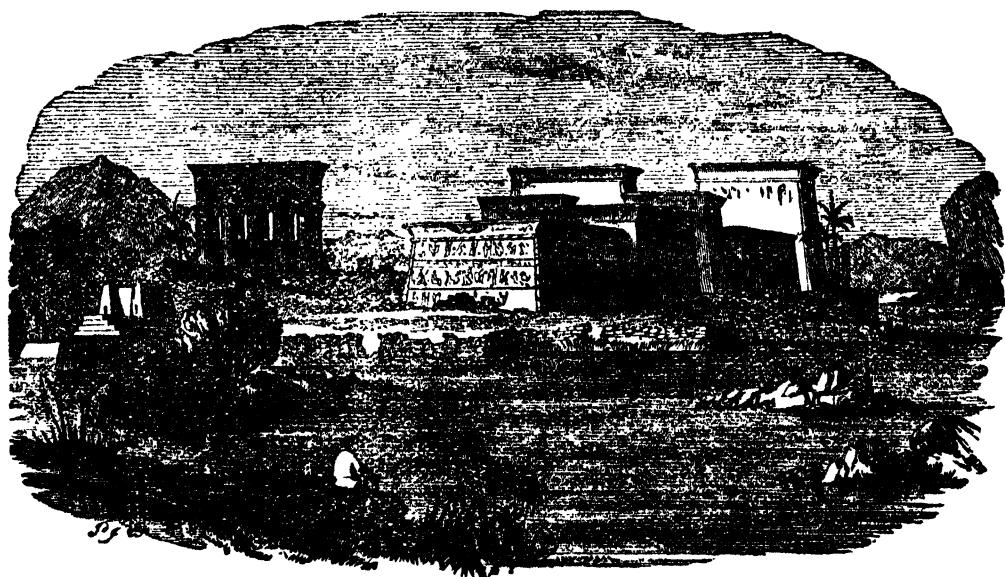
थीब्स के कई मन्दिर।

मेमफिस मिस्र देश का पहिला मुख्य नगर था और थीब्स दूसरा था। वह खैरु से ४५० मील उत्तर की ओर है अर्थात नील नदी के ऊपर चढ़के। उस की नेव ५००० बरस बीते डाली गई अर्थात उस समय से जब रूम नगर की नेव डाली गई १२०० बरस पहिले और १५०० बरस लों उस का बड़ा बिभव बना रहा।

होमर जो यूनानियों का बहुत प्रसिद्ध अन्धा कवि था उस ने उस का ऐसा वर्णन किया कि थीबस के १०० फाटक हैं परन्तु यह उस के मंदिरों के फाटक रहे होंगे क्योंकि नगर दीवार से नहीं घिरा था। उन दिनों में जब उस की महिमा अधिक थी तब कहते हैं कि उस का महाराजा २0,000 युद्ध की गाड़ियां सहित लड़ाई को जाता था। नगर का पहिला नाम थाएप था परन्तु यहूदी लोग उस को नोअमोन नाम देते थे क्योंकि यह उस के इष्ट देवता का नाम था। जब नहूम नबी निनवा के निवासियों को समझाता था तब उस ने उन से पूछा कि क्या तुम लोग नोअमोन के निवासियों से अच्छे हो जो नदी के ऊपर रहते थे जो उस के पानियों से घिरे हुए रहते थे तौभी वह नगर गिरा और उस के निवासी दूर देश में पहुंचाये गये। सन मसीह से पहिले ११00 बरस मुख्य नगर दूसरे स्थान में बनाया गया और तब से थीबस की बड़ाई जाती रही। पहिली ई0 सदी में कितने रूमी और यूनानी यात्री लोग उस स्थान को देखने गये परन्तु उस समय में स्थान उजाड़ पड़ा था।

जहां नगर बना था तहां पहाड़ियां दोनों ओर नदी से कट जातीं और चौड़ा मैदान छोड़ देती हैं और उस मैदान में प्राचीन गृहों के ऐसे चिन्ह देखने में आते हैं जिन के देखने से यात्री आश्चर्य्यित होते हैं। बड़े २ फाटक १00 फुट ऊंचे हैं जिन के द्वारा उन दिनों में बादशाह और प्रधान और याजक उन भवनों और मंदिरों के पास जो पीछे बने थे प्रवेश पाते थे और फाटकों के आगे कई मीलों तक मूर्त्ते और प्रतिमा पांति की पांति दोनों ओर खड़ी थीं जिन के अनेक चिन्ह आज लों देखने में आते हैं। जो गृह आज लों रहे हैं वेही अपने स्थानों में पाये जाते हैं जिन में एक स्थान नदी की पच्छिम ओर है जहां चार मंदिर अब लों हैं दूसरे और तीसरे स्थान नदी की पूरब ओर हैं और एक कर्नाक और एक लकसार नाम से प्रसिद्ध हैं।

जब यात्री नदी की पच्छिम ओर को जाता है तब एक बड़ा गृह देखता है जिस में मंदिर और भवन दोनों थे और जो रामिसियम वा मेनोनियम नाम से प्रसिद्ध है। यह नाम इस लिये दिये गये कि यह मंदिर रामसेज दूसरे से जो अपने को मियमोन अर्थात अमोन का प्यारा कहता था बनाया गया और यूनानी लोग इस नाम को मेमनोन में बदलते थे और यों यह नाम हम तक पहुंचा है।

इस मंदिर की भीतों पर बहुतेरे चित्र हैं जिन में रामसेज के विशेष कार्य्य प्रगट किये जाते हैं। किसी में अपनी भारी सेना सहित निकल जाता है। किसी

में बहुत से शत्रुओं को नाश करता है। किसी में अपने प्रधानों के हाथ से दूर देशों की लूट को ग्रहण करता है। किसी में प्रजा पर न्याय कर रहा है। मानो जगत भर में कोई बादशाह न रहा जो उस के सन्मुख खड़ा रह सके। सब के ऊपर रामसेज की बड़ी पत्थर की प्रतिमा झूम रही थी परन्तु आजकल बीच में पड़ी है। कांधे से कांधे लों उस प्रतिमा की चौड़ाई २२ फुट है और एक उंगली का नाप ३ फुट लंबा है। सन ई० १८८१ में इस महात्मा बादशाह की मसाला भरी हुई लोथ पाई गई सो हम उन आंखों को देख सकते हैं जो इस मंदिर के बनाने पर दृष्टि करती थीं। उस बड़े मंदिर के समीप कई एक और मंदिर देखने में आते हैं जो मदीनतअबू नाम से प्रसिद्ध हैं। उन में जो बड़ा है सो रामसेज तीसरे से बनाया गया जो मिस्र के बड़े विजयी बादशाहों में पिछला था। वह सन मसीह से बारह सौ बरस पहिले राज्य करता था।

मेमनोम की मूरतें।

मदीनतअबू के मंदिरों के आगे नदी के तीर पर दो अद्भुत भारी २ पत्थर की प्रतिमा खड़ी हैं। प्राचीन काल में आमेनोफिस तीसरा नाम बादशाह का

बड़ा मंदिर यहां बना था और उस के जाने के मार्ग में १८ ऐसी प्रतिमायें अपनी अपनी पत्थर की चौकियों में बैठी हुई थीं। मंदिर गिराया गया प्रतिमा टुकड़े २ हो गईं। खाली यह दो आज लों बनी रहीं और बहुत टूटी हुई हैं और तौभी उन का देखना यात्री के मन पर बड़ा प्रभाव करता है। जैसा यह चुपचाप अपने २ सिंहासनों पर बैठी हुई हैं वैसाही उन दिनों में लोग बैठते थे जब मूसा और इस्राएली लोग मिस्र में थे और ऐसा देख पड़ता है कि जगत के अन्त लों वैसी बैठी रहेंगी। वे ६0 फुट ऊंची हैं। उन मूर्त्तों में से एक गानेवाली मेमनोन कहलाती थी क्योंकि कहते थे कि यह सूर्य्य के उदय होने पर शब्द देती थी। परन्तु इस में कुछ धोखा हुआ होगा क्योंकि वह बादशाहों के आने पर भी शब्द निकालती थी। इस में याजक लोगों का कुछ कपट हुआ होगा। जब हेड्रियन रूम का बादशाह वहां गया तो तीन बार शब्द सुना।

थीब्स के मैदान में अगणित गड़हे खोदे हुए थे जो सुखाई हुई लोथों से भरे थे। यह लोथें उन में गड़बड़ी से डाली गई थीं और अरब लोगों का यह दस्तूर था कि उन्हें निकालके बेंचा करते थे क्योंकि कभी २ इन लोथों के संग गहने वा बहुमूल्य बस्तु देखने में आती हैं।

लकसार एक स्थान है जो नदी की पूरब ओर है। जब यात्री उस तीर पर उतरता है तो बड़ी भीड़ बहुधा लग जाती जिस में कोई उस की अगुवाई किया चाहता है कोई लड़का उसे अपने गधे पर सवार कराया चाहता है कोई नचवैये उस के आगे नाचने चाहते हैं और और सब सम्मत हो बकशीश २ पुकारा करते हैं। लकसार में एक प्राचीन मंदिर है जिस के फाटक और उस के साम्हने के पत्थर का खंभा देखने योग्य हैं परन्तु यह आजकल के गृहों से और झोपड़ियों से घेरा हुआ है।

कर्नाक का मंदिर वहां से दो मील दूर पर है और उस में और लकसार में बड़ी ६३ फुट चौड़ी सड़क मैदान में बनी थी और इस सड़क के दोनों तीर पर एक दूसरे से १२ फुट दूर पर स्फींक्स की मूर्त्तें रक्खी हुई थीं। उन में जो लकसार की ओर थीं १५00 फुट दूर तक ऐसी थीं जिन के स्त्री के सिर थे परन्तु वहां से कर्नाक लों भेड़ का सिर रखती थीं क्योंकि वह मंदिर आमोन देवता का मंदिर था। फिर मंदिर से नदी तक भी पत्थर की मूर्त्तें सड़क के दोनों ओर धरी थीं। जब यात्री कर्नाक के समीप आता तो पहिले उस के दो बड़े भारी फाटकों को देखता है। प्राचीन काल में नगर के अनेक ऐसे फाटक थे और इस लिये होमर
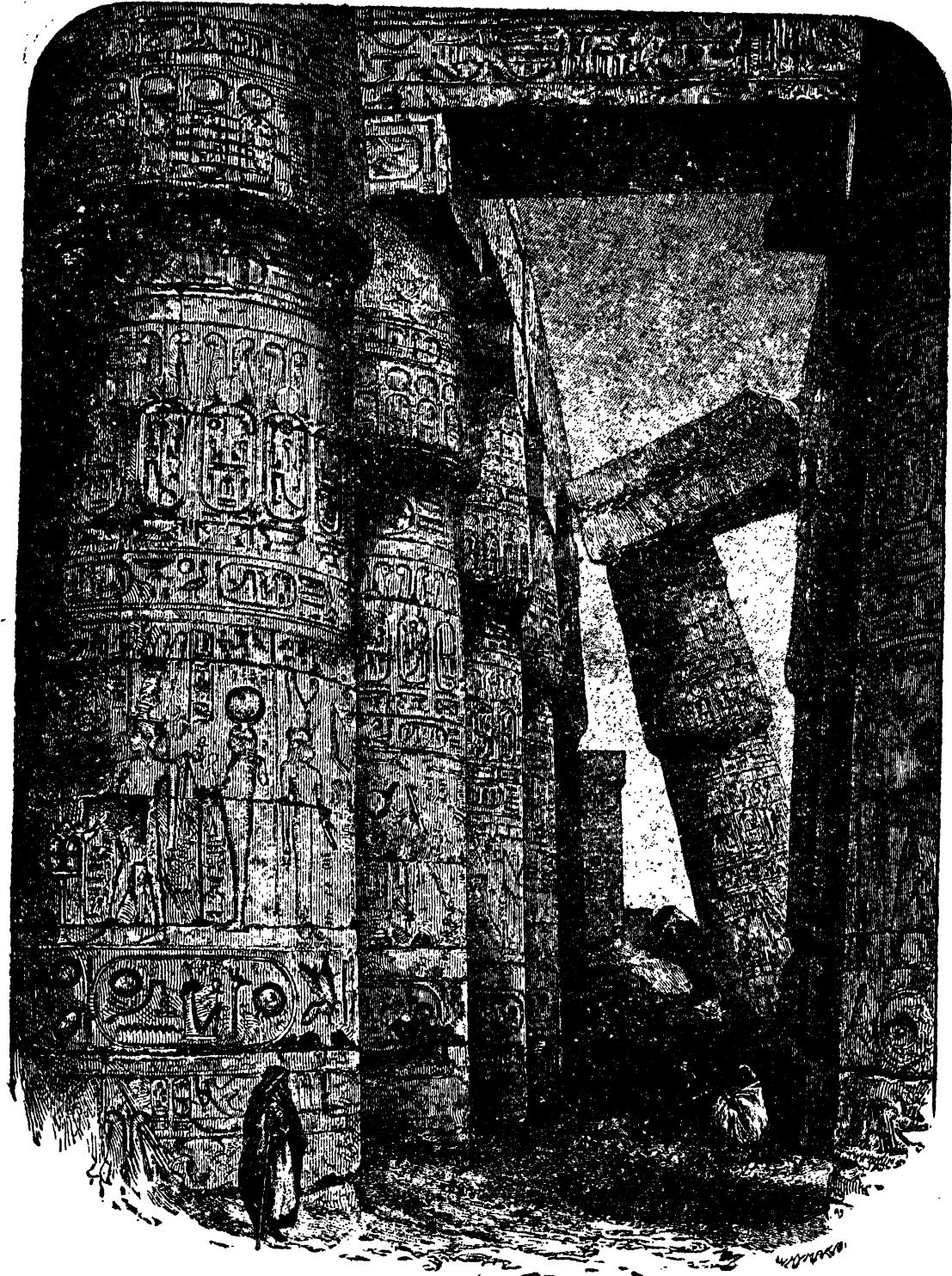
कर्नाक का एक मंदिर।

अपनी पुस्तक में सौ फाटकवाले थीब्स का नाम लेता है। बड़े मंदिर की बीचवाली कोठरी बहुत देखने योग्य है क्योंकि उस की छत एक सौ चालीस खंभों से सम्भाली हुई है। बीचवाले मंदिरों का घेरा ३४ फुट और उन की ऊंचाई ६२ फुट है और ऊपर से नीचे तक अगणित चित्र खींचे हुए और पत्थरों में काढ़े हुए हैं। इन कोठरियों के आगे दो बुर्ज बने हैं और फिर उन के आगे पत्थर के दो खंभे खड़े हैं।
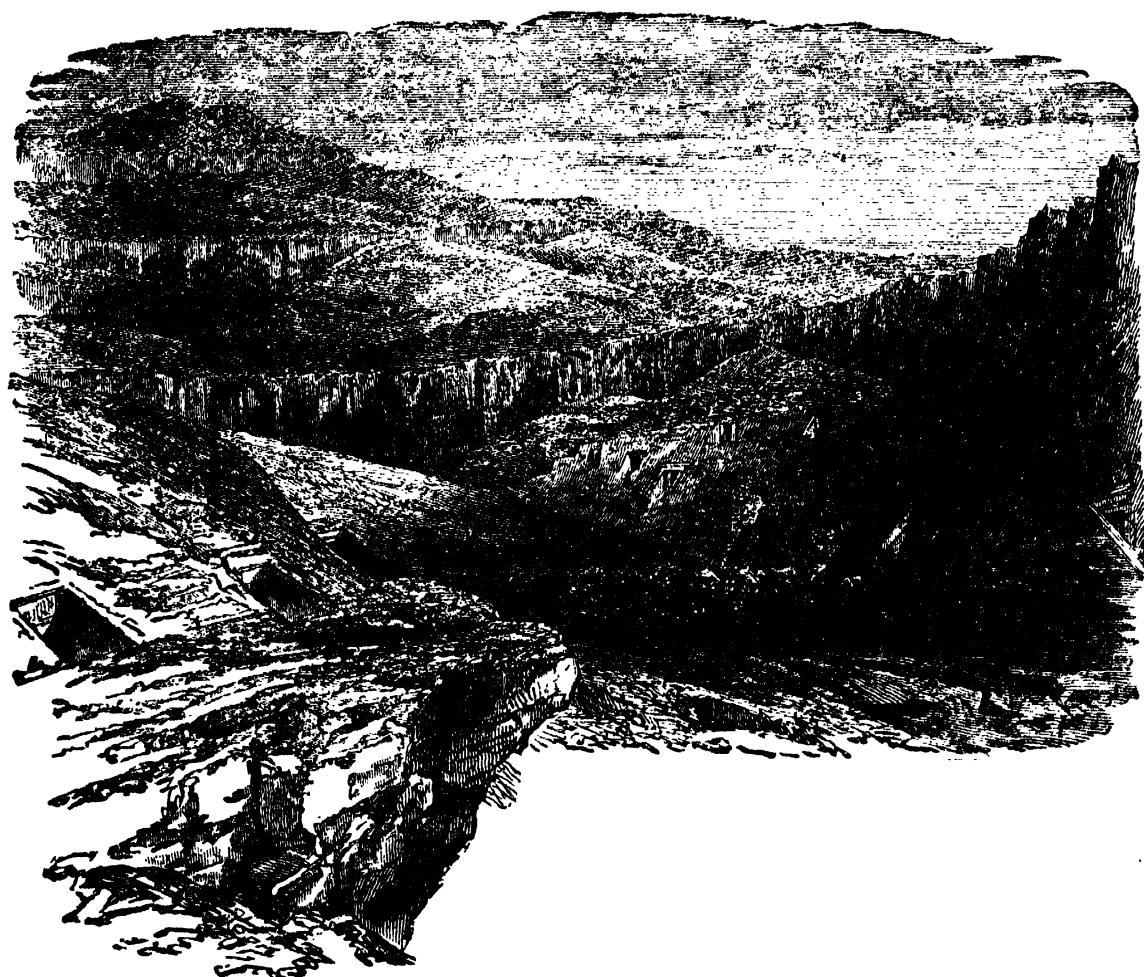
कर्नाक का मैदान।

कर्नाक के मंदिरों में एक है जो शीशक बादशाह के नाम से प्रसिद्ध है। वह इन फिराऊन बादशाहों के नामों में पिछला हुआ होगा जो हजार बरस लों उस नगर के विभव को बढ़ाते रहे। नगर के फाटक के समीप उस ने एक मंदिर

बनवाया और मिस्रियों के रीत्यनुसार उस ने उस की भीतों पर अपने बड़े कार्य्यों के चित्र खिंचवाये। इन चित्रों में हम देखते हैं कि एक बड़ा भारी मनुष्य और मनुष्यों को कैद करके लिये जाता है। यह परदेश के वेही राजा लोग थे जिन्हें शीशक अपने बश में लाया था। उन में एक बादशाह है जिस का रूप यहूदी सा है जैसा ऊपर के चित्र में प्रगट है और ज्ञानी लोग कहते हैं कि शीशक यहूदिया पर चढ़ाई करके उस का स्वामी बना वरन धर्म्मपुस्तक में भी लिखा है कि उन दिनों में जब रहबियाम यहूदिया का राजा था तब शीशक मिसर का बादशाह ६०,००० घुड़चढ़े और १२०० युद्ध की गाड़ियां साथ लेकर यिरूशलीम में आया और उसे लूट लिया।

बादशाहों के कबरों की वादी।

कर्नाक का मैदान आजकल बहुत ही सूनसान देख पड़ता है और चारों ओर टूटे हुए गृहों और मंदिरों के ढेर पड़े हुए हैं। लिबियान की पहाड़ियों में जो साम्हने हैं एक बड़ी घाटी कटी हुई है और उन्हों ने इस को लेकर बड़ा कबरस्थान बनवाया। पांच मील तक मृतकों के चिन्हों को छोड़ उस में कुछ दिखाई नहीं देता है। नीचे की जमीन में प्राचीनकाल के अधम लोग गाड़े जाते थे घाटी की बगलों में उत्तम लोग दफनाये जाते थे और पहाड़ियों की चोटियों पर महाराजों और महारानियों की जगह थी। यह स्थान देखने में भयंकर है। वहां कोई घास वा पेड़ नहीं उगता और चारों ओर चटानों में बड़े २ छेद कटे हुए हैं जो

दूर लों पहुंचते हैं। एक कोठरी चटान में कटी हुई ८६२ फुट लंबी है। इन पहाड़ियों की गुफों में पुराने थीब्सवासी मानो एक २ अपने घर में बड़े बिभव के साथ दफनाया गया और इन कबरों की भीतों पर अनेक चित्र ऐसे खींचे हुए हैं जिन से मानो उन दिनों का पूरा जीवन वृत्तान्त देखने में आता है। और हम यह देख सकते कि उस समय के लोग कैसे घर बनाते भोजन पकवाते आटा पीसते शिकार खेलते और बिस्राम करते थे। किसी चित्र में वे शत्रुओं से लड़ाई करते किसी में पाहुनों को घर में लाते किसी में नाचनेहारियां उस के आगे नाचतीं और सब के पीछे हम उसे चिता के ऊपर पड़े देखते और घरवाले उस के ऊपर बिलाप कर रहे हैं।
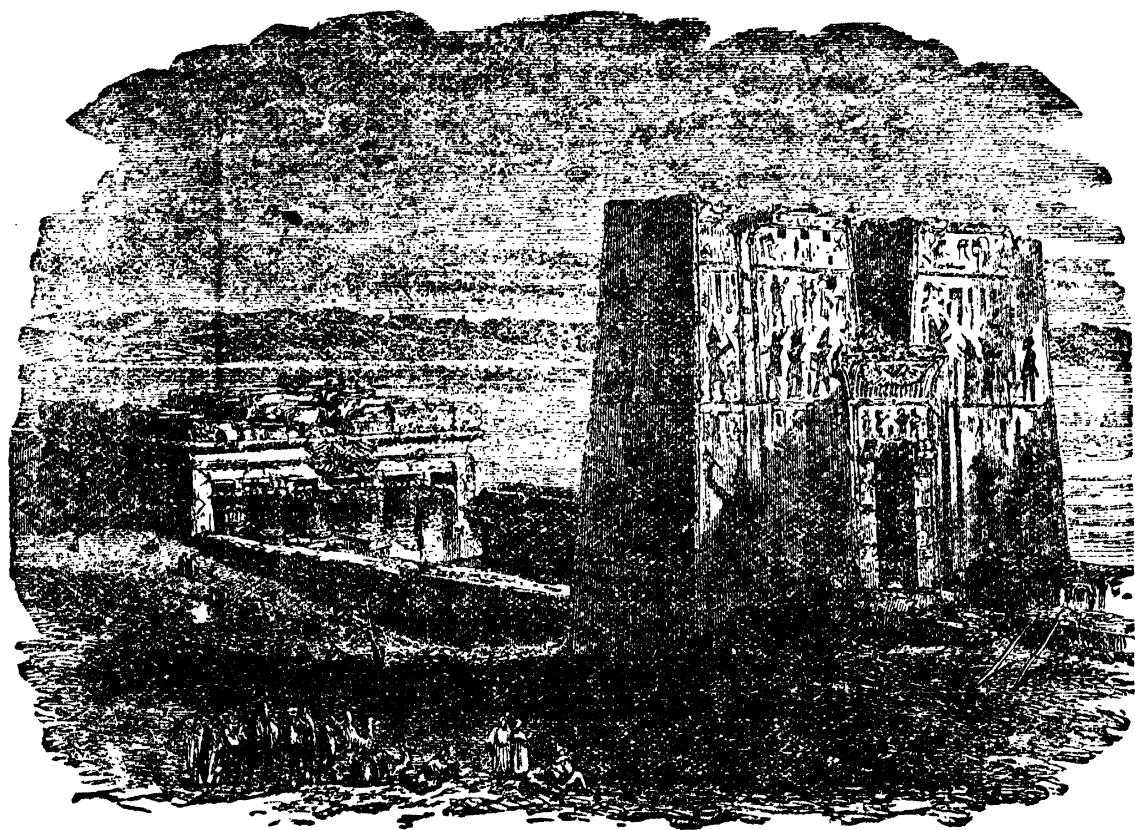
एदफू का मंदिर।

थीब्स से ४० मील और दक्खिन की ओर चलके हम उस मंदिर पास पहुंचते जो एदफू नाम से मिस्र के समस्त प्राचीन मंदिरों में अच्छी रीति से बना हुआ

है। उस के बचने का कारण यह हुआ होगा कि मंदिर बालू के नीचे बिलकुल छिप गया था बरन बालू के ढेर के ऊपर अरब लोगों का गांव बन गया था। सन ई० १८६४ तक केवल दो ऊंचे फाटक देखने में आते थे तब गांव और बालू दूर किये गये और वहां यहां लों खोदा गया कि अब समस्त मंदिर देखने में आता है। यह उन दिनों का बना है जब तालमी नाम कई बादशाह एक दूसरे के पीछे मिस्र में राज्य करते थे उस के बहुत से चित्रों में देवी देवते नाना प्रकार के आखेट करते हुए दिखाई देते हैं। एक कोठरी की सारी भीतों में एक प्रकार के चित्र हैं कि जिन में दरियाई घोड़े का शिकार दिखाई देता है। एदफू नाम एक नया गांव समीप है परन्तु वह बहुत ही मैला स्थान है और उस के निवासी भिखमंगे प्रसिद्ध हैं।

वहां से थोड़ा आगे बढ़के वह स्थान मिलता है जहां दोनों ओर की पहाड़ियां नील नदी के समीप २ पहुंचती हैं और कोई दूसरा स्थान नहीं मिलता जहां पहाड़ियां इतनी समीप आतीं और ज्ञानी लोग समझते हैं कि यह वह स्थान होगा जहां से पत्थर मिले जिन से नीचे के नगरों के बड़े २ मंदिर बनाये गये हैं। दोनों ओर के चटानों में ऐसी जगह देखने में आतीं कि जिन से अगणित पत्थर खोदे गये बरन जब हम इन स्थानों के पास जाते हैं तब खोदनेवालों के चिन्ह जो ३००० बरस हुए चटानों पर बनाये गये अब लों देखने में आते हैं और यह भी जाना जाता है कि चटानों के अलग करने के लिये यह दस्तूर था कि लकड़ी के पच्चड़ छेदों में ठोंकते थे और तब इन पर पानी डालते थे और पच्चड़ ऐसे बल से फूलते जाते थे कि भारी २ चटान अलग किये जाते थे। इन चटानों के बीच में नदी के लिये मार्ग बहुत तंग है सो पानी ऐसे जोर से बहता कि उस में चलना कठिन है और वह निरा श्वेत बन जाता है।

थोड़ी दूर आगे बढ़के अस्सुवान नाम नगर आता जिस को लोग मिस्र की सीमा कहते हैं। उधर का देश नूबिया नाम से प्रसिद्ध है। वहां के लोग भी जो देखने में आते सो और प्रकार के होते हैं। मिस्री लोग मोटे २ हैं परन्तु नूबियावाले अधिक लंबे पतले होते हैं। फिर नदी की दशा और प्रकार की हो जाती है यहां लों कि जो टापू देखने में आते सो मिट्टी के बने हुए हैं और कभी एक स्थान से हटके दूसरे स्थान में बनते हैं परन्तु यहां टापू बड़े चटान हैं कि पानी से बहुत ऊंचे हैं और उन के ऊपर पुराने गृह और गांव कहीं २ दिखाई देते हैं।

असुवान।

अस्सुवान नील नदी के पहिले झरने के समीप है और चारों ओर के बनबासियों के साथ वहां बड़ा लेनदेन किया जाता है। वहां से वह सामग्री जो नौकाओं के द्वारा पहुंचाई जाती सो ऊंटों पर लादी जाती और ऊंटों के बड़े २ काफिले दूर के स्थानों तक उसे पहुंचा देते हैं। फिर बहुत सी नौकायें जो दक्खिन से आती हैं और झरने के मारे आगे नहीं चल सकती हैं अपने माल को अस्सुवान में छोड़ देती हैं जिस्तें वह दूसरे किसी द्वारा से सिकन्दरिया वा खैरू में भेजा जाये। सुदान नूबिया आदि की बस्तें अस्सुवान के बाजारों में बिकती हैं। हाथीदांत शुतरमुर्ग के पर गोंद विष लगे हुए बाण ढाल जो गैंडे के चमड़े से बनी हैं नाना प्रकार के बनपशु और पक्षी वहां बिकते हैं।

गैंडा।
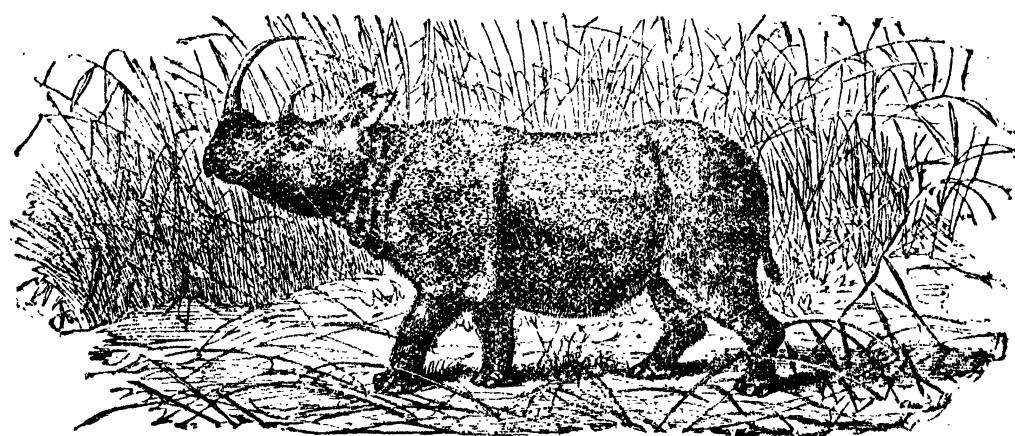
अस्सुवान के साम्हने नील नदी में इलूाफानिटीन नाम एक टापू है जिस पर

कितने प्राचीन मंदिर थे परन्तु थोड़े दिन हुए जब वहां के अध्यक्ष ने अपने लिये भवन बनाने चाहा तब उस ने इन को तोड़ डाला। अस्सुवान का नाम प्राचीनकाल में साईन था और वह इस बात में विख्यात था कि यहां से अर्थात समीप के पत्थर की खानों से अच्छे २ खंभे स्फिंक्ष मूर्त्ति आदि वस्तु खोदी जाती थीं कि जिन से मिस्र के प्राचीन नगर विभूषित होते थे। एक बड़ा पत्थर खान में अब लों पड़ा है कदाचित इस लिये कि वह इतना भारी है कि उस का दूर तक पहुंचाना कठिन था। उस की लंबाई १00 और उस की चौड़ाई ११ फुट है।

यदि कोई नदी के झरने में ऊपर चढ़ता है तो ऐसे मल्लाहों को लेना चाहिये जो भली भांति इस स्थान को जानते हैं क्योंकि चटानों के बीच में पानी बहुत जोर से चलता और इधर उधर घूम जाता और बड़ा शोर मचाता है और यदि मल्लाह चतुर न हों तो नाव के टूट जाने वा डूब जाने का डर है। किसी स्थान में नौका खेवने से चली जाती है और किसी में गुन से खींची जाती है और सब मल्लाह जोर से चिल्लाते हैं और उन का सरदार नौका के ऊपर खड़ा हो बावले की नाईं अपने हाथ पांव को हिलाता है। नूबिया देश के पुरुष और लड़के लकड़ियों पर सवार हो झरना के पानी में नीचे की ओर चले जाते हैं और दूर तक योंहीं जाते हैं।

झरना की थोड़ी दूर पर ऊपर चढ़के फैले नाम एक टापू देखने में आता है जिस का इष्ट देव ओसैरिस था। प्राचीन मंदिर जो इस स्थान में बने थे सो फारसियों से उलट दिये गये और जो अब वहां रहे सो तालमी बादशाहों से बनाये गये। बड़ा मंदिर ऐसिस देवी के नाम पर है और उस के आगे पत्थर का घाट बना है जो नदी के पास जाता है। उस के बड़े फाटक के आगे बड़ी चौड़ी सड़क बनी है और दोनों ओर के खंभों पर ऐसिस का सिर रक्खा हुआ है। मंदिर के आगे के खंभे देखने में अच्छे हैं और उन पर नाना प्रकार की पत्तियां विशेषकर कमल की खुदी हुई हैं। यह मंदिर बहुत बड़ा नहीं है पर देखने में बहुत विभूषित है। उस के आगे होरस देवते का छोटा मंदिर देखने में आता है। ऐसिस के मंदिर के बीच में जब हम पहुंचते हैं तो एक कोठरी के चित्रों में ओसैरिस का वृत्तान्त प्रगट किया जाता है। एक चित्र में उस के हाथ पांव जो टुकड़े किये गये थे बटोरे जाते हैं। दूसरे में स्त्रियां उस की चिता पर बिलाप कर रही हैं और आत्मा की प्रतिमा ऊपर झूम रही है। दूसरे चित्र में शरीर में जीवन फिर आने के चिन्ह दिखाई देते हैं। तीसरे में पंखवाले दूत अपने पंखों

से लोथ की रक्षा करते हैं। चौथे में ओसैरिस पर बस्त्र पहिराया जाता है उस पर मुकुट रक्खा जाता है वह सिंहासन पर बैठाया जाता है और उस के हाथों पर जो छाती के ऊपर रक्खे जाते हैं राज्य के चिन्ह रक्खे जाते हैं मानो वह संसार का स्वामी बन बैठा है।
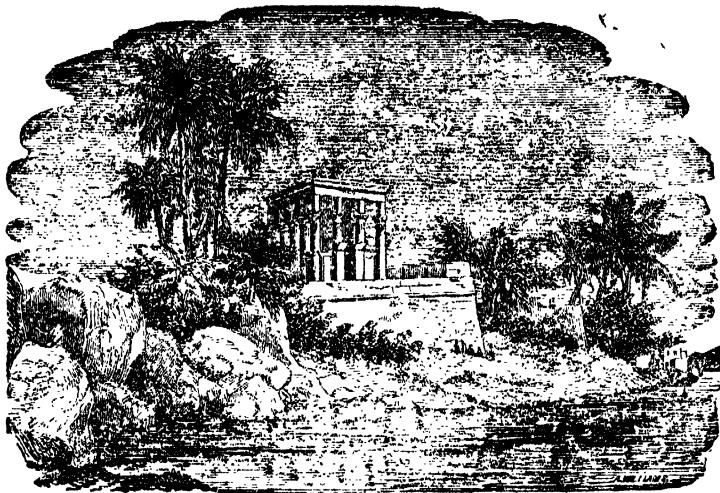
फैले टापू ।

जिस समय कि पुराना मिस्री धर्म्म उलटा किया गया तब फैले टापू मसीहियों से बहुत बसाया गया और उन में से जो संसारत्यागी थे सो मिस्री लोगों की प्राचीन मूर्त्तों से बहुत अप्रसन्न हुए उन्हों ने इस टापू से उस धर्म्म के बहुत चिन्हों को मिटा डाला और उन की सन्ती में अपने धर्म्म के चिन्हों को लगा दिया।

ईथियोपिया देश का उत्तरवाला भाग आजकल नूबिया नाम से प्रसिद्ध है और वह भी दो भागों में बांटा गया है जो ऊपरवाला और नीचेवाला नूबिया कहलाता है नीचेवाला नूबिया अस्सुवान से लेके दांगोला लों पहुंचता है और ऊपरवाला नूबिया उस के आगे है। नूबिया देश कितनी बातों में मिस्र के समान है परन्तु कितनी बातों की भिन्नता भी है। नूबिया में फलदायक जमीन की चौड़ाई कम है क्योंकि दोनों ओर के पहाड़ नील के समीप आ जाते हैं सो निवासियों के लिये कम जगह है और थोड़े निवासी पाये जाते। गांव छोटे हैं और घर मिट्टी के बने हुए और घास के छप्पर से छाये हुए हैं और बहुधा उन में एक ही कोठरी पाई जाती परन्तु कभी २ किसी जमीन्दार की अच्छी कोठी बनी है और बाहर की भीतों में छोटे २ घड़े पांति की पांति लगे हुए हैं जिन में कबूतर अपना

ओसैरिस का मन्दिर।
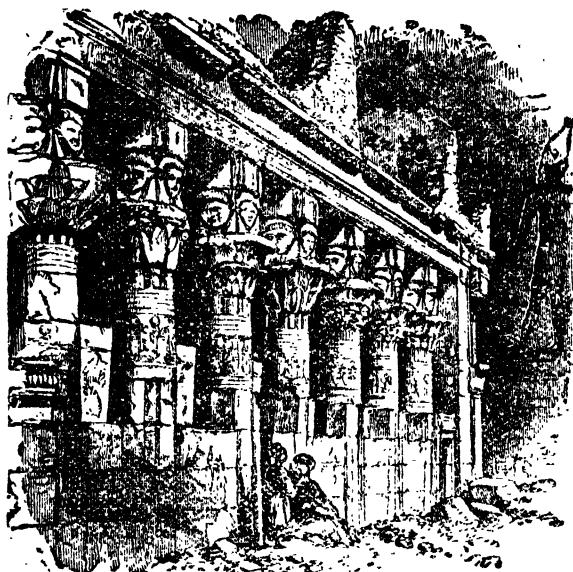
घोंसला बनावें। थोड़े लोग जो यहां रहते हैं कठिनता से जीविका पा सकते हैं और यहां के बहुत पुरुष सिकन्दरिया में भिस्ती मजूर आदि बनके जाते हैं।

नूबिया के मंदिर बहुत हैं परन्तु केवल दो एक वर्णन के योग्य हैं। अस्सुवान से १५० मील आगे नील के मार्ग से चलकर एक बड़ी भारी चटान नदी तीर देखने में आती है कि जिस में पत्थर की बड़ी भारी प्रतिमायें अद्भुत रीति से काढ़ी हुई हैं। मंदिरों की जो ऊपर बर्णन हुआ और ही दशा है कि वे पत्थरों के बने हुए हैं परन्तु यहां के मंदिर पहाड़ की चटान से कटे हुए हैं जैसा कि दक्खिन हिन्दुस्तान में वार २ देखने में आता है। यह स्थान इपसांबूल नाम से प्रसिद्ध है परन्तु अरब लोग उसे अबूसिम्बोल नाम देते हैं। यहां के दो मंदिरों में से छोटा जो है चटान के भीतर ९० फुट लों कटा हुआ है। साम्हना उस का ९० फुट लंबा और ३९ फुट ऊंचा है। उस में ६ बड़ी भारी ३२ फुट ऊंची प्रतिमायें खड़ी हैं जिन में से ४ रामसीस की और दो उस की महारानी की हैं। भीतर की भीतों पर महारानी का चित्र फिर दिखाई देता है जहां वह और देवियों के बीच में खड़ी है। यह मंदिर अथोर देवता के नाम से कहलाता है परन्तु विशेषकर रामसीस की महिमा दिखाने के लिये बनाया गया होगा।

बड़ा मंदिर का बरामदा १२० फुट लंबा और ९३ फुट ऊंचा है। उस के ऊपर २२ मूर्त्ति आठ २ फुट ऊंची चटान में कटी हुई हैं और सभों का कुत्ता सा स्वरूप

है कुत्ते का सा सिर है और कुत्ते के से पांव साम्हने बढ़ाये हुए हैं। द्वार के ऊपर रा देवता चटान में कटा हुआ है और उस के इधर उधर रामसीस बादशाह की दो बड़ी प्रतिमा हैं जो रा को हाथ जोड़ पूजती हैं परन्तु द्वार के साम्हने बांये ओर को रामसीस की दो २ ऐसी प्रतिमायें हैं जो मिस्र देश की और सब प्रतिमाओं से बढ़कर हैं क्योंकि जैसा दस्तूर है कि बादशाह की बैठी हुई प्रतिमायें मंदिर के द्वारों के पास रक्खी हुई हैं वैसाही रामसीस यहां बैठा हुआ है और एक २ प्रतिमा ६६ फुट ऊंची है और बड़ी अच्छी रीति से कटी हुई है एक का सिर तो टूट गया है परन्तु और तीनों अच्छी रीति से बची हुई हैं।
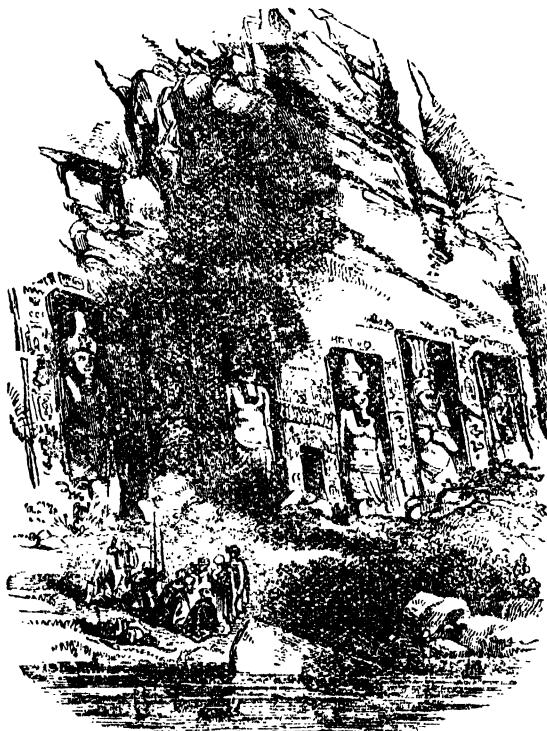
अबूसिम्बोल का मंदिर।

बड़ा मंदिर १८० फुट चटान के भीतर कटा हुआ है उस में तीन बड़ी कोठरियां हैं जिस में बड़ी कोठरी ५९ फुट लंबी ५५ फुट चौड़ी है दूसरी और तीसरी इस्से कुछ छोटी हैं और सब के भीतर पूजने का स्थान बेदी के साथ बना है। चारों ओर की भीतों पर बहुत से चित्र खींचे हुए और अनेक प्रतिमायें चटानों में खोदी हुई हैं। बड़ी कोठरी में ओसैरिस की ८ बड़ी भारी मूर्त्तें बीस २ फुट

ऊंची अपनी पीठ को एक खंभे के साथ लगाये हुए खड़ी हैं । मुंह पर बड़ी गम्भीरता के लक्षण दिखाई देते हैं और दोनों हाथों में जो छाती पर रक्खे हुए हैं ईश्वरीय सामर्थ्य और न्याय के लक्षण अर्थात गड़रिये की टेढ़ी लाठी और कोड़ा हैं। चित्र जो इधर उधर दिखाई देते हैं सो बहुधा रामसीस के युद्धों से संबन्ध रखते हैं । किसी में बहुत से बेचारे कैदी पांति की पांति उस के आगे घात के स्थान लों चले जाते हैं किसी में वह निर्दयता से उन्हें घात कर रहा है । एक चित्र में वह मनुष्यों के बाल को एक हाथ से पकड़े है और तलवार उठाये हुए उन के सिरों को उड़ाने चाहता है । यह बेचारे कितने देशों के लोग हैं जिन्हें रामसीस ने अपने वश में कर लिया और साम्हने अमून देवता खड़ा है और उस के हाथ में दूसरी तलवार देकर अपनी प्रसन्नता प्रगट करता है । दूसरे चित्र में अपने युद्ध की गाड़ी में सवार हो वह अगणित स्कूटी योद्धाओं पर दौड़ता है और उन सब को भगाने चाहता है । तीसरे में वह अकेला स्कूटी महाराजा से लड़कर उस के सिर को उड़ा रहा है और इन सब प्रतिमाओं में ऐसे बिश्राम
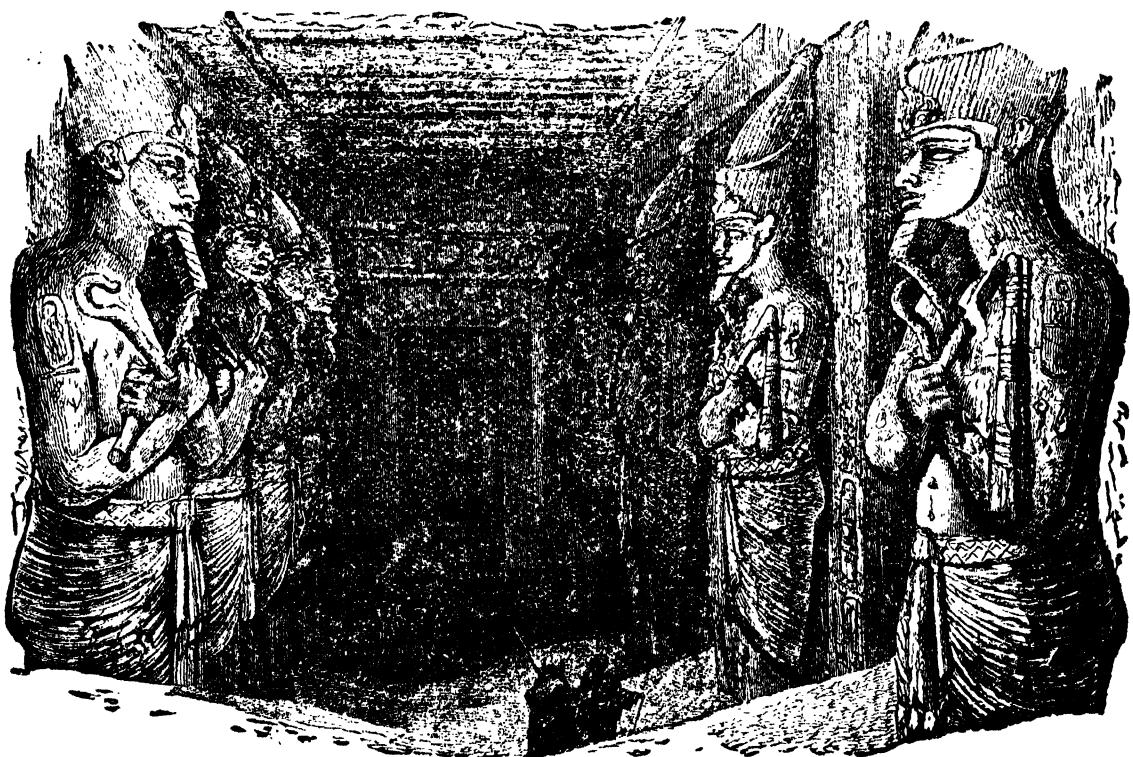
अबूसिम्बोल की प्रतिमायें ।

के चिन्ह प्रगट होते हैं जो कभी किसी रीति से बदला नहीं जाता है। इस मंदिर का द्वार इतना छोटा है कि दिन का बहुत थोड़ा प्रकाश उस में पहुंचता है। उस के देखने के लिये बत्ती जलाना अवश्य है। भीतर की कोठरी सूर्य्य और चन्द्रमा की पूजा के लिये बनी थी और उन की मूर्त्तें बेदी के ऊपर दिखाई देती हैं।

पहिले झरने से १८० मील नील नदी में चलकर दूसरा झरना मिलता है और उस के समीप वादी हलफा नाम नगर पाया जाता है। जब मिस्री लोगों ने सुदान देश को दर्वेशों के हाथ में छोड़ दिया था तब वादी हलफा सीमा का नगर ठहराया गया। उस के समीप एक नीचान अर्थात वादी है जिस में हलफा नाम घास उत्पन्न होती कि जिस से कागज बनता है इस से स्थान का नाम कहलाता है। झरने में चटान पानी में निकली हुई हैं परन्तु नौका चतुराई से उस में होके जा सकती है। दूसरे झरने के उस पार अर्थात नूबिया की दक्खिन ओर को दांगोला नाम एक स्थान है जहां प्राचीनकाल में एक अलग राज्य था। उस का मुख्य नगर जो पुराना दांगोला कहलाता था सो सन ई० १८२० में ममलूकों से उलटा किया गया और आज लों सूनसान पड़ा है। नया दांगोला जो अब भी मुख्य नगर है तीसरे झरने के उधर है अर्थात खैरू से ७५० मील दक्खिन ओर को है। सन ई० १८९६ में सरदार किचनर ने जो अंगरेजी और मिस्री सेना का अध्यक्ष है सो दर्वेश सेना को जीतकर दांगोला को मिस्र में फिर मिलाया।

मिस्री सुदान देश का वृत्तान्त।

सुदान का अर्थ है हबशस्थान अर्थात काले लोगों का देश। सत्य पूछो तो काले आदमी अटलांटिक समुद्र से लेके लाल समुद्र लों अर्थात समस्त आफ्रिका के वारपार बस्ते हैं परन्तु उस का पूर्बी भाग कि जिस में नील नदी और और नदी भी बहती हैं सो बहुधा मिस्री सुदान नाम से प्रसिद्ध है। खारतूम नाम एक नगर वहां पर बना है जहां कि काली नील और श्वेत नील नदियां मिल जाती हैं। सन १८१९ ई० में महम्मद अली मिस्र के बादशाह ने उस को अपने बश में कर लिया और आसपास के देशों में अपने अधिकार को फैलाने लगा। सन ई० १८६९ में इसमाईल बादशाह ने चाहा कि उस दुर्दशा को मिटावे जो उन देशों में प्रचलित थी जो यह थी कि गांव २ पर प्रबल होके उस के निवासियों

को लोग दास बन्ने के लिये बेचा करते थे से उस ने बेकर साहिब को सेना सहित सुदान में भेज दिया जो इस कुरीति को मिटावे और आसपास के देशों में अच्छे ब्योपार का बन्दोबस्त करे। उस ने चाहा कि उस बड़े देश को भी जहां आफ्रिका के बीच में बड़ी भारी झीलें हैं मिस्र में मिलावे। चार बरस लों बेकर साहिब इस काम में लगा रहा बरन इस ओर को मिस्र की सीमा बढ़ाई गई और दासों का बेंचना कम किया गया।

सन १८७४ में बेकर साहिब विलायत चला गया और गार्डन साहिब उस की सन्ती में आया जो इस बात में बहुत विख्यात हो गया था कि जब चीन देश में बहुत लोग अपने राजा के बिरुद्ध उठकर बलवा करने लगे तब गार्डन साहिब ने चीनी सेना लेकर उन लोगों को जीत लिया और बादशाह के राज्य को फिर स्थापन कर दिया। इस को मिस्री सेना का अधिकार दिया गया जो सुदान को फिर मिस्र के बश में ले आवे। उस की भी यह बड़ी अभिलाषा थी कि दासों का बेचना बन्द हो जाये। उस ने नील नदी पर बहुत से गढ़ और कोट बनवाये और अग्निबोट को टुकड़ा २ करके नील के झरनों के ऊपर लाया और वहां उन्हें जोड़ २ कर उस ने ब्योपार को बहुत ही बढ़ा दिया यहां लों कि आलबर्ट नाम बड़ी झील में अग्निबोट चलने लगीं परन्तु उस ने सोचा कि मिस्र का बादशाह दासों पर दया नहीं करता है जैसा कि चाहिये सो सन ई० १८७६ में उस ने उस अधिकार को त्याग दिया। एक साल पीछे वह फिर अध्यक्ष वहां बनाया गया और उस का अधिकार भी बहुत बढ़ाया गया सो तीन साल लों साहिब की फुरती और चतुराई और न्याय से उन लोगों को बहुत ही लाभ पहुंचा मानो दिन रात ऊंट पर सवार हो फिरा करता था वहां के बनबासी पहिली वार दबाये गये वे उस के बश में आने लगे और देश की अच्छी दशा होती जाती थी परन्तु सन ई० १८८० में गार्डन साहिब ने फिर उस काम को त्याग दिया।

गार्डन साहिब के चले जाने के पीछे जो मिस्री अधिकारी उस की सन्ती में भेजे गये सो बड़े उपद्रव करनेहारे थे। वे प्रजा को यहां लों सताते थे कि वे मिस्र के नाम को स्राप देने लगे। महम्मदी लोग कहते हैं कि कोई दिन मेंहदी साहिब नाम कोई आवेगा और महम्मदियों पर बहुत कृपा दिखावेगा। जब सुदान की यही दुर्दशा थी तब महम्मद अहमद नाम एक अध्यक्ष वहां प्रगट हुआ जिस ने अपने को मेंहदी साहिब बनाया और लोगों को बचन दिया कि मिस्री राज्य को दूर करके तुम्हारे बीच में धर्म्मराज्य स्थापन करूंगा। मिस्रियों ने

वादी हलफा ।
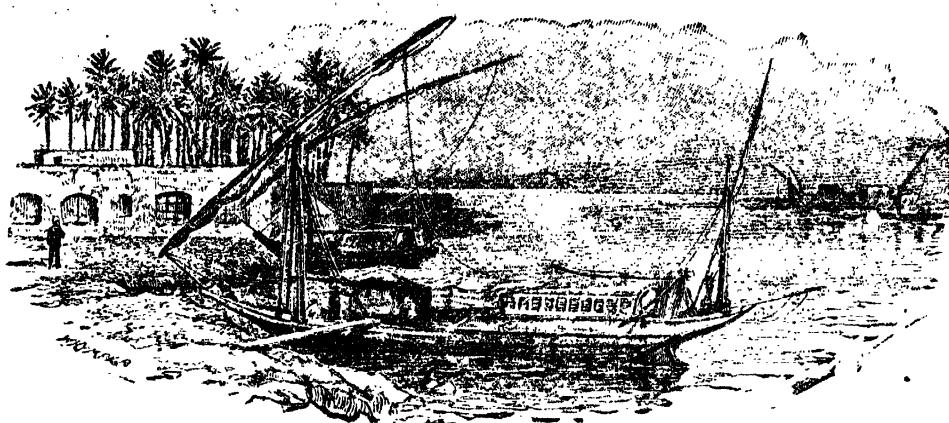
उस के बिरुद्ध बड़ी सेना भेजी जिस का सेनापति हिक्स साहिब था परन्तु दर्वेशों की सेना ने उस से युद्ध करके उस की समस्त सेना को सत्यानाश कर दिया और बेकर साहिब भी दो बार उन से लड़कर हार गया कारण क्या कि उन दिनों में मिस्री योद्धा लोग युद्ध करने न जानते थे और सुदानवालों का साम्हना न कर सकते थे । अंगरेजों ने इस दुर्दशा को देखके मिस्रियों से यों कहा कि समस्त मिस्रियों को सुदान देश से दूर करो और मेंहदी साहिब और उस के दर्वेशों के हाथ में छोड़ दो क्योंकि यह जंगली देश है और उस के लिये बहुत रुपये व्यय करना निर्लाभ है । वे इस से प्रसन्न हुए और गार्डन साहिब सन ई० १८८४ में वहां भेजे गये कि समस्त मिस्रियों को सुदान से निकाल देवें । जब गार्डन साहिब खार्तूम नगर में पहुंचा जहां पहिले राज्य किया था तब उस ने देखा कि सेना बिना ब्योपारी आदि लोग यहां से मिस्र लों पहुंचाये नहीं जा सकते हैं सो उस ने सेना मंगवाई परन्तु सेना के भेजने में बड़ी देरी हुई और इस बीच में दर्वेशों ने नगर को घेर लिया और जब सेना पहुंच गई तो देखते क्या हैं कि खारतूम दर्वेशों के हाथ में पड़ा है और गार्डन साहिब मारा गया है । उस ने बड़े साहस से ३३७ दिन लों नगर को बचा रक्खा । अन्त को दर्वेश लोग प्रबल हुए । जब सेना जान गई कि गार्डन साहिब मारा गया है तब उन्हों ने कहा कि हमारा यहां आना व्यर्थ है सो लौटके चले गये ।

गार्डन साहिब का एक सरदार ईमिन्न पाशा नाम सुदान के एक भाग में रह

गया । मेंहदी साहिब ने कई बार उस पर चढ़ाई किई परन्तु उस पर प्रबल न हो सका । अन्त को ईमिन्न की सेना ने बलवा किया और अपने सरदार को एक

जनरैल गार्डन ।

नगर में बन्द कर दिया परन्तु १८८९ में ष्टानली साहिब ने जो उन देशों में सैर करता था उसे छुड़ा लिया । पीछे ईमिन्न साहिब जर्मन लोगों के नाम से आफ्रिका के दूसरे भाग में अध्यक्ष बना परन्तु प्रजा से घात किया गया ।

इस बीच में मेंहदी साहिब मर गया और दूसरा जन अबदाला नाम सुदान का खलीफा बन गया और आमदर्मन नाम नगर जो खारतूम के समीप है उस का मुख्य नगर हुआ । अबदाला बड़े उपद्रव से राज्य करता था और सन ई० १८८७ में एक अंगरेजी और मिस्री मिली हुई सेना उस के विरुद्ध भेजी गई । उन्हों ने कई बार दर्वेशों पर विजय किया और अब ऐसी दशा देखने में आती

ईमिन्न पाशा ।

है कि दर्वेशों का राज्य दूर किया गया और मिस्रियों का अधिकार फिर खारतूम में स्थापन किया गया है ।

मिस्र देश की नई दशा ।

थोड़े दिन से अर्थात जब से अंगरेज लोगों ने आकर खदेव को अरबीपाशा और उस की सेना के हाथ से छुड़ा दिया तब से मिस्र देश की बिलकुल नई दशा हो गई है क्योंकि अधिकार भारी बातों में एक अंगरेज अर्थात लार्ड क्रोमर साहिब के हाथ में आ गया है और प्रजा का ऐसा सुभाग्य है जैसा पहिले कभी न हुआ । किसान लोगों की भलाई इस में है कि खेतों को बहुत पानी मिले सो साहिब ने कितने अनजीनियरों को हिन्दुस्तान से बुलाया जो नहर खुदवाने और बांध बंधवाने के काम को भली भांति जानते थे सो अब खेत बहुत अच्छी रीति से सींचे जाते हैं । पहिले जमीन्दार और महाशय लोग बहुत मजूरों को पकड़ लेते और इन से बेगार की मजूरी लेते थे अब यह अन्याय

की बात बन्द किई गई है । अगले दिनों में देश के अध्यक्षों को थोड़ी माहवारी दिई जाती थी सो वे अधम लोगों को बहुत लूटते और घूस लिया करते थे परन्तु आजकल स्काट साहिब जो बम्बई हाईकोर्ट का जज्ज था सब न्याय करनेहारों को सुधारता है और नाना प्रकार से देश की उन्नति होती जाती है ।

लार्ड क्रोमर ।

ऊपर के वृत्तान्त से प्रगट होता है कि जैसी आजकल हिन्दुस्तान की दशा है वैसी ही पूर्वकाल में मिस्र की दशा थी और जैसा मिस्र बहुत बातों में बदल गया है वैसा ही हिन्दुस्तान भी बदलता चला जाता है । जैसा प्राचीन मिस्र-लोग नील नदी को पूजते थे वैसा ही आजकल हिन्दू लोग गङ्गा नर्बदा आदि नदियों को पूजते हैं परन्तु जैसा नील की पूजा उठ गई है वैसा ही हिन्द की भी नदियों की पूजा उठ जायेगी । प्राचीन मिस्री अनेक देवी देवताओं को भजते थे और सांड़ मगरमच्छ कुत्ते बिल्ली का बड़ा आदर सन्मान करते थे परन्तु अब मिस्री बासी इस मूर्खता से छुटकारा पा गये हैं और वैसा ही हिन्दबासी भी गाय बन्दर की पूजा से भूल भवानी के भजने से छूट जायेंगे । जैसा रा ओसैरिस ऐसिस आदि

के मंदिर सूनसान पड़े हैं और उन में कोई चढ़ावा चढ़ाया नहीं जाता है इसी रीति से शिव विष्णु काली आदि के मंदिर भी हिन्दुस्तान में सूनसान हो जायेंगे और जैसा नबियों ने कहा कि वह दिन आवेगा कि जिस में वही देवते जो आकाश और पृथिवी को बना न सकते थे सो आकाश के नीचे से और पृथिवी के ऊपर से मिटाये जायेंगे और समस्त मूर्त्ति छछून्दरों और चमगीदड़ों के आगे फेंकी जायेंगी और लोग उस अकेले ईश्वर को जो स्वर्ग और पृथिवी का सृजनहार और पालनहार है भजेंगे और उस से कहेंगे कि तू ही अकेला हमारा स्वर्गीय पिता है। उन दिनों में कोई यह न सोचेगा कि मैं अपने पापों को गङ्गाजल से धो सकता हूं परन्तु मन के सत्य पश्चात्ताप से ईश्वर की ओर फिरेंगे और उस मुक्तिदाता के द्वारा से जिस को ईश्वर ने स्थापन किया अपने पापों की क्षमा मांगेंगे। वह यह ईश्वर से मांगेंगे कि हम को धर्म्मात्मा की सहायता मिले जिस्तें पाप से लड़कर मन में शुद्ध बनूं और हर एक धर्म्मकार्य्य करने के लिये सिद्ध बन जाऊं। जब ऐसा धर्म्मराज्य स्थापन होगा तब लोग जाति की चिन्ता कम करेंगे परन्तु यह जान लेंगे कि ईश्वर ने सकल मनुष्यों को भाई बनाया है और चाहता है कि हर एक अपने भाई की भलाई करे। बहुत लोग कहते हैं कि यह कलियुग है कि जिस में सब कुछ बुरा होता चला जाता है परन्तु ऐसा दिन जो आता तो उस को सतयुग कहना चाहिये कि जिस में प्रतिदिन उन्नति होती जायगी।

इति।